आर.एन.आई. नं. 3653/57 डाक पंजीयन संख्या JaipurCity/413/2015-17
मुद्रण तिथि दिनांक 5 से 8 नवम्बर, 2015
वर्ष : 73 ★ अंक : 11 ★ मूल्य : 10 रु.
डाक प्रेषण तिथि 10 नवम्बर, 2015 ★कार्त्तिक, 2072

ISSN 2249-2011

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

आचार्य हीरा : आचार्यपद रजत साधनावर्ष

मंगल-मूल, धर्म की जननी, शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी, फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी'॥

संसार की समस्त सम्पदा और भोग
के साधन भी मनुष्य की इच्छा
पूरी नहीं कर सकते हैं।

- आचार्य हस्ती

आवश्यकता जीवन को चलाने
के लिए जरूरी है, पर इच्छा जीवन
को बिगाड़ने वाली है,
इच्छाओं पर नियंत्रण आवश्यक है।

- आचार्य हीरा

जिनका जीवन बोलता है,
उनको बोलने की उतनी जरूरत भी नहीं है।

- उपाध्याय मान

With Best Compliments :
Rajeev Nita Daga Foundation Houston

जिनवाणी हिन्दी-मासिक

卐 संरक्षक
अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.), फोन-2636763

卐 संस्थापक
श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

卐 प्रकाशक
विनयचन्द डागा, मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार,
जयपुर-302003(राज.)
फोन-0141-2575997, फैक्स-0141-2570753

卐 प्रधान सम्पादक
प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन
सामायिक-स्वाध्याय भवन, प्लॉट नं. 2,
नेहरू पार्क, जोधपुर-342003 (राज.)
फोन : 0291-2626279
E-mail : jinvani@yahoo.co.in
E-mail : editorjinvani@gmail.com

卐 सह-सम्पादक
नौरतन मेहता, जोधपुर
डॉ. श्वेता जैन, जोधपुर

卐 भारत सरकार द्वारा प्रदत्त
रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
डाक पंजीयन सं.-JaipurCity/413/2015-17
ISSN 2249-2011

इहजीवियं अणियमेत्ता,
पब्भट्ठा समाहिजोगएहिं।
ते कामभोगरसगिद्धा,
उववज्जंति आसुरे काए।।

-उत्तराध्ययन सूत्र, 8.14

अनियन्त्रित जीवन रख इस भव में,
समाधियोग से जो गिरते।
वे कामभोग रस मूर्च्छित हो,
आसुरीकाय को हैं धरते।।

नवम्बर, 2015
वीर निर्वाण संवत्, 2541
कार्तिक, 2072

वर्ष 73 अंक 11

सदस्यता शुल्क

त्रिवार्षिक : 250 रु.
20 वर्षीय, देश में : 1000 रु.
20 वर्षीय, विदेश में : 12500 रु.
स्तम्भ सदस्यता : 21000/-
संरक्षक सदस्यता : 11000/-
साहित्य आजीवन सदस्यता- 4000/-

एक प्रति का मूल्य : 10 रु.

शुल्क/साभार नकद राशि 'जिनवाणी' बैंक खाता संख्या SBBJ 51026632986
IFSC No. SBBJ 0010843 में जमा कराकर जमापर्ची (काउन्टर-प्रति) अथवा ड्राफ्ट भेजने का पता
'जिनवाणी', दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.)
फोन नं.0141-2575997, 2571163, फैक्स : 0141-2570753, E-mail:sgpmandal@yahoo.in

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन- 0141-2562929

नोट- यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो।

विषयानुक्रम

सम्पादकीय-	पुनर्जन्म	-डॉ. धर्मचन्द जैन	5
अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	-सम्पादक	9
विचार-वारिधि-	धर्मस्थान में न हो प्रदर्शन	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.	11
प्रेरक-संदेश-	आचार्यप्रवर श्री हीरा का संदेश	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा.	12
प्रवचन-	आचार्यपद एवं यशस्वी आचार्यश्री हीरा	-मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनिजी म.सा.	16
	जो फिक्र को निगल जाता है, वह	-तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनिजी म.सा.	22
	संघ के नाम में हैं अध्यक्ष की विशेषताएँ	-श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा.	25
आ.पद रजतवर्ष-	गुणसम्पन्न संघनायक आचार्य श्री हीरा	-महासती श्री पद्मप्रभाजी म.सा.	27
	ये हीरा गुरु हमारा	-श्री उम्मेदमल जैन	60
	ज्ञान-अर्जन में समय गर लगाएँ	-श्री अक्षय जैन	61
	रजत वर्ष है, छाया हर्ष है	-व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभाजी म.सा.	70
शोधालेख-	लेश्या सिद्धान्तः एक विवेचन	-डॉ. जवाहरलाल नाहटा	32
अंग्रेजी-स्तम्भ-	Vegetarianism : A Personal Quest	*-Sh. Shyam K. Saksena*	40
प्रासंगिक-	स्थानकवासी परम्परा के मूलनायक : लोकाशाह	-डॉ. दिलीप धींग	43
	'MAHAVIR' शब्द से लें प्रेरणा	-आचार्यश्री देवेन्द्रमुनिजी म.सा.	47
चिन्तन-	प्रत्येक धर्मानुष्ठान स्वात्मा में गुप्त होने की साधना है	-श्री उदयमुनिजी म.सा.	49
	संथारा : अहिंसा-पालन की उत्कृष्ट साधना	-श्री कैलाशमल दुग्गड़	64
प्रेरक-प्रसंग-	कीमती पत्थर	-श्री गौतमकुमार सुराणा	51
	दीवार मिली है, द्वार भी मिलना चाहिए	-डॉ. वीरसागर जैन	118
तत्त्व-ज्ञान-	आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ (96)	-श्री धर्मचन्द जैन	52
नारी-स्तम्भ -	माता - भाग्य निर्माता	-श्रीमती सुनीता मेहता	55
युवा-स्तम्भ -	ऑनलाइन शॉपिंग का औचित्य?	-श्री विनोदकुमार जैन	62
काव्य-	वीर प्रभु की अंतिम वाणी (16)	-मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा.	67
स्वास्थ्य-विज्ञान -	रंग-चिकित्सा	-डॉ. चंचलमल चोरडिया	73
बाल-स्तम्भ -	एक दिवाली ऐसी भी थी!	-श्री जसराज देवड़ा धोका	80
विचार-	धर्म एक चारपाई	-आचार्यश्री देवेन्द्रमुनिजी म.सा.	10
	पहले तोल पीछे बोल	-श्री जौहरीमल छाजेड़	24
	ज्ञान का दीप जलायें	-श्री सुमेरसिंह मुणोत	66
	चिन्तन की मनोभूमि	-श्री सम्पतराज चौधरी	124
कविता/गीत-	सुमेल	-डॉ. रमेश 'मयंक'	15
	संसार एवं मोक्ष	-आचार्यश्री रत्नसेनसूरीश्वरजी म.	31
	जीवन-बोध क्षणिकाएँ	-श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा.	39
	लो वन्दन शत वार!	-श्री अमित जैन	48
	कहती है यह जिनवाणी	-श्री मगनचन्द जैन	59
	रे मन! अब आराम करने दे	-श्री आर.प्रसन्नचन्द चोरडिया	71
साहित्य-समीक्षा-	नूतन साहित्य	-डॉ. श्वेता जैन	83
स्वाध्याय संघ-	पर्युषण रिपोर्ट-2015	-संकलित	85
समाचार विविधा-	समाचार-संकलन	-संकलित	93
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार	-संकलित	119

सम्पादकीय

पुनर्जन्म

❖ डॉ. धर्मचन्द जैन

इन्द्रिय-प्रत्यक्ष से हम यह नहीं जानते कि एक जीव की प्राण-विच्छेद रूप मृत्यु होने के पश्चात् उसका पुनर्जन्म भी होता है। किन्तु अनुमान प्रमाण से एवं आगम प्रमाण से हम यह जान सकते हैं कि मरण के पश्चात् भी जीव का पुनर्जन्म होता है। अनुमान से ऐसा ज्ञान होने में अग्रांकित तथ्य सहायक हैं-

1. एक ही माता-पिता की संतान के स्वभाव एवं व्यवहार में अन्तर दिखाई पड़ता है। समान गुणसूत्र एवं बाह्य समान वातावरण होते हुए भी उनके स्वभाव में अत्यधिक भिन्नता दृष्टिगोचर होती है। इसका कारण खोजने जाएँ तो अन्य कारण प्राप्त न होने पर पूर्व जन्म को ही कारण माना जाता है। यदि माता-पिता के गुणसूत्रों में समय-अन्तराल से भिन्नता मानी जाए तो जुडवां बच्चों में स्वभावभेद नहीं होना चाहिए, किन्तु वहाँ भी गुणसूत्रों की समानता एवं बाह्य परिस्थितियों के समान होने पर भी भिन्नता पाई जाती है। इसका कारण पूर्व जन्म के संस्कारों का प्रभाव ही माना जा सकता है।
2. कई बालकों में उम्र के सामान्य विकास से अधिक मेधा एवं ज्ञान दृग्गोचर होते हैं, जिसका बाह्य कारण दिखाई न देने पर पूर्वजन्म के संस्कारों को ही कारण माना जा सकता है।
3. मनुष्यों के चेहरों एवं उनके व्यवहार आदि में कभी पशुओं की छवि दिखाई देती है, तो कभी देवों जैसा व्यवहार होता है, जो उनके स्वभाव में जन्म से रहता है, जिसका बाह्य कारण दृग्गोचर न होने पर पूर्व जन्म को ही कारण माना जा सकता है।
4. कर्म-सिद्धान्त का यह नियम है कि जो अच्छा या बुरा जिस प्रकार का कर्म करता है, उसे तदनुरूप फल की प्राप्ति होती है। यदि वह अपने कृतकर्मों का इस जीवन में पूरा फल भोग न कर पाए तो शेष कर्मों का फलभोग वह पुनर्जन्म ग्रहण कर अन्य जीवन में ही कर सकता है। इसलिए जब तक सम्पूर्ण कर्मों का क्षय न हो जाए तब तक अर्थापत्ति प्रमाण या अनुमान प्रमाण से जीव के पुनर्जन्म की सिद्धि होती है।

किसी जीव को पूर्व जन्म की स्मृति भी हो जाती है, जिसे जैन शब्दावली में जाति स्मरण ज्ञान कहा गया है। आगम में ऐसे अनेक उदाहरण उपलब्ध हैं, जिनमें जाति स्मरण ज्ञान का कथन हुआ है। इस युग में भी अनेक बार समाचार पत्रों में ऐसे उदाहरण पढ़ने को मिलते हैं, जिनमें कई बालक पूर्व जन्म की स्मृति सही रूप में व्यक्त करते हुए बताए गए हैं।

वे अपनी पूर्व पत्नी, बच्चों, घर, नगर आदि को पहचानते हैं, कभी उनका नाम भी बता देते हैं। छोटे बालकों के द्वारा अपनी पूर्व जन्म की पत्नी, बच्चों एवं घर को पहचानना पूर्व जन्म को सिद्ध करता है।

आचारांग सूत्र (प्रथम अध्ययन, प्रथम उद्देशक) में पूर्व-जन्म की स्मृति के तीन कारणों का उल्लेख किया गया है- 1. स्वयं को पूर्व जन्म की स्मृति होना, 2. तीर्थंकर आदि के द्वारा पूर्वजन्म का स्मरण करवाना, 3. अन्य ज्ञानी पुरुषों के द्वारा पूर्व जन्म का कथन करना। ज्ञाताधर्मकथांगसूत्र में प्रभु महावीर ने मेघमुनि को साधना में सजग करने के लिए उनके पूर्वजन्म हाथी के भव का स्मरण कराया है। हरिभद्रसूरिकृत समराइच्चकहा में अग्निशर्मा के पूर्व भवों का वर्णन हुआ है। आगम में गति-आगति से सम्बन्धित थोकड़ों में यह वर्णन आता है कि कौनसा जीव मरकर कौनसी गति में उत्पन्न हो सकता है। यह वर्णन पूर्वजन्म एवं पुनर्जन्म को भलीभांति सिद्ध करता है।

इन्द्रिय प्रत्यक्ष से भले ही पूर्वजन्म का ज्ञान न हो, किन्तु अवधिज्ञान एवं केवलज्ञान से पूर्वजन्म का प्रत्यक्ष होना आगम में स्वीकृत है। इसीलिए केवलज्ञानी दूसरों के पूर्वजन्मों का कथन सहज ही कर देते हैं।

भारतीय दार्शनिक परम्परा पर दृष्टिपात किया जाए तो ज्ञात होता है कि मात्र इन्द्रिय प्रत्यक्ष को प्रमाण मानने वाला चार्वाक दर्शन पूर्वजन्म एवं पुनर्जन्म को स्वीकार नहीं करता। अनुमान एवं आप्तवचन को प्रमाण मानने वाले शेष सभी दर्शन पुनर्जन्म के सिद्धान्त को स्वीकार करते हैं। मीमांसा दर्शन में वर्तमान कर्म के आधार पर 'अपूर्व' की उत्पत्ति स्वीकार की गई है, जिसके माध्यम से कर्मफल की प्राप्ति अन्य जन्म में भी अंगीकृत है। न्यायदर्शन में 'प्रेत्य भाव' को एक प्रमेय माना गया है, जिसका तात्पर्य मृत्यु को प्राप्त कर परलोक की प्राप्ति है। योगदर्शन में निम्नांकित दो सूत्र पूर्वजन्म अथवा पुनर्जन्म की सिद्धि करते हैं-

क्लेशमूलः कर्माशयो दृष्टादृष्टजन्मवेदनीयः।

सति मूले तद्विपाकोजात्यायुर्भोगाः -योगसूत्र, 2.12-13

अर्थात् दृष्ट (वर्तमान जीवन) एवं अदृष्ट (भावी जीवन) में वेदन किए जाने वाले धर्म तथा अधर्म रूपी कर्म वासनाओं के मूल कारण क्लेश ही हैं। मूल कारण क्लेश के विद्यमान रहने पर उस कर्मवासना का फल देव, मनुष्यादि जाति, आयु एवं सुख-दुःख के भोग के रूप में प्राप्त होता है। इस तरह योगसूत्र में अदृष्ट जन्म अर्थात् अन्य जन्म की अवधारणा स्वीकार की गई है एवं संचित कर्म-वासना का फल जाति (जन्म), आयु एवं सुख-दुःख के भोग के रूप में स्वीकार किया गया है। सांख्यदर्शन एवं वेदान्त दर्शन में सूक्ष्म शरीर अथवा लिंग शरीर की अवधारणा है, जो शरीर पुनर्जन्म में सहायक होता है। बौद्ध दर्शन यद्यपि

क्षणिकवादी है तथापि उसमें कर्मफल प्राप्ति के लिए पुनर्जन्म की अवधारणा मान्य है।

जैन दर्शन में पुनर्जन्म एवं पूर्वजन्म की अवधारणा सुदृढ़ रूप से स्वीकार की गई है। जो जीव जिस प्रकार का आयुष्य कर्म बांधता है वह उस प्रकार की गति या योनि में जन्म ग्रहण करता है। नरक, तिर्यंच, मनुष्य एवं देव ये चार प्रकार के आयुष्य हैं। इनमें से किसी एक आयुष्य का बंध कर जीव उस प्रकार के भव में जन्म ग्रहण करता है। जीवन का दो तिहाई भाग व्यतीत होने पर नये आयुष्य का बंध होता है। यदि उस अवधि में भी नये आयुष्य का बंध न हो तो जितना जीवन शेष रहा है, उसके दो तिहाई भाग में आयुष्य का बंध होता है। तत्त्वार्थ सूत्र आदि में यह वर्णन प्राप्त होता है कि जब जीव एक शरीर को छोड़कर अन्य शरीर धारण करता है तो वह सीधी गति करके जाता है, जिसे अनुश्रेणि गति कहा गया है। यदि वह जन्म ग्रहण करने के स्थान पर सीधा नहीं पहुँच पाता है तो अधिक से अधिक तीन विग्रह या मोड़ लेकर अधिकतम चार समय में जन्म ग्रहण कर लेता है। जैन दर्शन यह नहीं मानता कि आत्मा कहीं जन्म न ग्रहण करने पर इधर-उधर भटकती रहती है। जब जीव भवान्तर में जन्म ग्रहण करने के लिए जाता है तब उसके साथ तैजस एवं कार्मण ये दो शरीर आवश्यक रूप से रहते हैं। ये दोनों शरीर अत्यन्त सूक्ष्म होते हैं। ये जीव के साथ तब तक रहते हैं जब तक कि वह पूर्णत: कर्म रहित नहीं हो जाता। दो प्रकार के शरीर स्थूल कहे गए है- औदारिक एवं वैक्रिय। इनमें तिर्यंच एवं मनुष्य का शरीर उदार अर्थात् स्थूल पुद्गलों से निर्मित होने के कारण औदारिक शरीर कहा गया है तथा देवों एवं नारकों में विभिन्न रूप धारण करने में समर्थ वैक्रिय शरीर अंगीकार किया गया है। जब कोई जीव मरण को प्राप्त होता है तो वह औदारिक और वैक्रिय शरीर को छोड़कर ही अन्यत्र गमन करता है। आगमों में यह प्रतिपादित है कि देव गति का जीव च्यवन करके देव गति एवं नरक गति में उत्पन्न नहीं होता। वह तिर्यंच या मनुष्य योनि को प्राप्त करता है। उसी प्रकार नारक जीव भी पुन: नारक एवं देव न बनकर तिर्यंच या मनुष्य गति में जन्म ग्रहण करता है। किन्तु मनुष्य एवं तिर्यंच गति के जीव चारों गतियों में जन्म ग्रहण कर सकते हैं।

जन्म तीन प्रकार के होते हैं- सम्मूर्च्छन, गर्भ एवं उपपात। एकेन्द्रिय से लेकर चतुरिन्द्रिय जीवों का जन्म सम्मूर्च्छन जन्म होता है। कुछ पंचेन्द्रिय तिर्यंच एवं मनुष्य जीव भी बिना गर्भ के उत्पन्न होने के कारण सम्मूर्च्छन जन्म वाले होते है। जो पशु-पक्षी मनुष्य आदि गर्भ से उत्पन्न होते है उनका जन्म गर्भज कहलाता है। देवों और नारकों का जन्म उपपात जन्म होता है, क्योंकि वे गर्भ से उत्पन्न नहीं होते। जब तक जीव मुक्त नहीं हो जाता, तब तक वह चार गतियों में परिभ्रमण करता हुआ पुनर्जन्म को प्राप्त होता रहता है।

अपने कृत कर्मो के अनुसार जीव पुनर्जन्म को प्राप्त करता है। आचारांग सूत्र का

प्रारम्भ ही इस दार्शनिक समस्या से होता है कि मैं कहाँ से आया हूँ, किस दिशा से आया हूँ, पूर्व से आया हूँ या दक्षिण से, पश्चिम से आया हूँ या उत्तर से? ऊर्ध्व दिशा से आया हूँ या अधोदिशा से? अन्य दिशा से आया हूँ या अनुदिशा से? इस प्रकार आचारांग सूत्र में पुनर्जन्म की अवधारणा स्वीकार की गई है।

यहाँ एक प्रश्न खड़ा हो सकता है कि जिस प्रकार हमें बीते कल की आज स्मृति रहती है, निद्राधीन होने के पश्चात् जागने पर बीते अतीत की स्मृति रहती है, उस प्रकार हमें पूर्वजन्म की स्मृति क्यों नहीं रहती है? इसके समाधान में कहा जा सकता है कि पूर्वजन्म की स्मृति न रहना प्राकृतिक दृष्टि से प्रायः हमारे हित में है, अन्यथा पूर्वजन्म के दुःखों की स्मृति इस जीवन को और अधिक दुःखी करने में निमित्त बन सकती थी। वह स्मृति यदि इस जीवन को सत्पथ पर लाने में उपयोगी हो, तब तो उसका होना सार्थक है, अन्यथा उसकी विस्मृति ही अधिक समीचीन है। मृत्यु के क्षण में कार्मण शरीर में बद्ध कर्म तो शेष रहते हैं, किन्तु मारणान्तिक अवस्था में पूर्वजन्म की स्मृति चली जाती है।

पर्यायार्थिक नय की दृष्टि से चिन्तन किया जाए तो हमारा प्रतिक्षण पुनर्जन्म हो रहा है। हम प्रतिक्षण बदल रहे हैं। इस प्रतिक्षण पुनर्जन्म में हम अपने भावों, अध्यवसायों एवं कार्यों से अपना उत्थान या पतन करते हैं। प्रतिक्षण प्राप्त होने वाला यह नया जीवन हमारी अब तक की भावनाओं एवं क्रियाओं के माध्यम से संचित कर्मोदय का ही परिणाम है। प्रतिदिन हम निद्राधीन होते हैं तब निद्राकाल में हमें यह भी बोध नहीं होता है कि 'हम हैं', एक प्रकार से वह भी मृत्यु का लघुरूप है। दूसरे दिन हम जागकर उठ ही जायेंगे, इसकी कोई निश्चितता नहीं होती है। हाँ, यह अवश्य है कि जागकर उठने के पश्चात् हमें विगत दिन एवं पूर्व जीवन की स्मृति रहती है। मृत्यु होने पर प्रायः वह स्मृति नहीं रह पाती है। निद्रा एवं मृत्यु में ऐसा भेद अवश्य है, किन्तु निद्रा के पश्चात् भी एक प्रकार से हमारा नया जीवन ही होता है।

पुनर्जन्म को स्वीकार करने पर हमारी यह अभिलाषा होनी चाहिए कि मेरा नया जीवन वर्तमान से बेहतर हो। यह अभिलाषा भी हमारी हो सकती है, किन्तु नया जीवन कैसा होगा, यह हमारे वर्तमान जीवन के आधार पर निर्धारित होता है। इसलिए नये जीवन को अच्छा बनाने के लिए वर्तमान को सुधारना आवश्यक है। वर्तमान जीवन सुधर जाए तो आशा की जानी चाहिए कि पुनर्जन्म भी ठीक होगा। यदि कोई पुनर्जन्म को स्वीकार न करे, तो भी उसकी यह अभिलाषा तो होनी चाहिए कि वर्तमान जीवन श्रेष्ठ बने। वर्तमान जीवन को श्रेष्ठ बनाने में सद्विचार एवं सद् आचार सहायक हैं। अतः विकारों में निरन्तर लाने के साथ आचरण में भी परिष्कार का लक्ष्य रखें, तो यह जीवन उन्नत हो सकता है। इस जीवन के उन्नत होने पर ही हम नये जीवन की श्रेष्ठता का विश्वास कर सकते हैं। संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि भावी जीवन श्रेष्ठ बनाने के लिए वर्तमान जीवन को श्रेष्ठ बनाने की ओर प्रयत्नशील होना चाहिए। ❖

अमृत-चिन्तन

आगम-वाणी

रागो य दोसो वि य कम्मबीयं, कम्मं च मोहप्पभवं वयंति।
कम्मं च जाइ-मरणस्स मूलं, दुक्खं च जाइ-मरणं वयंति।।

उत्तराध्ययनसूत्र, 32.7

अर्थ- कर्म का बीज राग है और द्वेष भी है। कर्म मोह से उत्पन्न होता है। कर्म जन्म-मरण का मूल है तथा जन्म-मरण को दुःख कहा गया है।

विवेचन- कर्म के दो प्रमुख बीज हैं- राग और द्वेष। अनुकूल व्यक्ति, वस्तु एवं परिस्थिति के प्रति राग होता है तथा प्रतिकूल व्यक्ति, वस्तु एवं परिस्थिति के प्रति द्वेष होता है। हम राग एवं द्वेष के कारण कर्म के आस्रव एवं बन्ध को प्राप्त होते हैं। जो कोई भी क्रिया हमारे द्वारा की जाती है, उससे कर्म तभी बंधता है जब वह क्रिया राग या द्वेष से युक्त हो। इसलिए राग एवं द्वेष को कर्म का बीज कहा गया है। राग-द्वेष के अभाव में कर्मबंध नहीं होता। कर्म को मोह से उत्पन्न कहा गया है। इसका आशय है कि राग-द्वेष से कथंचित् मोह की भूमिका भिन्न है। साधारणतः राग-द्वेष का समावेश भी मोहकर्म में हो जाता है, जिसके अनुसार माया एवं लोभ का समावेश राग में तथा क्रोध एवं मान का समावेश द्वेष में होता है, किन्तु 'मोह' शब्द का प्रयोग राग-द्वेष से कुछ अधिक व्यापक अर्थ में होता है। मोह कर्म दो प्रकार का है- दर्शन मोह एवं चारित्र मोह। मिथ्यात्व आदि दर्शन मोह है। चारित्रमोह में क्रोध, मान, माया एवं लोभ के अतिरिक्त हास्य, रति, अरति, भय, शोक, जुगुप्सा, स्त्रीवेद, पुरुषवेद एवं नपुंसक वेद का भी ग्रहण होता है। राग-द्वेष मात्र चारित्रमोह में अन्तर्भूत होते हैं, दर्शन मोह में नहीं। चारित्र मोह में भी वे क्रोधादि चार कषायों से सम्बन्धित माने गए हैं। यद्यपि राग-द्वेष का सम्बन्ध हास्यादि नौ कषायों से भी सम्भव है, क्योंकि रति, अरति आदि राग-द्वेष को ही सूचित करते हैं। इसलिए सम्पूर्ण मोह को कर्म की उत्पत्ति में कारण माना गया है, जिसमें मिथ्यात्व, अविरति, प्रमाद एवं कषाय का ग्रहण हो जाता है।

सामान्यतः राग-द्वेष को मोहजन्य स्वीकार करने से उनके पृथक् कथन की आवश्यकता नहीं होती है, किन्तु आगम में राग, द्वेष एवं मोह इन तीनों का पृथक् कथन कई बार हुआ है। उदाहरण के लिए उत्तराध्ययन सूत्र के इसी 32 वें अध्ययन की गाथा 9 में कहा गया है- "रागं च दोसं च तहेव मोहं, उद्धत्तुकामेण समूल जालं।" इस वाक्य में राग, द्वेष एवं मोह तीनों का कथन हुआ है।

कर्म को जन्म एवं मरण का मूल स्वीकार किया गया है, क्योंकि अष्टविध कर्मों के शेष रहते हुए जन्म-मरण की प्रक्रिया सतत गतिशील रहती है। ज्ञानावरणादि आठों कर्मों में मोहकर्म प्रमुख है। मोहकर्म जब तक शेष है तब तक वर्तमान भव में नये आयुष्य का बंध होता ही है एवं नये शरीर के साथ जन्म होता है। वर्तमान भव का आयुष्य पूर्ण होने पर यह शरीर छूटता ही है। अतः मरण एवं जन्म दोनों में 'कर्म' कारण है। कर्मों से संसार में भटकाव चलता ही रहता है। कर्म से ज्ञान आवरित रहता है, दर्शन आच्छादित रहता है, सुख-दुःख का वेदन चलता रहता है। दृष्टि मलिन रहती है, काम-क्रोधादि की सत्ता बनी रहती है, भव-भवान्तर में जन्म-मरण होता है, शरीर, गति, इन्द्रिय आदि की प्राप्ति होती है। आत्मगुण पूर्णतः प्रकट नहीं हो पाते हैं। किन्तु यहाँ जन्म-मरण की निरन्तरता को प्रधान बनाकर कहा गया है कि जन्म-मरण का मूल कर्म है।

जब तक जन्म-मरण होते हैं तब तक दुःख का नाश नहीं होता, इसलिए एक अपेक्षा से जन्म-मरण को दुःख कह दिया गया है। दुःख तो जन्म-मरण के अतिरिक्त भी कई रूपों में व्यक्त होता है, जैसे- अपनी मनचाही न होने पर दुःख होता है, अनचाही होने पर दुःख होता है। विस्तार से कहें तो शरीर में रोगादि की उत्पत्ति होने पर दुःख होता है, व्यापार में घाटा लगने पर दुःख होता है, अपनी अपेक्षाएँ एवं आशाएँ पूरी न होने पर दुःख होता है, अज्ञान के कारण दुःख होता है। मिथ्यात्व के कारण व्यक्ति दुःख के सागर से निकल नहीं पाता। इस प्रकार दुःख के अनेक कारण हैं, तथापि यहाँ जन्म-मरण को प्रधान बनाकर उन्हें दुःख कहा गया है, क्योंकि पूर्णतः दुःखमुक्त तभी हुआ जा सकता है जब जन्म-मरण की प्रक्रिया समाप्त हो जाए। यह कथन की एक अपेक्षा है, अन्यथा मोहकर्म का समापन ही दुःखमुक्ति का राजमार्ग है। एक बार मोहकर्म समाप्त हो गया तो जन्म-मरण की प्रक्रिया स्वतः समाप्त हो जाएगी।- **सम्पादक**

धर्म एक चारपाई

- आचार्य श्री देवेन्द्र मुनि जी म.सा.

धर्म तो चारपाई के समान है, इस पर कोई भी सोए उसे आराम मिलेगा।

जिस चारपाई के चारों पाये ठीक हैं, उस पर कोई भी मनुष्य सुख-पूर्वक सो सकता है।

जिस धर्म के क्षमा, विनम्रता, सरलता एवं निस्पृहता रूप चार पाये सही सलामत हैं, उस धर्म का आचरण करके कोई भी सुखी हो सकता है।

विचार-वारिधि

धर्मस्थान में न हो प्रदर्शन

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.

- एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति पर, एक सम्प्रदाय दूसरे सम्प्रदाय पर छींटा-कसी करते हैं, धब्बा या लांछन लगाने की कोशिश करते हैं, ऐसी स्थिति में उनका धर्म-स्थान पर बैठना लाभकारी नहीं होता।
- कुछ लोग मन से धर्माराधन नहीं करते, उसका प्रदर्शन करते हैं। जैसे- माला फेरते-फेरते, भजन करते-करते वहाँ चार आदमी बाहर से दूसरे आ गये तो धर्मस्थान में बैठा हुआ भक्त जो धीमे-धीमे भजन कर रहा था, इनको देखकर जोर से करने लगता है और वे चार आदमी चले गये तो फिर पहले जैसा हो जाता है- इधर-उधर देखने लगता है। यह सब क्यों होता है? धर्म के मर्म एवं श्रद्धा के अभाव में यह होता है।
- धर्म-स्थान में आने वाले भाई-बहिनों से कहना यह है कि सबसे पहले ध्यान यह रखा जाए कि अपरिग्रही सन्तों के पास जाते समय ज्यादा से ज्यादा अपरिग्रही का रूप धारण करके जाना चाहिए।
- आपके सन्त इतने अपरिग्रही और आप धर्मस्थान में आते समय सोचें कि बढ़िया सूट पहनकर चलें तो यह ठीक नहीं। बाई सोचती है कि सोने के गोखरू हाथों में पहल लें, सोने की लड़ गले में डाल लें, सोने की जंजीर कमर में बांध लें यहाँ तक कि माला के मनके भी चन्दन की लकड़ी के हों, चाँदी के दानों की माला बनवा लें, तो यह सोच ठीक नहीं।
- एक बाई से यह पूछा कि आप व्याख्यान में क्यों नहीं आती? वह कहने लगी- "बापजी! जीव तो घणो ही टूटे है कि व्याख्यान में आऊँ, पण कांई करूँ अकेली हूँ, पेरण ने जेवर नहीं है। दागीणा बिना पहने जाऊँ तो घर की इज्जत जावे।" आपने इस तरह का वातावरण समाज में बना रखा है। इस वातावरण के कारण व्याख्यान में आने से वंचित रहना पड़ता है। यह गलत रूप है। सोने के आभूषणों से आत्मा की कीमत नहीं, आत्मा की कीमत है सदाचार से, प्रामाणिकता से और सद्गुणों से।
- भगवान् महावीर ने अन्न-जल की तरह अल्प वस्त्र धारण करने को भी तप कहा है। मनुष्य यदि अधिक संग्रही बनेगा तो उससे दूसरों की आवश्यकता-पूर्ति में कमी आयेगी। फलस्वरूप आपस में वैर-विरोध तथा संघर्ष की स्थिति उत्पन्न होगी। संग्रही पुरुष को रक्षण की उपधि और ममता का बन्धन रहेगा, जिससे वह शान्तिपूर्ण गमना-गमन नहीं कर सकेगा। अतः व्रती को सादे जीवन का अभ्यास रखना चाहिये। धार्मिक स्थलों में खासकर बहुमूल्य वस्त्र और आभूषणों को दूर रखना चाहिये, क्योंकि धर्म-स्थान में धन वैभव का मूल्य नहीं, किन्तु साधना का महत्त्व है।

-'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' ग्रन्थ से साभार

प्रेरक-सन्देश

आचार्यप्रवर श्री हीरा का संदेश : पदाधिकारियों की दायित्व के प्रति सजगता

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के आचार्य पदारोहण का यह रजतवर्ष चल रहा है। हमारे निवेदन पर उन्होंने जीवन के उन्नयन के लिए पद एवं पदाधिकारियों के सम्बन्ध में हिण्डौन चातुर्मास में जो भाव अभिव्यक्त किए हैं, उन्हें यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है। -सम्पादक

आत्म-साधना के लिए बने चतुर्विध संघ में श्रावक-संघ का विशेष महत्त्व है। श्रावक-संघ का ही विस्तार श्राविका मण्डल, युवक परिषद् आदि शाखाओं में होता है। संघ-समाज-संस्था की सुव्यवस्था हेतु आवश्यक पद का निर्माण किया जाता है। सदन द्वारा जिस व्यक्ति को अधिकार या व्यवस्था करने का दायित्व दिया जाता है, उसका सम्मान करना, उसकी बात को मानकर स्वीकार करना, दिये हुए कार्य का सम्पादन करना, विपरीत व्यवहार नहीं करना, यह उस पद की गरिमा है। आगमों में भी संघ की महिमा का गौरवमयी गाथाओं में संगान हुआ है, जिसे अनेक प्रसंगों पर आप सभी ने श्रवण किया होगा। गौतममुनिजी द्वारा रचित 'यह पावन संघ हमारा' सबकी जबान पर बस गया है। समस्त पदाधिकारीगण इस संघ रूपी सुरथ के सारथी हैं। श्री कृष्ण जैसे कुशल सारथी के समान गरिमामयी सीमा में रहते हुए संग की गौरव गरिमा को अक्षुण्ण रखते हुए वर्धापन लाने का सुयश हर पदाधिकारी पायें। यह तभी संभव है, जब पद की गरिमा के अनुरूप संघ की दीप्ति को सुरक्षित, संवर्द्धित रखते हुए इसे पल्लवित करने का आप सभी का लक्ष्य हो।

आज संघ जिस ऊँचाई पर प्रतिष्ठित है वह किसी एक कार्यकाल के पदाधिकारियों के श्रम का प्रतिफल नहीं है, अपितु स्थापना समय से अब तक रहे समस्त पदाधिकारियों के सम्मिलित प्रयास के साथ उनकी अटूट श्रद्धा भक्ति, कर्त्तव्यनिष्ठा, समर्पण, समयदान की अंतरंग भावना का सुफल है। आचारवान, सेवावान, धर्मनिष्ठ, सुज्ञ-श्रावकों के हाथों में संघ की बागडोर रही है। शुद्धाचारियों के पीछे जनता दौड़ती है। इसी आचार पक्ष के बल से ही संघ, आज अग्रिम पंक्तियों में प्रतिस्थापित है। संघ की गौरव गरिमा को मण्डित करने वाले पूर्व के समस्त पदाधिकारियों के विशिष्ट योगदान-सहयोग व अथक परिश्रम को विस्मृत नहीं किया जा सकता। संघोत्थान के लिए हर पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता निर्मित विधान के नियमों-उपनियमों का सच्चाई से स्वयं पालन कर अनुसरण करे। जन-जन यानी

स्वधर्मी भाई को जोड़े। स्वयं का जीवन प्रामाणिक हो, कथनी करनी में एकरूपता हो। वह निव्यर्सनी हो, सद् आचरणवान हो, रात्रिभोजन का त्यागी हो, सामायिक-स्वाध्याय करने वाला हो, सामायिक संघ का सदस्य हो, शाकाहारी हो, सद्प्रवृत्तियों से युक्त हो, साधु-साध्वी की संयममयी वृत्ति में ज्ञान-दर्शन-चारित्र की अभिवृद्धि में सहायक हो। मर्यादा विरुद्ध वृत्तियों की ओर उन्मुख होने वालों का असहयोग करने वाला हो। यदि जागरूकता, विवेक व उपयोग से अपनी भागीदारी हर पदाधिकारी निभाने में समर्थ हो, तो संघ का भविष्य स्वर्णिम है। ''संख्या चाहे थोड़ी है, पर फिर भी चलता जादू'' ये पंक्तियाँ इस संघ की गौरव गरिमा को द्योतित कर रही है। जैसे सुगन्ध तो चाहे बूंद भर ही हो, फिर भी वह अपनी सौरभ से वातावरण को सुरभित बना सकने में सक्षम है।

संघ रूपी सुरथ के संरक्षक-मण्डल तथा शासन सेवा समिति जैसे दो सक्षम चक्र (पहिये) हैं, जिनके संरक्षण में प्रगति की अविरल धारायुक्त भविष्य सम्मुज्ज्वल हो, ऐसी मंगल भावना है। सक्षम पदाधिकारी अनुशासनप्रिय, निष्पक्ष, निडर व परिपक्वता लिए होते हैं। वे अपने दायित्वों, कर्त्तव्यों का निर्वहन हर परिस्थिति में चाहे अनुकूल हो या प्रतिकूल, होश और जोश रखते हुए दक्षतापूर्वक करते हैं। मनोनीत पदाधिकारी अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन सावधान रहकर करें। व्यक्तिगत यश, अपयश, कठिनाई की परवाह किये बिना कार्य के प्रति कृत संकल्प रहे। अपनी नेतृत्व क्षमता का साहस व सक्रियता के साथ परिचय दे। अच्छे कार्य करने वालों के कार्यकाल की स्मृतियाँ हृदय पटल पर रहती हैं। अपनी क्षमता से कम कार्य करने में रुचि दिखाना, अप्रत्यक्ष रूप से संघ को कमजोर बनाने वाली भूमिका है। यदि बीज हरा-भरा-पुष्ट है तो फलित होने वाला पौधा भी ऊर्जावान होगा। यदि पदाधिकारी चुस्त, दुरुस्त, सक्रिय एवं परिपक्व हो तो कार्यकताओं की टीम भी श्रेष्ठ परिणाम दे सकने में समर्थ होगी।

'गुणिषु प्रमोदम्' की भावना रखते हुए हर पदाधिकारी, हर कार्यकर्त्ता, देश व समाजोत्थान, संघोत्थान के लिये अहर्निश तत्पर व उद्यत रहे। महात्मा गाँधी की प्रार्थना में हर प्राणी के लिए बहुत ही सुन्दर कामना थी- 'सबको सन्मति दे भगवान्' यदि मति सद् है तो सारी व्यवस्थाएँ, सारे कार्यकलाप विधिपूर्वक समय पर सम्पन्न होने की संभावना है। इस सन्मति के अवलम्बन से कार्यकर्ता बन्धुओं को जो भी दायित्व मिले, वे कर्त्तव्य बोध से सकारात्मक परिणाम देने के लिये सदैव उद्यत रहें। पद लेना ही अधिकार न समझें, पद से जुड़े अपने दायित्वों, कर्त्तव्यों, अधिकारों की गरिमा का ध्यान रखते हुए पद को गौरवान्वित करें।

जिनकी रुचि नहीं है, उन पर पद थोपा न जाए। उन पदाधिकारियों की कार्य के प्रति निष्ठा भी नहीं रहेगी। साथ ही उत्साह का भी अभाव रहेगा। वे जो भी कार्य करेंगे, अनमने

होकर करेंगे। इससे संघ की गति-प्रगति बाधित होगी, जो संघहित व उत्थान की दृष्टि से हितकर नहीं है।

यदि कारण विशेष से मतभेद की स्थिति उत्पन्न हो जाये तो संघहित को ध्यान में रखते हुए प्रतिष्ठा का प्रश्न नहीं बनायें। सबको साथ लेकर चलने का प्रयास करें। अपने आपको सौभाग्यशाली समझते हुए स्वाभिमान के साथ कहें कि मैं एक ज्ञान-क्रियानिष्ठ संघ एवं गण का सदस्य हूँ, जिसका गौरव दो शताब्दियों के बीत जाने पर भी आज तक अक्षुण्ण रहा है। हम अपनी उन्नति किसी की अवनति पर, अपना सुख किसी के दुःख पर, अपनी प्रशंसा किसी की निंदा के आधार पर नहीं करें। संघ को स्वस्थ एवं स्वचलित करने के लिए व्यक्ति-व्यक्ति को घड़ी के पुर्जे की तरह सक्रिय रहना होगा। घड़ी में बाहर से देखें तो दो ही कांटे दिखते हैं। पर घड़ी चलाने में सभी पुर्जों की सहभागिता है। जो पुर्जा जहाँ है, वह वहीं रहे। तब ही घड़ी सही समय बतायेगी। बाहर वाला पुर्जा बाहर रहे, अन्दर वाला पुर्जा अन्दर रहे। संघ में अध्यक्ष का पद महत्त्वपूर्ण है। वह प्रकट में सबकी नज़र में रहता है। गुरु अच्छा तो शिष्य भी अच्छा, बाप अच्छा तो बेटा भी अच्छा, पदाधिकारी अच्छा तो कार्यकर्ता भी अच्छा। पदासीन होने के बाद कर्त्तव्य से च्युत नहीं होना है। अधिकार का उपयोग किया जाय, तो उपहार लाता है और यदि दुरुपयोग हो तो धिक्कार पाता है। माथा पूजनीय तब बनता है, जब चरण अच्छी तरह से चले। शरीर के अंग में हर इन्द्रिय का महत्त्व है। कोई भी क्रिया बिगड़ेगी तो शरीर पर असर पड़ेगा। इसी तरह यदि कार्यकर्ता का पूरा-पूरा सहयोग है तो प्रगति का पथ प्रशस्त होगा। सभी संघ सदस्यों का महत्त्व है। हर व्यक्ति कर्त्तव्य कर रहा है। रुचि के अनुसार विभाग है, क्षेत्र है, तो प्रगति निश्चित है। कार्यकर्त्ता भी संघ का अंग है, वह काम करता है तो संघ भी स्वस्थ है। जैसे घड़ी का पुर्जा भीतर का बाहर व बाहर का भीतर चला जाये तो वह घड़ी अटाला हो जाती है। बाजार में लोहे के भाव बिकने वाली है। इसी तरह यदि पुर्जा ढ़ीला है तो उसका असर भी घड़ी पर पड़ने वाला है। इस परिप्रेक्ष्य में यही कहा जा सकता है कि संघ-सदस्य अपनी योग्यता, प्रतिभा, क्षमता के साथ अपनी-अपनी जगह चुस्त दुरूस्त होकर कार्य करें। आपको पुण्यवानी से उच्चकुल व इस संघ की सन्निधि मिली है। सभी पूज्य पाद बालब्रह्मचारी हैं। परम्परा के मूल पुरुष, उत्कृष्ट क्रियापात्र, क्रियोद्धारक, विनयमूर्ति, आत्मबली, श्रुतकेवली, जीवन निर्माण के कुशल शिल्पकार, इतिहास मार्तण्ड जैसे महान् साधकों की विमल साधना के प्रताप से रत्न संघ की धवल कीर्ति आज भी गरिमा से आप्लावित है।

पदाधिकारियों, कार्यकर्त्ताओं की रुचि, आदतों, प्रकृति व कार्यकलापों में भिन्नता मिलना स्वाभाविक है। परस्पर सौहार्द, सामंजस्य व अच्छे सम्बन्धों में प्रगाढ़ता आये, इस

हेतु सहनशीलता का विकास अपेक्षित है। कार्य करते कमी रह जाना कोई नई बात नहीं है। जो करेगा उससे गलतियाँ भी हो सकती हैं। कार्य करते हुए जीवन में भूल की धूल आना स्वाभाविक है। भूल को भूल नहीं मानना विकृति है। भूल को भूल मान लेना संस्कृति है और भूल सुधार कर लेना प्रगति है। यदि यह सूत्र हृदयंगम कर लेंगे तो पदाधिकारी व कार्यकर्ता को कहीं भी बाधा आने वाली नहीं है। मानव जन्म सेवा से ही सार्थक बनता है। जो जितना अधिक समय दान कर सकते हैं, संघ उन्नयन की भावना से निर्धारित करने का लक्ष्य रखावें। कर्त्तव्य के प्रति समर्पण से अधिकार स्वतः मिल जाते हैं।

प्रायः देखने में आता है कि दर्शनार्थ आगत कार्यकर्त्ता को जैन विधियों-समाचारी आदि का ज्ञान नहीं है। संत-सतियों के प्रति आदर-सम्मान वाले भावों के साथ आस्था का भी अभाव है। ऐसे भाई स्वाध्याय कर शोध और बोध दोनों प्राप्त करने का खयाल रखावें। सामान्य सी जानकारी हर भाई को हो, ऐसी मेरी धारणा है।

व्यक्ति में संघ के प्रति समर्पण होगा तो घड़ी की भाँति संघ सदैव गतिमान रहेगा। आज संघ में कर्त्तव्य के प्रति संवेदनशील रहने की जरूरत है। आप आलस्य, प्रमाद, उपेक्षा, अहंकार इन सबको भुलाकर संघ-सेवा में अग्रणी हों तो संघ की दीप्ति स्वतः बढ़ती जायेगी। घड़ी का एक-एक पुर्जा अपना कार्य यथास्थान करता है, इसी तरह संघ का एक-एक सदस्य पद की गरिमा का ध्यान रखते हुए अपने-अपने दायित्वों-कर्त्तव्यों का निर्वहन करे। यह भाव हर पदाधिकारी व कार्यकर्त्ता में निहित हो, तो संघ की दीप्ति बनी रहेगी।

जिस पारदर्शितामय पद्धति से पदाधिकारियों का मनोनयन सर्वोच्च सदन करता आ रहा है, यह रत्नसंघ के लिये गौरव का विषय है। विरासत में मिली यह पद्धति आदर्श का परिचायक है।

सुमेल

डॉ. रमेश "मयंक"

सघन वृक्ष की छाया में बैठकर
अध्ययन, मनन, चिन्तन करने से
उपलब्धियाँ मिल जायेंगी,
बलाएँ - टलती जायेंगी,
वासनाएँ- छल नहीं पायेंगी
और- स्वाध्याय की प्रवृत्तियाँ
न्याय के गहन दर्शन से
परिचित कराएगी
फिर-
विनय- मेहनत बुद्धि का सुमेल होगा
और- सर्वोत्तम संस्कारों का
गुरु-कृपा से अद्‌भुत मेल होगा।

-बी-8, मीरा नगर, चित्तौड़गढ़-312001 (राज.)

प्रवचन

आचार्य पद की गरिमा एवं यशस्वी आचार्य श्री हीरा

मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनिजी म.सा.

श्रद्धेय मुनिश्री के द्वारा नेहरूपार्क, जोधपुर में नवपद आराधना के तीसरे मंगलमय दिवस 'नमो आयरियाणं' पद पर फरमाए गए इस प्रवचन के संकलन-सम्पादन में अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के निवर्तमान राष्ट्रीय संघाध्यक्ष श्री ज्ञानेन्द्रजी बाफना का सहयोग रहा है।-**सम्पादक**

"जीवो उवओगलक्खणो"। प्रत्येक आत्मा उपयोग से समृद्ध है। चाहे सिद्ध हो या संसारी। उपयोग यानी ज्ञान और दर्शन। योग और उपयोग में मौलिक अन्तर है। योग पुण्योदय से उत्तरोत्तर विकसित दशा में प्राप्त होते हैं। योग अर्थात् मन-वचन-काया की प्रवृत्ति। प्रवृत्ति के साधनों को जैनदर्शन में योग कहा गया है। उपयोग आत्मा का निजगुण है। प्राप्त का यानी योग का सदुपयोग कर उपयोग गुण पुष्ट व विकसित किया जा सकता है, पर अंततः योग छूटना व छोड़ना सुनिश्चित है। उपयोग मंद व विकसित हो सकता है। हमारी आत्मा में रहे इस उपयोग को पूर्ण रूप से प्रकट करना यानी केवलज्ञान केवलदर्शन प्राप्त करना ही जीव का लक्ष्य है। जीव किसी भी स्थिति में गति में, जाति में, दशा में भले ही क्यों न रहा हो, अनादि से अनन्त कर्मों से आवृत्त होने पर भी आत्मा का उपयोग गुण समाप्त नहीं होता है, क्योंकि गुण कभी भी गुणी से पृथक् हो ही नहीं सकता। चाहे ग्रहण ही क्यों न लग जाए। सूर्य का प्रकाश कभी पूर्णतः विछिन्न नहीं हो सकता है। वैसे ही आत्मा का मूल स्वभाव है जानना, देखना, जिसे आगमिक भाषा में 'ज्ञाता द्रष्टा" भाव से अभिहित किया गया है।

जीव ज्यों-ज्यों उत्तरोत्तर प्रगति करता है, यह मौलिक गुण उत्तरोत्तर विकसित होता जाता है। सारे योग उपयोग गुण के कारण ही उपयोगी हैं। प्रत्येक जीव में जन्म-मरण की अनादि अनवरत परम्परा को समाप्त कर अनन्त चतुष्टय यानी अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन, अनन्त सुख एवं अनन्त आत्म सामर्थ्य (शक्ति) प्रकट करने की क्षमता है। अर्थात् सिद्धत्व को प्रगट करने की क्षमता है, पर अज्ञान एवं मोह में बेभान जीव अपने आपको, अपने सामर्थ्य को पहचान नहीं पाता है और अपने आपको दरिद्र मान बैठता है। वह भिखारी की भांति यत्र तत्र भटकता रहता है। कल्पना करें, एक नादान व्यक्ति जीवनभर एक शिला जिसके नीचे स्वर्ण रजत के चरू छिपे हों, गाडे हुए हों एवं शिला भी कौनसी? पारस पाषाण की, जिसके स्पर्श मात्र से लोह खण्ड भी स्वर्ण खण्ड बन जाता है। ऐसी शिला पर वह

व्यक्ति एक मलिन वस्त्र का बिछौना बिछाये फटे हाल दशा में जीवनभर भीख मांग अपना जीवनयापन कर दारिद्र्या दैन्य दुःख भोग रहा है, पर उसे कहाँ पता कि जहाँ बैठा है वहाँ नीचे अतुल वैभव छिपा हुआ है और जिस पर बैठा है वह शिला भी अपने आपमें असंख्य धनराशि का सृजन करने में सक्षम है। संभव है आप सब उसकी अज्ञानता व दारिद्र्य पर हँस रहे होंगे। पर हमें वस्तुतः अपने आप पर हँसना चाहिये, क्योंकि जिन्होंने भी अपने आत्मसामर्थ्य को नहीं समझा, आत्म-सामर्थ्य प्रकट करने की ओर अपने चरण नहीं बढ़ाये, एवं आत्म-सामर्थ्य प्रगट करने का सुअवसर प्राप्त कर यानी चतुर्विध संघ का सदस्य बनकर भी सम्यक् पुरुषार्थ नहीं किया, उनकी यही स्थिति है। उत्तराध्ययन सूत्र के 20 वें अध्याय में उन्हें अनाथ की संज्ञा से अभिहित किया गया है।

जीव कर्म स्थिति परिमित होने पर जब अपूर्वकरण कर अपने आत्म-सामर्थ्य को पहचानता है तब वह सम्यग्दर्शन की अनुभूति करता है एवं संसार को परिमित कर लेता है। यह मोक्ष साधना की ओर प्रथम कदम है।

जब सम्यग्दृष्टि आत्मा संसार दशा में रहते हुए भी कषाय भाव को सीमित कर आंशिक व्रत ग्रहण कर मर्यादा में अवस्थित होता है तब वह 'श्रावक' विशेषण से उपमित होता है तथा जिनेन्द्र देव के धर्मशासन का सदस्य बन जाता है।

जब आत्मसाधक लोभ, मोह व आसक्ति के बंधनों को तोड़ कर पूर्ण मनोयोग से त्रिविध योग से सम्पूर्ण पापों को करने-करवाने ही नहीं, वरन् अनुमोदन का भी त्याग कर देता है तब वह मुनिपद का अधिकारी बन जाता है एवं पंच परमेष्ठी के पंचम पद 'णमो लोए सव्व साहूणं' पर अधिष्ठित हो जाता है।

ऐसे धर्म संघ की संस्थापना अनन्त पुण्य निधान तीर्थंकर भगवन्तों द्वारा की जाती है। पूर्व जन्मों में बीस बोल की निर्मल आराधना करते हुए संसार के सभी जीव षट्काय जीवों के रक्षक बनें, जिनवाणी के रसिक बनें, जिनशासन के सदस्य बनें एवं संसार से मुक्त बनें, मैं ऐसा पुरुषार्थ करूँ, यह भावना भाने वाले जीव तीर्थंकर गोत्र का उपार्जन करते हैं।

स्वयंबुद्ध अरिहन्त परमात्मा स्वयं दीक्षित होकर आत्म-साधना का आदर्श प्रस्तुत कर केवलज्ञान-केवलदर्शन प्राप्त कर कृतकृत्य हो जाने के बाद भी संसारी जीवों के प्रति अनन्त करुणा से "सव्वजगजीवरक्खणदयट्ठयाए भगवया पावयणं सुकहियं" धर्मतीर्थ की संस्थापना करते हैं एवं पीयूषपाविनी वीतराग वाणी का वागरण करते हैं।

वीतरागदेव द्वारा संस्थापित धर्मसंघ की सुव्यवस्था जिन विशिष्ट प्रतिभा सम्पन्न महापुरुषों द्वारा की जाती है, उन्हें जिनशासन में सात पदवियों से सम्बोधित किया गया है- ये विशिष्ट पदवियाँ हैं- आचार्य, उपाध्याय, प्रवर्तक, स्थविर, गणधर, गणी व

गणावच्छेदक। इन सात पदवियों में से गणधर पदवी गणधरलब्धि से प्राप्त होती है। शेष छह पदवियाँ गुरु द्वारा अपने विशिष्ट उपयोग से अवलोकन कर मनोनयन द्वारा अथवा चतुर्विध संघ द्वारा प्रदान की जाती हैं। जिन साधकों के पूर्वजन्म में स्वयं के कल्याण के साथ अपने समूहवर्ती सभी जीवों के कल्याण की उत्कृष्ट भावना एवं उसमें उत्कृष्ट रसायन आवे, वे गणधर बनते हैं। तीर्थंकर देव की प्रथम देशना में उनके शासन में गणधर बनने वाले सभी दिव्य महापुरुष स्वतः पहुँच जाते हैं। प्रभु से 'उप्पन्नेई वा विगमेई वा धुवेइ वा' इस त्रिपदी का बोध पाते ही उन्हें गणधरलब्धि उत्पन्न होने से उनके उन्मीलित ज्ञान चक्षु खुल जाते हैं एवं वे चतुर्दश पूर्व के ज्ञाता बन जाते हैं। प्रभु के जीवनकाल में गणधरदेव विभिन्न गणों में साधु समुदाय की सारणा-वारणा-धारणा करते हुए भव्य जीवों व साधकों का मार्गदर्शन करते हैं, साथ ही प्रभु द्वारा वागरित अर्थरूप वाणी को सूत्र रूप में बोधित करते हैं, उस दिव्य वाणी के ही कुछ अंश आज आगम के रूप में भव्यजीवों को मोक्ष मार्ग का पथ प्रशस्त कर रहे हैं।

प्रभु के निर्वाण के पश्चात् आचार्य परम्परा प्रारम्भ होती है। आचार्य पद सभी पदों में अत्यन्त गौरवशाली, महिमाशाली पद है। यह तीर्थंकर देव की विरासत को आगे से आगे बढ़ाने का माध्यम है एवं उनकी स्मृति दिलाने वाला महिमाशाली पद है। आचार्य जिनशासन के रूपी मन्दिर के शिखर के समान हैं। जैसे शिखर से मन्दिर की पहचान, प्रतीति व आभास होता है, वैसे ही आचार्य से जिनशासन की पहचान व प्रतीति होती है। आचार्य तीर्थंकर के प्रतिनिधि हैं एवं वे जिनवाणी के आश्रय से वीतरागदेव के शासन का संचालन करते हैं। पंच परमेष्ठी में आचार्य का तीसरा पद है। यह पद देव व गुरु के मध्य में अवस्थित पद है। वे एक ओर वीतरागदेव (अरिहंत व सिद्ध) की विरासत के धारक हैं, उनके प्रतिनिधिरूप उनके शासन के नियामक हैं तथा अपने जीवन में अरिहंत व सिद्ध बनने के लक्ष्य से साधनाशील हैं, जो निश्चय ही एक भव में नहीं तो तीसरे भव में सिद्धि का वरण करने वाले हैं, वहीं वे चौथे व पाँचवें पद वाले निर्ग्रंथ भगवन्तों का पथ प्रशस्त करते हैं। स्वयं ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चारित्राचार, तपाचार एवं वीर्याचार इन पंचाचार का पालन करते हुए समस्त संघ से पंचाचार का पालन करवाते हैं।

आचार्यदेव के सक्षम नेतृत्व में ही चतुर्विध संघ प्रगति पथ पर बढ़ता है। किसी भी संगठन का भविष्य क्या होगा? उसके सदस्यों का विकास कैसा होगा? वह संगठन कितना सबल होगा, यह उसके नेतृत्व की सक्षमता पर निर्भर होता है। सक्षम नेतृत्व की छत्रछाया में सभी घटकों, सभी सदस्यों का समीचीन विकास होता है। सुयोग्य नेतृत्व की दृष्टि के प्रकाश से संगठन में कोई विकृति प्रवेश नहीं कर पाती है, मर्यादा अक्षुण्ण रहती है एवं नियमों का सुचारू रूपेण पालन होता है। इसके विपरीत जहाँ कोई नेतृत्व नहीं हो अथवा नेतृत्व असक्षम हो, वहाँ मनमानी,

स्वच्छन्दता एवं अराजकता फैल जाती है। किसी को किसी का भय नहीं होता है।

सक्षम नेतृत्व का सभी घटकों एवं सदस्यों द्वारा सम्मान, उनकी आज्ञा का सविनय पालन संगठन की प्राथमिक आवश्यकता है। आचार्य संघ के नायक हैं। वे आज्ञानुवर्ती प्रत्येक साधु-साध्वी की प्रकृति व योग्यता का आकलन कर उसी अनुरूप उन्हें आगे बढ़ाने का दायित्व निर्वहन करते हैं। पंचाचार पर चलते हुए कभी साधक से कोई स्खलना हो जाय तो उसकी शुद्धि हेतु वे यथोचित प्रायश्चित्त प्रदान करते हैं। किसके लिये क्या योग्य कार्य, किसके दोष परिहार हेतु कौनसा व कितना प्रायश्चित्त उचित, यह निर्णय करने का गुरु का गम्भीर दायित्व है। आचार्य देव यह दायित्व पूर्ण सजगता, निष्पक्षता व अग्लान भाव से निर्वहन करते हैं। एक मात्र सुधार व सहयोग की भावना, अन्य कोई भान नहीं, ऐसे महापुरुषों के लिये आगमकारों ने फरमा दिया कि अग्लान भाव से आचार्य पद का निर्वहन करने वाला साधक उस भव में नहीं तो निश्चत ही तीसरे भव में मोक्ष का वरण करता है।

आचार्य शिष्यों का निर्माण करते हैं। किस शिष्य को कब किस कार्य में नियोजित करना, किस शिष्य को किस विधा में आगे बढ़ाना, प्रत्येक साधक की योग्यता का आंकलन कर आवश्यक प्रेरणा व व्यवस्था करना आचार्य का विशेष दायित्व है। शिष्य दूर हो या समीप, वह सदा उनका अन्तेवासी ही होता है। दूर रह कर भी शिष्य सदा उनकी सन्निधि में ही है। शासन की प्रभावना के लिए कौनसे शिष्य का किधर विचरण विहार व चातुर्मास कराना, उसका निर्णय आचार्यदेव करते हैं। योग्य प्रभावक शिष्य को योग्य वाचना न दे, विकास का यथोचित अवसर नहीं दे तो आचार्य स्वयं प्रायश्चित्त के अधिकारी माने गये हैं। तात्पर्य यह है कि आचार्य समग्र संघ के विकास की धुरी है।

आचार्यदेव द्वारा प्रदत्त प्रायश्चित्त दण्ड नहीं सुधार की पावन प्रेरणा है, संघ भवन की सुरक्षा का कवच है। दीवार से निकली एक ईंट दीवार को कमजोर कर देती है, एक सड़ा आम टोकरी भरे आमों को सड़ा देता है। योग्य से योग्य साधक भी मोहोदय से छोटी सी भूल कर बैठे व उसकी उपेक्षा कर दी जाय तो वह छोटी सी भूल भी साधक के जीवन को नष्ट कर देती है। गुजरात की विशिष्ट परम्परा के एक विशिष्ट साधक ज्ञान, दर्शन, चारित्र व तप की उत्कृष्ट साधना के धनी, सेवा में अग्रणी, प्रतिभा के पुञ्ज पर एक छोटी सी स्खलना, लाइब्रेरी में रखी गई एक गलत पुस्तक से उनके साधक जीवन में शिथिलता ने घर कर लिया, स्खलना पर दृष्टि न जाने का परिणाम क्या हुआ? उस संत के साधक जीवन का अंत हो गया और वे गृहवासी बन गये। पूज्यपाद आचार्य इसलिये अपने शिष्य संतति के जीवन पर सूक्ष्म दृष्टि रखते हैं, उनका मार्गदर्शन करते हैं तथा स्खलना होने पर प्रायश्चित्त की कृपा कर उनके संयमधन की सुरक्षा करते हैं। कोई पक्ष पोषण नहीं, एक मात्र लक्ष्य साधक जीवन

की सुरक्षा, जिनशासन की गरिमा अक्षुण्ण रखने की भावना। सिद्धान्त का प्रश्न उपस्थित हो जाय तो वे प्रभावना को भी गौण कर देते हैं। चतुर्दश पूर्वधर आचार्य भद्रबाहु स्वामी ने आर्य स्थूलिभद्र जैसे कामजयी उत्कृष्ट साधक की एक भूल विद्या प्रदर्शन के लोभ का संवरण न कर पाने पर कितना कठोर निर्णय लिया- आगे वाचना देने से ही इन्कार कर दिया।

जिनशासन को अक्षुण्ण रखने का दायित्व भी आचार्य का ही होता है। इतिहास साक्षी है- श्रमण भगवान महावीर के तृतीय पट्टधर आर्य प्रभव को अपने विशाल श्रमण संघ में जब कोई सक्षम व्यक्तित्व दृष्टिगत न हुआ तो उन्होंने अपने ज्ञानोपयोग से शय्यंभव ब्राह्मण को पहिचाना, उन्हें श्रमण दीक्षा हेतु प्रेरित किया। कहना न होगा इस धर्मशासन के वे खेवेया हैं। दूसरी ओर साधक की साधना हेतु व्यक्तिगत मोह से ऊपर उठकर साधक को साधना में सहयोग भी आचार्य का महनीय दायित्व है। आचार्य शय्यंभव की सेवा में उनका अल्पवय पुत्र 'मणग' पहुँचा, उसके जीवन उद्धार के लिये उन्हें दीक्षा ही नहीं प्रदान की, वरन् उनकी अल्प आयु शेष जानकर पूर्वों से सूत्र लेकर दशवैकालिक सूत्र की रचना कर उन्हें साधु मर्यादा का ज्ञान दिया।

आचार्य आठ सम्पदाओं- आचार सम्पदा, श्रुत सम्पदा, शरीर सम्पदा, वचन सम्पदा, वाचना सम्पदा, मति सम्पदा, प्रयोगमति सम्पदा व संग्रह परिज्ञा सम्पदा के धनी होते हैं। उन्हें 'हरि' यानी शेर की उपमा दी गई है। वे प्रबल पुरुषार्थ से स्व-पर कल्याण में नियोजित रहते हैं। पंच परमेष्ठी में आचार्य तीसरे पद के धारक हैं। वे स्वयं निर्मल संयम साधना करते हुए अरिहन्त न सिद्ध पद प्राप्ति का पुरुषार्थ करते हैं, वहीं वे अपने अनुवर्ती संघ समुदाय को आगे बढ़ाने का महनीय दायित्व निर्वहन करते हैं।

जिस गौरवशाली धर्म संघ परम्परा का हमें सदस्य होने का स्वर्णिम सुअवसर मिला है, उस यशस्विनी संत परम्परा- 'रत्नसंघ' के सभी आचार्यों ने अपने साधना-सम्पूरित जीवन से जिनशासन की महनीय सेवा की है। पूज्यपाद गुरुदेव आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमलजी म.सा. ने जिनशासन की कीर्ति पताका को दिग्दिगन्त में फहराया, संघ के सभी घटकों के लिए मोक्ष का पथ प्रशस्त किया, लाखों लोगों का जीवन सुधार किया, दृष्टि प्रदान की। उन्होंने अपनी विमल विरासत के रूप में अपने पट्टधर के रूप में आगमज्ञ प्रवचनप्रभाकर अपने प्रतिभाशाली शिष्य आचार्य श्री हीराचन्द्र जी महाराज साहब का मनोनयन कर इस पावन प्रभावक परम्परा पर महान् उपकार किया है।

महान् विरासत को संभालना कोई आसान कार्य नहीं। युगमनीषी, युगप्रभावक, युगनिर्माता गुरु के पट्ट पर विराजना अनन्त पुण्य का प्रतीक है, किन्तु इसे संभालना किसी बड़ी चुनौती से कम नहीं। पर हम सब गौरवान्वित हैं हमारे वर्तमान संघनायक जिनशासन

गौरव आचार्यदेव पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. पर। उन्होंने जिस कुशलता व कर्मठता से इस यशस्वी परम्परा का नेतृत्व करते हुए अपने यशस्वी पूर्वजों का यशवर्द्धन किया है, संघरथ को सम्भाला ही नहीं, वरन् संवारा है, सुसमृद्ध किया है, इसकी प्रतिष्ठा को और अधिक प्रतिष्ठा प्रदान की है, उससे हम सब ही नहीं वरन् समूचा जिनशासन नतमस्तक है। स्थानकवासी परम्परा के वे वरिष्ठतम आचार्य हैं। अपने सुदीर्घ विचरण-विहार से उन्होंने आर्यधरा के कोने-कोने को पावन किया है, अपने आज्ञानुवर्ती धर्मसंघ का नेतृत्व तो किया ही है, लाखों लोगों को निर्व्यसनता का पावन संदेश दिया है। हजारों लोगों को रात्रिभोजन त्याग एवं शीलव्रत ग्रहण की प्रभावी प्रेरणा की है।

आचार्यश्री के जीवन व उनके मोहक व्यक्तित्व में अष्ट सम्पदा के साक्षात् दर्शन होते हैं। उनके सम्मोहक व्यक्तित्व, प्रभावक वाणी व महनीय कृतित्व से हमारा धर्म संघ महिमा मंडित है। उनका शीतल सान्निध्य भक्तों को सहज ही सुखद भविष्य के लिए आश्वस्त करता है। हमारे आचार्यदेव स्वयं प्रतिपल सजगता से अप्रमत्त साधना में संलग्न हैं, साथ ही वे कठोर अनुशासन के साथ संघ की सारणा-वारणा में संलग्न हैं। प्रयोगधर्मी आचार्यदेव अपने आज्ञानुवर्ती संघ को आदेश देने के पूर्व छोटे से छोटे नियम की अपने जीवन में यथोचित परिपालना हेतु प्रतिबद्ध हैं। परीक्षा के कई प्रसंग उनके शासनकाल में संघ के समक्ष आये, पर वे सदा अडोल, अकम्प रहे। धैर्य, विचक्षणता व दृढ़ता के साथ उन्होंने सभी परिस्थितियों का सामना किया है। ऐसे कई प्रसंगों से संघ के सभी सदस्य सुपरिचित हैं। उदाहरण के तौर पर कुछ माह पूर्व दीक्षा के थोड़े ही समय पश्चात् ही श्री अभयमुनिजी म.सा. के जीवन में जो प्रसंग बना, संघ सदस्य आशंकित थे- जनमानस भी उद्वेलित था, ऐसी शारीरिक स्थिति में उनके साधनामय जीवन में कौन सहयोगी बनेगा, कैसे उनका संयम सुरक्षित रहेगा, नवदीक्षित संत की ऐसी स्थिति में वैय्यावृत्त्य की व्यवस्था कैसे होगी, पर धन्य है हमारे आचार्यदेव के धैर्य को, उन्होंने फरमाया- "दीक्षा मैंने दी है, मेरी जिम्मेदारी है, मैं स्वयं सेवा करूँगा, यह मेरा दायित्व है।" कहना न होगा जिस धर्म संघ के नायक स्वयं अपने द्वारा दीक्षित संतों की सेवा हेतु ऐसी भावना रखते हों, वहाँ समूचा धर्मसंघ सेवा-वैय्यावृत्त्य हेतु समर्पित हो तो आश्चर्य को अवकाश ही कहाँ। आचार्यदेव के कृपातिशय, संत भगवन्तों व संघ की सेवा का परिणाम है कि आज श्री अभयमुनिजी म.सा. अपने संयम जीवन का निर्वहन कर रहे हैं। ऐसे एक नहीं अनेक प्रेरक प्रसंग आचार्य श्री के शासन व नेतृत्व कौशल के स्वर्णिम अध्याय हैं। उनके आचार्य पदारोहण के रजत वर्ष के पावन प्रसंग पर उनके चरण सरोजों में श्रद्धा समर्पण के साथ हम सब भी साधना मार्ग में और आगे बढ़ें, यहीं मंगल मनीषा है। ■

प्रवचन

जो फिक्र को निगल जाता है, वह होता है फकीर

तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनिजी म.सा.

तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. द्वारा महावीर भवन, अलवर में 26 सितम्बर, 2015 को फरमाए गए इस प्रवचनांश का संकलन-सम्पादन श्री ओमप्रकाशजी गुप्ता, राजस्थान टाइम्स, अलवर द्वारा किया गया है।-सम्पादक

क्या आपको पता है संसार में रहते हुए सबसे बड़ा सुखी कौन होता है? जो निष्फिक्र है, जिसे किसी भी प्रकार की कोई चिन्ता नहीं है, वे फकीर ही सबसे बड़े सुखी होते हैं। फकीर का मतलब किसी वेष या बाने या धर्म-पंथ-सम्प्रदाय विशेष से नहीं है, वरन् जिसके भी जीवन में कोई फिक्र नहीं रह पाती, सांसारिक इच्छाएँ मर जाती हैं, वही सच्चा फकीर है। फकीरी से बड़ा कोई सुख नहीं, परन्तु ऐसा फकीर होना कोई आसान नहीं है। संसार के सारे प्रपंचों, रगड़म-पट्टी और तेरी-मेरी से मुक्त होने वाला ही फकीर हो पाता है। जो सिर्फ आत्मा के गुणों का प्रकटीकरण करने और अनन्त में लीन होने की साधना का पराक्रम करता रहता है, वही फकीर कहलाता है। क्या गृहस्थ में रहने वाला भी फकीर हो सकता है? बिल्कुल हो सकता है। अपने नजरिया-दृष्टिकोण-सोच और विचारधारा में थोड़ा-थोड़ा भी आमूल-चूल परिवर्तन लाकर हम खुद को बदल सकते हैं। जीवन के छोटे-छोटे शुभ संकल्प और पावन सत्कर्म की पहल एक दिन 'यू-टर्न' करा सकती है। विडम्बना यह है कि हम अच्छे-नेक-पवित्र कार्यों के प्रति निराश और हताश बहुत जल्द हो जाते हैं। बुरे कार्यों के प्रति और पाप की दौड़ में हम जितने आगे व तत्पर बने रहते हैं, उतना ही हमारा जीवन उत्थान व आत्म-कल्याण के बारे में उदासीन व निष्क्रिय बन जाता है।

संसार में दुःख व अशांति बढ़ने का मूल कारण यही है कि हम अपने आत्म-तत्त्व की अच्छाइयों को भूलकर उस गलत राह की ओर लगातार बढ़ रहे हैं जिससे आत्मिक सुख कभी संभव ही नहीं है। आपको पता होगा कि छोटा सा घाव, नन्हीं सी फुंसी कभी-कभी नासूर बन जाती है। बीड़ी-सिगरेट का जला हुआ एक टुकड़ा जंगल को दावानल बना देता है। पटाखे से निकली एक चिंगारी घर-बाजार-दुकान-फैक्ट्री-खेत-खलिहान सबको क्षण भर में राख कर देती है। थोड़ा-सा लिया गया ऋण-कर्जा एक दिन दिवाला निकाल

देता है। छोटा-सा अपमान महाभारत पैदा कर देता है। इसी तरह अपना छोटा सा अवगुण, मामूली क्रोध जीवन में कब भयंकर स्थिति उत्पन्न कर दे, यह कोई नहीं जानता, परन्तु पतन के ये बीज ही तो आगे चलकर वटवृक्ष बनते हैं। हमें भी फकीर बनने के लिए उन छोटी से छोटी बुराइयों व साधारण से लगने वाली भूलों से छुटकारा पाना होगा जो फिक्र से मुक्त होने के मार्ग में बाधक बने हुए हैं। हम किसी भी बुराई, भूल, अवगुण, दोष, गलत कार्यों को छोटा नहीं समझें, वरन् उन्हें गलत ही मानें और उन्हें जीवन से निकालें। अपने जीवन को अच्छा बनाने के लिए हर दिन-हर पल शुभ व मंगलदायी है। संसारी वस्तु और पदार्थों के प्रति अपना अटैचमेंट और कामना को घटाते हुए चलें ताकि एक दिन उन्हें अपनी फकीरी में बाधा मानते हुए पूर्णरूपेण ठुकराया जा सके। याद रखें- फकीरी जैसा जीवन जीने वाले ही मस्ती के साथ शांत चित्त में रमण करते हुए मुक्ति का पथ प्राप्त कर पाते हैं। आप भी अपना उत्साह जगाएं, संसार के परिग्रहों को छोड़ते चलें, स्वार्थी रिश्तों से परे हटें, अपने को अपने में खोजें, फकीरीपन का आनन्द फिर दूर नहीं है। वह एक दिन खुद-ब-खुद प्रकट हो जाएगा।

जैन साधु-साध्वी हकीकत में फकीरी जैसा जीवन जीते हैं। वे यदि फटे-पुराने, मैले-कुचले वस्त्र में और बिना चप्पल-जूतों के नंगे पांव चलते-फिरते दिखाई देते हैं, तब भी उन्हें त्यागी-वैरागी माना जाता है। जो खाने-पीने को लूका-सूखा मिल जाए या ना मिले, तब भी प्रसन्नचित्त रहते हैं। कोई गाली दे अथवा पत्थर भी फेंक दे, तब भी विचलित नहीं होते, बल्कि मुस्कुराते हुए आशीर्वाद ही देते हैं। जिन्हें संसार में रहते हुए किसी सांसारिक वस्तु या पदार्थ से कोई मोह-ममता, आकांक्षा या अभिलाषा नहीं, वे ही तो सच्चे फकीर हैं। जिनके पास रहने का कोई स्थाई ठौर-ठिकाना नहीं, पास में फूटी-कौड़ी और अन्न का एक दाना नहीं, भिक्षावृत्ति करके जो पेट भरते हैं, बदले में धर्म की गंगा बहाते हैं, जीवन भर नंगे पाँव पैदल चलते हैं, स्वयं केशलोच करते हैं, इससे बड़े अन्य कोई फकीर नहीं होते। फकीरी का यह आनन्द संसार के तमाम भौतिक सुखों के समक्ष स्वर्ग से भी बहुत ऊँचा है। फिक्र को निगलने वाले ही मोक्ष का पथ प्राप्त कर पाते हैं क्योंकि जब तक जीवन में किसी भी तरह की फिक्र शेष है, तो वह कांटा ही बाधक बन जाता है। इसलिए हम भी जागें और संसार की असारता को अनुभव करते हुए उस सारभूत तत्त्व को पहचानें, जिसके माध्यम से आत्म-गुणों में वृद्धि हो सके। कषायों का पूर्णतया खात्मा करें ताकि आगे वे नए कांटे के रूप में चुभन न दे पाए। परहित में अपना सर्वोपरि हित समझें। सब आत्माओं में अपनी जैसी आत्मा का दर्शन करें। मिले हुए का सदुपयोग करें और

परिग्रह छोड़ते चलें, मंजिल फिर सुगम हो जाएगी। हर जीव में परमात्मा बनने का सामर्थ्य है। हम सब मुक्ति में जा सकते हैं, लेकिन कैसे और कब जाएंगे, इसके लिए भरोसे को जागृत करना पड़ेगा। थोड़ा सा भी अच्छा भाव, अच्छी करनी, संयम-त्याग, हमें फकीरी का अहसास दिला सकता है, लेकिन भैया पहले अपने भीतर उस फकीरी जैसा उत्साह तो जागे। कर्मों का सम्पूर्ण नाश करने का भाव जागृत तो हो। पापों से भय का अनुभव तो होने लगे। जब थोड़ा सा भी कषाय जीवन को बर्बाद कर देता है तब भव-भवों के कषायों का ढेर तो भयंकर दुर्गति करता आया है। हम अपना खोया विश्वास और मंद पड़ी श्रद्धा को फिर से सुदृढ़ करें, जरूर एक दिन फकीरी का भाव भव-भ्रमण से छुटकारा दिलाने में निमित्त बनेगा। जगत्पिता तो ऐसे बच्चों को अपनी शरण देने के लिए तैयार बैठे हैं, परन्तु हमारे भीतर वैसी काबिलियत एवं समर्पण तो बढ़े। सिद्ध के अनन्त पर जिसको भरोसा जाग गया, वही तो भव्य जीव होता है। सर्व हितकारी भावना रखने वाले ही आगे बढ़ पाते हैं। वे ही तो फकीर हो पाते हैं। ■

पहले तोल पीछे बोल

संकलन : श्री जौहरीमल छाजेड़

1. काँच से भी नाजुक मन पर जब वचन का वजनदार पत्थर चोट करता है तब, वह खण्ड-खण्ड में बिखरकर खण्डहर में बदल जाता है, अतः बोलने से पहले अपनी बात को विवेक की तुला पर तोलना चाहिए।।
2. कामधेनु के समान मधुर वाणी विरोधियों को मित्र बना देती है और अपने जीवन को अनुकूल मार्ग पर चलाती है।
3. वाणी को शस्त्र नहीं मरहम बनाओ, क्योंकि वाणी मनुष्य की ऐसी विशिष्टता है जिसके सम्यक् उपयोग से सम्पूर्ण विश्व को अपना बनाया जा सकता है।
4. बोलने से पूर्व वाणी को मन की तुला पर इस प्रकार तोलना चाहिए- "मेरे वचन कहीं विषाद या विभेद को उत्पन्न तो नहीं करेंगे? मेरे शब्द कहीं कलह का बीज तो नहीं बन जाएँगे। मेरी वचनावली कहीं हिंसा का निमित्त तो नहीं बनेगी?"
5. कटु वचन न केवल सुनने वाले को कर्णकटु लगते हैं, अपितु वक्ता के लिए भी उपद्रवजनक सिद्ध होते हैं। हमारे पूर्वजों (विद्वानों/ज्ञानियों) ने सही कहा है- "पहले तोल पीछे बोल"।

वरिष्ठ स्वाध्यायी, श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर-342001 (राज.)

प्रवचनांश

संघ के नाम में हैं अध्यक्ष की विशेषताएँ

श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा.

पूज्य आचार्यप्रवर के मनीषी शिष्य श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. ने 03 अक्टूबर 2015 को आमसभा के एक दिन पूर्व संघ-अध्यक्ष की विशेषताओं को 'अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ' पदों से मंथन कर प्रस्तुत किया है। उस प्रवचन के मुख्य बिन्दु यहाँ प्रस्तुत हैं।-**सम्पादक**

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ ये 8 शब्द जिसके जीवन में जीवन्त हो, वही संघ का अध्यक्ष बनता है।

अध्यक्ष- अधि+अक्ष= दोनों ओर जिसके आँख हो। जो स्वयं को भी देखता है और समाज को भी देखता है, वही अध्यक्ष बनता है।

शासन को सुरक्षित रखने वाले- 1. आचार्य और 2. अध्यक्ष। आचार्य के शासन को अभिवर्धित करने का सबसे पहला दायित्व अध्यक्ष का होता है, क्योंकि आचार्य 36 गुण युक्त होते हैं और अध्यक्ष का कार्यकाल 36 महीने का होता है। अतः आचार्य और अध्यक्ष में समीपता होना परम आवश्यक है। आचार्य का निर्णय एक बार होता है और अध्यक्ष का निर्णय अनेक बार होता है। निर्णय में सावधानी रखनी है-

1. निर्णय करने से पहले निर्लेप रहे।
2. निर्णय करने के बाद निश्चिन्त हो जाए।

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ में 'आठ' शब्द हैं। उनमें से आरम्भ के 4 शब्द व्यक्तिगत हैं, 4 शब्द समष्टिगत हैं। अतः अध्यक्ष के जीवन में जीवन्त हों ये 8 शब्द-

1. अखिल-

1. शरीर से सम्पूर्ण हो
2. मन से मधुर हो
3. मति से परिपूर्ण हो

2. भारतीय-

1. भारत भर में रहने वाले गुरुभाइयों के प्रति जिसके रग-रग में प्रेम हो।
2. भारत भर के वासियों को एक सूत्र में बाँधने की जिसके अन्दर शक्ति हो।
3. लिये हुए भार को भार नहीं भाग्य समझकर आभार प्रकट करने वाला हो, अहंकार

करने वाला न हो, वही संघाध्यक्ष बने।

3. श्री–

1. लक्ष्मी (द्रव्य) से सम्पन्न हो।
2. भाव लक्ष्मी (दान देने की भावना) से सम्पन्न हो।

4. जैन– 'जन' शब्द पर दो मात्रा लगने पर 'जैन' शब्द बनता है। वे दो मात्रा आचार और विचार की प्रतीक होती हैं। जिनके जीवन में आचार का आधार हो, विचारों का विस्तार हो उनके जीवन में चार विशेषताएँ होती हैं– 1. कथनी और करनी में एकता, 2. कलम और कदम में दृढ़ता, 3. आचार-विचार की साम्यता, 4. उच्चारण और आचरण की समीपता।

5. रत्न–

1. ज्ञान, 2. दर्शन, 3. चारित्र। इन तीन रत्नों पर जिसकी सम्यक् श्रद्धा हो।

6. हितैषी–

1. वह संघ हित में सोचता है।
2. हृदय से सोचता है।
3. हमदर्दी बनकर सोचता है।

7. श्रावक–

1. **श्र–** श्रवण करने की कला हो। (सबकी भावना सुनने वाला हो)
2. **व–** विचार करने का सामर्थ्य हो।
3. **क–** क्रियान्वित करने में दक्ष हो।

8. संघ–

1. **एकरूपता–** बाहर में एकरूपता हो।
2. **एकजुटता–** आपस में एकजुटता हो।
3. **एकनिष्ठता–** अन्तर में एकनिष्ठता हो।

- मैं संघ प्रमुख हूँ, पर मेरे लिए संघ प्रमुख है।
- अध्यक्ष अपने कार्यकाल में सेवाभावी कार्यकर्त्ताओं को तैयार करें। रचनात्मक यदि कोई सर्वश्रेष्ठ कार्य है तो वह है– कार्यकर्ता का निर्माण।
- संघ वक्ताओं से नहीं, कार्यकर्त्ताओं से चलता है।
- संघ को वेतन वाले कार्यकर्त्ता नहीं चाहिए।
- संघ को चेतन वाले कार्यकर्त्ता चाहिए।
- वेतन वाले कार्यकर्त्ता कभी 'वतन' का भला नहीं कर सकते। ■

आचार्यपद रजत वर्ष

गुणसम्पन्न संघनायक आचार्य श्री हीरा

महासती श्री पद्मप्रभाजी म.सा.

आचार्यपद के सर्वविध सद्गुणों से सम्पन्न पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के आचार्य पदारोहण रजतवर्ष पर महासती श्री पद्मप्रभाजी म.सा. के विचार आचार्यप्रवर के 53 वें दीक्षा-दिवस कार्तिक शुक्ला षष्ठी 17 नवम्बर 2015 के अवसर पर पाठकों के लिए प्रस्तुत हैं।-**सम्पादक**

रात्रि का समय था, चारों ओर नीरव शान्ति और ऐसे स्तब्ध वातावरण में मन ने हृदय से एक प्रश्न किया- कौन होते हैं आचार्य? क्यों मनाया जाता है आचार्य पद का चादर महोत्सव? प्रश्न मन का था और समाधान हृदय का। हृदय ने बड़ी श्रद्धा से, बड़ी आस्था से कहा- ''सुनो मेरे मन! कौन होते हैं आचार्य?''

जिनके जीवन में शास्त्र स्वयं व्याख्या पा जाये
सिद्धान्त सत्य बनकर उभर आये
पूर्व अपूर्व श्रुत सा नज़र आये
ज्ञान विज्ञान बनकर आत्मज्ञान में समा जाये, वे होते हैं आचार्य।
छत्तीस गुण जिनकी अंतश्चेतना बन चुके हों
जिनका जीवन छः काया का रक्षक हो
समिति का शरणस्थल हो
सतरह भेदे संयम के जो सारथी हों, वे होते हैं आचार्य।
आगम आचार और आराधना की धड़कन जिनकी सांस-सांस में हो
जिनके वचन आदेश और जिनका सौभाग्य आत्महित में हो
आध्यात्मिक दोषों को अनाथ कर अपनी आत्मा को सनाथ करने में जो
स्वयं तत्पर हों एवं दूसरों को सनाथ बनने की प्रेरणा करते हों
शुद्ध आचरण और प्रामाणिकता की कसौटी में तपकर
जिनके संयम में स्वर्ण सा निखार आया हो, वे होते हैं आचार्य।
आचार्य के रोम-रोम से आचार झलकता है,
मात्र काया से ही नहीं, वचन और मन से ही नहीं,
अपितु आत्मा के प्रदेश-प्रदेश से आचार प्रकट हो जाता है
आचार का पालन करते हैं इसलिये आचार्य कहे जाते हैं

आचार्य और आचार का अविनाभावी सम्बन्ध है

कौन होते हैं आचार्य तो इसका समाधान है- जो आचार का पालन करते हैं वे आचार्य होते हैं।

क्यों मनाया जाता है आचार्य पद का चादर महोत्सव? तो कहना होगा कि आचारवान पुरुष के नेतृत्व में ही संघ आचारवान, व्यवहारवान और प्राणवान बनता है। अतः संघ उत्थान के लिये किसी एक विशिष्ट आचार सम्पन्न पुरुष को आचार्य पद पर मनोनीत किया जाता है और ऐसे आचारनिष्ठ पुरुष के आचार को, उनकी महिमा और गरिमा को दसों दिशाओं में फैलाना एक शिष्य का सद्कर्तव्य है। इसी कर्तव्य का निर्वहन करने के लिये संघ द्वारा कृतज्ञता के रूप में आचार्य पद का चादर महोत्सव मनाया जाता है। इसे मनाने के पीछे आन्तर-लक्ष्य है- जन-जन में, सकल संघ में, आचार की लहर व्याप्त हो। संघ का प्रत्येक सदस्य श्रद्धावान, विवेकवान और क्रियावान बने।

बन्धुओं! संघ की आत्मा क्या है? संघ की आत्मा है सम्यक् दृष्टिकोण, संघ की आत्मा है सम्यक् अवधारणा, संघ की आत्मा है सम्यक् आस्था। जिसका दृष्टिकोण उदार, धारणा स्पष्ट और आस्था मजबूत नहीं होती वह संघ कभी भी विकास नहीं कर सकता। संघ की आस्था और धारणा को जिनवाणी के अनुरूप बनाये रखने का काम आचार्य का है और इस गुरुतर कार्य का सम्यक् रूप से निर्वहन कर रहे हैं हमारे आचार्य भगवन्त। ये आत्मसाक्षी और आगमसाक्षी से आचार धर्म का पालन कर रहे हैं, जिससे संघ की आस्था और धारणा को और भी मजबूती मिली है।

गुरु हस्ती के पश्चात् संघ में उतार-चढ़ाव के कई प्रसंग उपस्थित हुए, कितनी ही प्रतिकूलताएँ और समस्याएँ आ खड़ी हुईं, पर हिमालयी संकल्प के धनी, लौहपुरुष गुरु हीरा ने किसी भी परिस्थिति में सिद्धान्त के साथ समझौता नहीं किया। आचरण में शिथिलता उन्हें पसन्द नहीं। कदाचित् संघ में कभी कोई विकृति भी आयी हो तो उसे हटाने के लिये गुरुदेव ने मर्यादाओं का बांध बांधा, अनुशासन की रेखाएँ खींची, आचार धर्म को सर्वोपरि रखा, संघ में जो सुविनीत है उन्हें आगे बढ़ाया, अविनीत प्रकृति को हटाया, हमें गुणग्राही दृष्टि दी, पूर्ण उदार और उदात्त बनाया, कुल मिलाकर कहूँ तो गुरुदेव हीरा ने संघ के लिये वह सब कुछ किया और कर रहे हैं जिसके लिए भगवती सूत्र में प्रभु महावीर ने फरमाया कि अग्लान और निरपेक्ष भाव से संघ की वैयावृत्त्य करने वाला आचार्य तीसरे भव का उल्लंघन नहीं करता।

नेतृत्वकर्ता अगर आलोचना और आदेश ये दोनों कार्य करवा रहा हो तो इसका परिणाम निकलता है तो उसके लिये लोगों के हृदय में भययुक्त आदर पैदा होता है। लेकिन

जो सफल नेतृत्वकर्ता होता है वह आलोचना नहीं करता, कमियाँ नहीं निकालता, वह प्रेरणा देता है, प्रोत्साहन देता है, आत्मीयता देकर आगे बढ़ाता है। केवल आदेश की ही भाषा नहीं बोलता, अपितु धन्यवाद भी देता है। परिणामस्वरूप उसके प्रति लोगों के हृदय में आदरयुक्त भय पैदा होता है। भय-युक्त आदर और आदर युक्त भय दो बातें हैं, लेकिन दोनों में दिन-रात का अन्तर है, पहले में व्यक्ति आदर देना नहीं चाहता, पर भय से, दबाव से आदर देना पड़ता है, लेकिन दूसरे में आदरयुक्त भय होता है अर्थात् उसके हृदय में नेतृत्वकर्ता के प्रति इतना अधिक आदर होता है कि वह प्रतिक्षण इस बात की सावधानी रखता है कि कहीं मेरे किसी अनुचित व्यवहार के द्वारा इन श्रद्धेय पुरुष की आशातना नहीं हो जाये। बंधुओं! हम सभी देख रहे हैं जन-जन के हृदय में गुरु हीरा के प्रति आदर युक्त भय है जो कि इनके सफल नेतृत्व का परिचायक है।

आगम साहित्य में दो प्रकार के नयों का निर्देश किया गया है- निश्चय एवं व्यवहार। आत्मशोधन के लिये निश्चय नय का आलम्बन लिया जाता है। आत्मा को पाना है तो आत्मशोधन जरूरी है, आत्मशोधन की व्यवस्था के लिये संघबद्धता जरूरी है और संघ बद्धता के लिये जरूरी है व्यवहार नय का आलम्बन। गुरुदेव हीरा निश्चय नय और व्यवहार नय दोनों का समन्वय करते हैं। उन्होंने अपने लिये निश्चय नय का आलम्बन लिया तो संघ तथा संघठन के लिये व्यवहार नय का आलम्बन लिया। जिनकल्पी अकेले एकान्त में अपनी साधना कर सकते हैं, पर स्थविरकल्पी की अपनी मर्यादा है। उसे संघ में रहकर साधना करनी होती है। उनके लिये जरूरी है व्यवहार नय का आलम्बन।

संघीय-व्यवस्था चलाने के लिये विधि और निषेध दोनों जरूरी हैं। गुरुदेव हीरा ने दोनों का ही समुचित उपयोग किया है।

गुण अनन्त हैं, पर शब्दों की शक्ति सीमित है। गुरुदेव के चार गुण विशेष रूप से प्रेरणा देते हैं। वे चार गुण हैं- 1. Perfect direction power, 2. Perfect decision power, 3. Perfect discipline power, 4. Perfect devotion power

1. कुशल मार्गदर्शन शक्ति (Perfect direction Power)- दुनिया के मार्गदर्शन में स्वार्थ है, लेकिन गुरुवर हीरा के मार्गदर्शन की यह विशेषता है कि इसमें स्वार्थ नहीं, परमार्थ है। मुझे अच्छी तरह से याद है बीजापुर चातुर्मास में आचार्य भगवन्त स्वयं मुझे प्रश्नव्याकरण सूत्र का पाठ देते और सुनते। इसी बीच एक दिन मैं गुरुदेव को पाठ सुना रही थी, भोपाल से एक गुरुभक्त-परिवार सेवा में उपस्थित हुआ। गुरुदेव से निवेदन किया- आप भोपाल पधारें, हम सपरिवार आपके चरणों में दीक्षित होना चाहते हैं। तब गुरुदेव ने जो उत्तर दिया। मुझे याद है उनकी वाणी में बड़ी मिठास थी, उन्हीं के शब्दों में कहूँ तो-

"लाला, दीक्षा री बात तो घणी दूर है, पैले तूं अठे रै, तू मने देख, मैं थने देखूँ, पछे दीक्षा री सोचां।" गुरुदेव के ये शब्द सुनकर मेरे अन्तर की श्रद्धा बोल उठी-

लोभी गुरु तारे नहीं, तिरे सो तारणहार।
जो तूं तिरणो चाहे तो निर्लोभी गुरु धार।।

2. कुशल निर्णय क्षमता (Perfect decision power)- Decision power का अर्थ होता है, निर्णय शक्ति। दुनियाँ वर्तमान को देखकर निर्णय करती है और जो समझदार होते हैं वे भविष्य को देखकर निर्णय करते हैं। लेकिन गुरुदेव की निर्णय शक्ति की यह विशेषता है कि वे वर्तमान और भविष्य को तो देखते ही हैं, साथ ही साथ परलोक को भी देख कर निर्णय लेते हैं। वर्षभर पूर्व की घटना है, श्रद्धेय श्री अभयमुनिजी म.सा. के स्वास्थ्य को लेकर संघ के वरिष्ठ श्रावकों ने आचार्य भगवन्त से निवेदन किया कि अभी मुनिराज को दीक्षा लिये लम्बा समय नहीं हुआ है, अतः इन्हें गृहस्थी में (असंयम में) भेज दिया जाये। पर आचार्य भगवन्त दूरदर्शी हैं, गम्भीरवृत्ति के धारक हैं। हालांकि समस्या जटिल थी, फिर भी गुरुदेव ने पूर्ण सूझ-बूझ के साथ समयोचित निर्णय लिया। उन्होंने वर्तमान को देखा, अगर इन्हें असंयम में भेज दिया गया तो लोगों की जिनशासन के प्रति श्रद्धा समाप्त हो जायेगी। भविष्य को देखा कि भविष्य में आने वाले मुमुक्षुओं के मानस पर इसका गलत प्रभाव होगा। साथ ही मुनिराज के परलोक को दृष्टिपथ में रखते हुए योग्य निर्णय लिया। यह है आचार्य भगवन्त का Perfect decision power.

3. कुशल अनुशासन शक्ति (Perfect discipline power)- दुनिया अनुशासन तो करना चाहती है, लेकिन अनुशासित रहना नहीं चाहती। आचार्य भगवन्त ने 'निज पर शासन, फिर अनुशासन' को जीवन का सूत्र बनाया। उनके Discipline power की यह खासियत है कि वे आत्मानुशासन करते हुए आत्मीयतापूर्वक शासन करते हैं। जहाँ आन्तरिक अनुशासन से उन्होंने भाग्य को संवारा वहीं बाह्य अनुशासन के द्वारा उन्होंने संघ के भाग्य को चमकाया। यह है गुरुदेव की सुव्यवस्थित निर्णय शक्ति।

4. परिपूर्ण समर्पण शक्ति (Perfect devotion power)- Devotion अर्थात् समर्पण। हम सर्व अर्पण तो करते हैं, लेकिन स्व-अर्पण नहीं। सर्व के साथ स्व का अर्पण इसी का नाम है समर्पण। यह मन, जो मनमानी करता है, अपनी ही चलाता है, उस मन को गुरु चरणों में रखकर आपने अमन बना दिया। अपनी व्यक्तिगत कोई इच्छा नहीं। गुरु के चरणों में इच्छा का त्याग किया और आज्ञा को स्वीकार किया। "जिधर होगा गुरु का इशारा उधर बढ़ेगा कदम हमारा" इसी सूत्र को आपने जीवन मंत्र बना दिया और बता दिया इस दुनिया को कि-

मैं गुरु में गुरु है मुझमें, गुरु शिष्य में भेद कहाँ।
भेद वहीं पर हो सकता है, नहीं समर्पण भाव जहाँ।।

गुरु के प्रति विनय तो हर शिष्य कर लेता है, लेकिन अपने गुरु भाई जो लगभग बराबरी के हैं उन उपाध्याय भगवन्त के प्रति भी गुरुदेव का विनय-समर्पण मैंने स्वयं ने अपनी आँखों से देखा है। मेरे संसारपक्षीय गाँव में जब आचार्य भगवन्त और उपाध्याय भगवन्त का मिलन हुआ वह दृश्य आज भी याद है। जैसे केशी-गौतम का मिलन हुआ हो। आचार्य भगवन्त ने सभक्ति-सविनय-सश्रद्धा उपाध्याय भगवन्त को दीक्षा में ज्येष्ठ होने से वंदन किया, तो उपाध्याय भगवन्त ने भी आचार्य भगवन्त के पद का सम्मान किया। तब मेरी श्रद्धा अंतर से बोल उठी-

उभओ निसण्णा सोहंति, चंद-सूर-समप्पभा.....।।

ये दोनों महापुरुष चन्द्र और सूर्य की भांति संघ में चमक रहे हैं। एक ओर आचार्य भगवन्त की तेजस्विता दूसरी ओर उपाध्याय प्रवर की शीतलता। इन दोनों महापुरुषों की छत्र-छाया में संघ विकास कर रहा है। इन दोनों ने अब तक हमें बहुत कुछ दिया है। अब आवश्यकता है उसे जीने की। इन्होंने बहुत कुछ फरमाया है, अब आवश्यकता है उन शब्दों के अर्थों को तलाशने की। इन्होंने संघ के लिये बहुत कुछ किया है, अब आवश्यकता है उस कार्य को आगे बढ़ाने की। गुरुदेव फरमाते हैं- संघ हमारे लिये विश्राम स्थल है तो हम संघ के लिये विश्वास स्थल बनें। तीर्थ की सेवा स्वयं तीर्थ बनकर करें। तभी यह चादर महोत्सव मनाना हमारे लिये सार्थक होगा।

संसार एवं मोक्ष

आचार्य श्री रत्नसेनसूरीश्वरजी

जहाँ सुख की सामग्रियाँ हैं,
परन्तु सुख का नाम नहीं है
उसका नाम है संसार!
और जहाँ सुख की सामग्री
बिल्कुल नहीं है,
परन्तु
सुख का पार नहीं है,
उसका नाम है मोक्ष।

शोधालेख

लेश्या सिद्धान्त : एक विवेचन

डॉ. जवाहरलाल नाहटा

जैन आगमों में लेश्या की विभिन्न परिभाषाएँ मिलती हैं। अभयदेवसूरि ने लेश्या का शाब्दिक अर्थ संश्लेषण किया है। तदनुसार जीव, कर्म और पुद्गलों के योग, संश्लेषण और उनके प्रभाव को लेश्या कहा जाता है। गोम्मटसार के जीव काण्ड में कहा गया है कि जीव जिसके द्वारा अपने को पुण्य-पाप से लिप्त करता है- वह लेश्या है। नन्दी चूर्णि में लेश्या की व्याख्या रश्मि, आणविक आभा, कांति अथवा छाया के रूप में की गई है। उपलब्ध सामग्री के अनुसार कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि लेश्या जीव को प्रभावित करने वाला एक पौद्गलिक आवरण है। आत्मा की शुद्धि और अशुद्धि के साथ लेश्या का सम्बन्ध है।

पुद्गल की भाँति इसके भी चार मुख्य गुण हैं, यथा- रंग, रस, गंध और स्पर्श। इन गुणों में रंग अधिक महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि छह प्रकार की लेश्याओं का वर्गीकरण और नामकरण रंगों के आधार पर किया गया है। उत्तराध्ययन सूत्र के चौतीसवें अध्ययन में इसको 11 द्वारों में [1] विस्तार से अनेक उदाहरणों के साथ समझाया गया है। प्रज्ञापना के पद 17 में जीवों की गति में लेश्याओं के प्रभाव का विशद वर्णन मिलता है। तत्त्वार्थवार्तिक के चतुर्थ अध्याय के सूत्र 22 में निर्देश, वर्ण, परिणाम, संक्रम, कर्म-लक्षण, गति, स्वामित्व, साधन, संख्या, क्षेत्र, स्पर्शन, काल, अन्तर, भाव और अल्प-बहुत्व इन सोलह अनुयोगों के साथ लेश्याओं का वर्णन आया है।[2] 'उत्तराध्ययन' के आधार पर छह लेश्याओं का संक्षिप्त वर्णन इस प्रकार से है-

1. **कृष्ण लेश्या**- इसका वर्ण काले मेघ, महिष शृंग, काक या अरीठे के फल, खंजन, अंजन और नयन तारा के समान होता है। इसका रस कड़वे तूम्बे, नीम, कटुक-रोहिणी (नीम गिलोय) से भी अनन्त गुना कड़वा होता है।
2. **नील लेश्या**- इसका वर्ण नील अशोक, चाष पक्षी के परों एवं नीलम के समान होता है और रस-सूंठ, पिप्पल, कालीमिर्च से भी अनन्त गुणा तीखा होता है।
3. **कापोत लेश्या**- इसका वर्ण अलसी के पुष्प एवं कबूतर की ग्रीवा के समान तथा रस कच्चे आम और कपित्थ के रस से अनन्त गुणा कसैला होता है।
4. **तेजो लेश्या**- इसका वर्ण हिंगुल, गेरु, नवोदित सूर्य, तोते की चोंच, दीपक की लौ

के समान तथा रस पके हुए आम और कपित्थ के रस से भी अनन्त गुणा खट्टा-मीठा होता है।

5. **पद्म लेश्या**- इसका वर्ण हरिताल, हल्दी, सन और असन पुष्प के समान होता है तथा रस मधु से अनन्त गुणा मीठा होता है।
6. **शुक्ल लेश्या**- इसका वर्ण शंख, कुंद पुष्प, दुग्ध, रजत एवं मुक्ता के समान तथा रस खजूर, दाख, शक्कर से भी अनन्त गुना मीठा होता है।

इन छह लेश्याओं में प्रथम तीन को अप्रशस्त अर्थात् अशुभ-लेश्या तथा अंतिम तीन को प्रशस्त अर्थात् शुभ-लेश्या कहा गया है। अप्रशस्त लेश्याओं की गंध मरे हुए पशुओं की गंध से भी अनन्त गुना दुर्गन्धमय होती है और प्रशस्त लेश्याओं की गंध सुगन्धित पुष्पों तथा चन्दन जैसे सुगन्धित पदार्थों की गंध से भी अनन्त गुणा सुगन्धमय होती है। इसी तरह स्पर्श गुण के अन्तर्गत करवत, गाय की जीभ और शाक वृक्ष के पत्तों से अनन्त गुणा कर्कश स्पर्श अप्रशस्त लेश्याओं का होता है और नवनीत, शिरीष पुष्प के मृदु स्पर्श से अनन्त गुणा मृदु स्पर्श प्रशस्त लेश्याओं का होता है। शास्त्रकार ने तीन-तीन के गुणकों में लेश्याओं के कुल 243 परिणाम बताये हैं। कृष्ण और नील लेश्या के परिणाम जघन्य, कापोत और तेजो लेश्या के परिणाम मध्यम और पद्म एवं शुक्ल लेश्या के परिणाम उत्कृष्ट श्रेणी में आते हैं। जीव अपने कर्मों के परिणाम स्वरूप सम्बन्धित लेश्याओं में परिणत हो जाता है। अर्थात् जीव पर उन कर्म लेश्याओं का पौद्गलिक आवरण चढ़ जाता है।

जो मनुष्य पाँच आस्रवों में प्रवृत्त है, पाप-पुण्य की चिन्ता न करते हुए विवेक रहित है, जिसका अपनी इन्द्रियों पर नियंत्रण नहीं है, दया रहित होकर हिंसक कार्यों में लिप्त रहता है- वह कृष्ण लेश्या के परिणाम वाला होता है। जो मनुष्य ईर्ष्यालु, बुराई को ग्रहण करने वाला, तपस्या न करने वाला, अज्ञानी, मायावी और निर्लज्ज है तथा मूर्खतापूर्ण रसों में सुख का लालच करता है, वह नील लेश्या के परिणाम वाला होता है। जो मन, वचन और आचरण से कपटी है, अपने दोष छिपाने वाला है, धूर्त तथा चोर वृत्ति से ग्रसित है, वह कापोत लेश्या के परिणाम वाला होता है। जो मनुष्य नम्र, माया रहित, विनयी तथा समाधि, स्वाध्याय और धर्म में दृढ़ रहने वाला है, वह तेजो लेश्या के परिणाम वाला होता है। जिस मनुष्य के क्रोध-मान-माया-लोभ अति अल्प हैं, जो अपनी चित्तवृत्तियों का दमन करते हुए शान्त चित्त वाला है तथा अल्पभाषी जितेन्द्रिय है- वह पद्म लेश्या के परिणाम वाला होता है। जो मनुष्य आर्त्त और रौद्र ध्यान को त्याग कर धर्म और शुक्ल ध्यान में प्रशान्त चित्त रहता है, वह वीतराग जितेन्द्रिय शुक्ल लेश्यावाला होता है।

उपर्युक्त वर्णन में लेश्याओं के लक्षण और परिणामों को स्पष्ट किया गया है, जो

लेश्या अध्ययन का अधिकृत विषय है। उत्तराध्ययन सूत्र, अध्ययन 34 के अनुसार लेश्याएँ पौद्गलिक द्रव्य हैं, जो वर्ण, रस, गंध, स्पर्श, परिणाम, लक्षण, स्थान, स्थिति, गति और आयुष्य से युक्त होती हैं। लेश्याओं का सम्बन्ध मुख्यतः जीव के कर्मों से है- जो जघन्य, मध्यम और उत्कृष्ट श्रेणी के परिणाम उत्पन्न करते हैं। केवल कर्म ही नहीं, जीव और द्रव्य की पौद्गलिक संरचना भी लेश्या से प्रभावित और निर्धारित होती है। इस दृष्टि से लेश्या के दो वर्ग होते हैं- द्रव्य लेश्या और भाव लेश्या। भौतिक वस्तु के रूप, रंग, प्रकृति, गुण और प्रभाव का अध्ययन द्रव्य लेश्या के अन्तर्गत होता है तथा जीवों के मन, वचन और आचरण का विश्लेषण भाव लेश्या के अन्तर्गत होता है। लेश्या अध्ययन से यह भी निर्दिष्ट होता है कि जीव के कर्म और लेश्या का प्रभाव परस्पर है, अर्थात् लेश्या से कर्म प्रभावित होते हैं और कर्मों से लेश्या प्रभावित होती है। इससे स्पष्ट होता है कि लेश्या कर्मों का कारण भी है और कार्य भी। संक्षेप में कहा जा सकता है कि लेश्या वह सिद्धान्त है जिसके द्वारा जीव और पुद्गल के पारस्परिक प्रभाव का अध्ययन किया जा सकता है।

लेश्या और त्रिगुणात्मक प्रकृति

लेश्या सिद्धान्त को सांख्य दर्शन की त्रिगुणात्मक प्रकृति के साथ अधिक स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है। महर्षि कपिल का सांख्य दर्शन भी एक प्राचीन भारतीय दर्शन है। उत्तराध्ययन सूत्र और सांख्य दर्शन दोनों ईसा पूर्व 5 वीं शताब्दी से ईसा पूर्व प्रथम शताब्दी तक व्यवस्थित हो गये थे। सांख्य दर्शन के सत्त्व-रज-तम, ये तीन गुण और जैन दर्शन की छह लेश्याएँ तुलनात्मक दृष्टि से बहुत साम्य रखती हैं। जैन और सांख्य दोनों दर्शन द्वैतवादी हैं। जीव और अजीव की तरह सांख्य दर्शन में भी दो मूल अनादि तत्व- पुरुष और प्रकृति माने गये हैं। इन्हीं के संयोग से इस सृष्टि का विकास होता है। इस सृष्टि का सारा विस्तार त्रिगुणात्मक प्रकृति का विस्तार है। मूल प्रकृति में ये तीनों गुण साम्यावस्था में रहते हैं। पुरुष के संयोग से इन गुणों में विक्षोभ उत्पन्न हो जाता है और कार्य-कारण शृंखला के साथ प्रकृति का विकास प्रारम्भ हो जाता है। जैन दर्शन भी मानता है कि लोक में दो द्रव्य हैं- जीव और अजीव। दोनों ही अनादि और शाश्वत हैं। इस सृष्टि में जो कुछ भी है वह जीव और पुद्गलों का संयोग है। इन दोनों के संश्लेषण और संघात से सारे प्राणी और भूत पदार्थों की रचना होती है। यहाँ सांख्य से कुछ पार्थक्य है। सांख्य के अनुसार सृष्टि में पुरुष की भूमिका निष्क्रिय और उदासीन है। वह न किसी का कारण है और न कार्य। वह एक अविकारी कूटस्थ तत्त्व है। सारा विकार, विस्तार, परिवर्तन प्रकृति का होता है।

यहाँ विवेचनीय विषय यह है कि इस सृष्टि की जीव राशि और पौद्गलिक पदार्थों में इतनी विविधता क्यों है? शहद मीठा, नीम्बू खट्टा और नीम के फल कड़वे क्यों होते हैं?

बगीचे के फूलों में रंगों की विविधता क्यों और कहाँ से आती है? हाथी शान्त, बाघ हिंसक और शूकर आलसी क्यों होते हैं? एक ही माँ-बाप के तीन पुत्रों में एक बुद्धिमान, विवेकशील और दयालु, दूसरा कर्मठ, लोभी और विलासी तथा तीसरा मूर्ख और आलसी क्यों होता है? जैन दर्शन के अनुसार इन विविधताओं का कारण द्रव्य लेश्याएँ और भाव लेश्याएँ हैं, किन्तु सांख्य दर्शन की मान्यता यह है कि यह विविधता त्रिगुणात्मक प्रकृति के कारण है। सत्त्व, रज और तम ये तीन प्रकृति के गुण हैं। इन्हीं गुणों के संयुक्त प्रभाव से भूतों की प्रकृति, स्वभाव, कर्म और फल निर्धारित होते हैं।

जिस तरह लेश्याओं का अपना रंग, स्वाद, गंध, स्पर्श, गुण और प्रभाव होता है, उसी तरह सत्त्व, रज और तम इन तीनों गुणों का अपना रंग, स्वाद और प्रभाव होता है। सत्त्व को शुक्ल वर्ण का, रज को रक्त वर्ण का और तम को कृष्ण वर्ण का माना गया है। इसलिए रंग अपने से सम्बन्धित गुण के अनुसार मनुष्य के मन को प्रभावित करते हैं। इस सम्बन्ध में कवि बिहारी लाल का एक सार्थक दोहा उल्लेखनीय है-

अमिय हलाहल मद भरे, श्वेत श्याम रतनार।
जियत मरत झुकी-झुकी परत जेहिं चितवत एक बार।।

अमृत, विष और मदिरा क्रमशः श्वेत, काले और लाल रंग से युक्त हैं। इनमें से जिस ओर, जो भी एक बार दृष्टिपात करले- वह तदनुसार जी जाता है, मर जाता है, लड़खड़ाता हुआ वृद्धावस्था को प्राप्त हो जाता है।

प्रकृति के तीनों गुणों का यही प्रभाव है। गुण प्रत्यक्ष नहीं होते। सांसारिक विषयों की प्रकृति, स्वभाव और उनसे उत्पन्न फल को देखकर इनका अनुमान किया जाता है। सांख्यदर्शन के अनुसार जिस समय मनुष्य में ज्ञान-शक्ति का प्रादुर्भाव होता है, उस समय अनुमान करना चाहिये कि यह सत्त्व गुण का प्रभाव है। रजो गुण चंचल होता है, जो मनुष्य की क्रियाशीलता में व्यक्त होता है और अहंकार उत्पन्न करता है। इसके प्रभाव से मनुष्य भोग के लिए विषयों पर अधिकार करना चाहता है। जब मन में कुछ करने का संकल्प, आसक्ति, कामना और लोभ का प्राबल्य हो, तो हमें रजोगुण का अनुमान करना चाहिये। तमोगुण सत्त्वगुण और रजोगुण के विपरीत है। तमोगुण का प्रभाव शरीर की जड़ता और निष्क्रिय मन के रूप में व्यक्त होता है। सत्त्व गुण ज्ञान को प्रकाशित करता है तो तमोगुण अज्ञान के अन्धकार से ज्ञान को आवृत्त करता है। जब शरीर में काम करने की अनिच्छा, संकल्पहीनता, आलस्य, प्रमाद, निद्रा जैसे लक्षण दिखाई पड़ें तो हमें तमोगुण की वृद्धि का अनुमान करना चाहिये। इसी तरह हमारे मन के सारे भाव और शरीर की सारी क्रियाएँ सत्त्व, रज और तमोगुण की संयुक्त राशि से नियंत्रित होती है। मनुष्य सहित सारी जीवात्माएँ

त्रिगुणात्मक प्रकृति के बन्धन में बंधी हुई हैं।

सांख्यदर्शन के अनुसार भौतिक संसार के सारे पदार्थों की उत्पत्ति सत्त्व, रज और तमो गुण के संयोग से होती है। सूक्ष्म बुद्धि से लेकर स्थूल पत्थर में भी ये तीनों गुण पाये जाते हैं। कुछ पदार्थ सात्त्विक होते हैं, कुछ राजसिक और कुछ तामसिक। यह निर्णय उनके गुण और प्रभाव के आधार पर किया जा सकता है। जिस वस्तु में जो गुण प्रबल होता है, वह उसकी श्रेणी में आ जाती है। शेष दो गुण उस वस्तु में गौण रूप से स्थित होते हैं। अपने शुद्ध रूप में कोई गुण किसी कार्य का कारण नहीं बन सकता, न कोई प्रभाव उत्पन्न कर सकता है। सृष्टि के निर्माण और विकास में तीनों गुणों का संयोग आवश्यक है। सात्त्विक वस्तुएँ लघु, हल्की, स्निग्ध, मधुर, सुगन्धित, प्रकाशयुक्त और ऊर्ध्वगामी होती हैं, जैसे- फूल, मक्खन, मधु, दीपशिखा इत्यादि। ऐसी वस्तुओं के सम्पर्क से हर्ष, आनन्द, आशा, संतोष और तृप्ति का बोध होता है। चंचल, गतिशील, तीक्ष्ण और नशीले पदार्थ रजोगुण युक्त होते हैं। इन पदार्थों का सेवन अहंकार, आसक्ति, लालसा, असन्तुष्टि, दुःख, रोग और वृद्धावस्था उत्पन्न करता है। काले रंग के भारी और अवरोध उत्पन्न करने वाले पदार्थ तमोगुणी होते हैं। तामसी पदार्थ हमें अज्ञान, अंधकार, निद्रा, आलस्य, अवसाद, निराशा और उदासीनता की ओर ले जाते हैं।

खाद्य पदार्थों का वर्गीकरण भी इन गुणों के आधार पर किया जाता है। गुणों का प्रत्यक्ष प्रभाव भोजन की विविध सामग्रियों के सेवन से लक्षित किया जा सकता है। सात्त्विक भोजन रसमय, स्निग्ध, स्वास्थ्यप्रद तथा हृदय को प्रिय होता है। ऐसा भोजन करने से स्वास्थ्य, सुख तथा तृप्ति प्राप्त होती है। कड़वे, खट्टे, नमकीन, अति गरम, चटपटे, रूखे और जलन उत्पन्न करने वाली आहार सामग्री रजोगुणी होती है। यह भोजन दुःख, शोक और रोग प्रदान करने वाला होता है। रस रहित, दुर्गन्ध युक्त, बासी, उच्छिष्ट और अपवित्र खाद्य सामग्री तामसी भोजन कहलाता है। ऐसे भोजन से शरीर में आलस्य, निद्रा और अकर्मण्यता की प्रवृत्ति होती है।

'आहारस्त्वपि सर्वस्य त्रिविधो भवति प्रियः,
आयुःसत्त्वबलारोग्य-सुख-प्रीति-विवर्धना,
रस्याः स्निग्धाः स्थिरा हृद्या आहाराः सात्विकाः प्रिया।' - गीता, 17.7-8

इस तुलनात्मक अध्ययन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि कृष्ण, शुक्ल इत्यादि छह लेश्याएँ और सत्त्व-रज-तम- ये तीन गुण तात्त्विक दृष्टि से एक ही हैं। पुरुष और प्रकृति अथवा जीव और पुद्गलों के संयोग-संश्लेषण और इस संश्लेषण के विविध पर्यायों का वर्गीकरण करने हेतु लेश्या सिद्धान्त अस्तित्व में आया और आत्मा की शुद्धि

अथवा अशुद्धि के कारण-कार्य के रूप में विकसित हुआ।

गोशालक और महावीर : उष्ण और शीतल तेजोलेश्या

लेश्या का एक अन्य विशिष्ट रूप हमें भगवान महावीर और गोशालक के कथा प्रसंगों में प्राप्त होता है। जैन आगमों में मंखलि गोशालक को एक योग भ्रष्ट साधक के रूप में प्रस्तुत किया गया है। यह पहले भगवान का शिष्य था, किन्तु तुच्छ एवं मलिन उद्देश्यों के कारण इसने अपना अलग पंथ बना लिया और महावीर का विरोध करने लगा। वह छह वर्ष तक भगवान के साथ रहा। एक बार उग्र बाल तपस्वी वैश्यायन के साथ दुर्व्यवहार करने और उसकी तपस्या में विघ्न डालने के कारण तपस्वी ने गोशालक को भस्म करने के लिए उष्ण तेजोलेश्या का प्रहार किया, किन्तु शिष्य के प्रति करुणा के कारण भगवान ने अपनी शीतल तेजोलेश्या से उस उष्ण तेजोलेश्या को नष्ट कर दिया। इससे गोशालक बच गया। गोशालक ने इसे चमत्कारिक शक्ति जानकर भगवान से आग्रह करके तेजोलेश्या प्राप्त करने की विधि जान ली और छह महीनों में इसको सिद्ध कर लिया। तेजोलेश्या तथा कुछ अन्य विद्याओं को जानकर गोशालक और अधिक अहंकारी हो गया। वह अपने आपको तीर्थंकर और सर्वज्ञ बताने लगा। भगवान महावीर से शत्रुता के कारण उसने भगवान के अनुयायी मुनियों को धमकाना शुरू कर दिया और नहीं मानने पर तेजोलेश्या का प्रयोग करने लगा। एक बार उसने भगवान पर भी तेजोलेश्या का प्रबल प्रहार किया। किन्तु इसका प्रभाव उलटा हुआ। वह लेश्या भगवान की परिक्रमा करके गोशालक को ही जलाने लगी। कथा में यह भी बताया गया है कि तेजोलेश्या तीर्थंकरों को जला नहीं सकती, किन्तु कष्ट अवश्य पहुँचा सकती है। इस लेश्या के विकिरण प्रभाव के कारण भगवान को मलद्वार से रक्तस्राव की पीड़ा हो गई।

यदि यह कथा केवल कथा नहीं है तो इसमें लेश्या से सम्बन्धित कुछ महत्त्वपूर्ण तात्त्विक बातें छिपी हुई हैं। क्या है गोशालक की उष्ण तेजोलेश्या और भगवान महावीर की शीतल तेजोलेश्या? परमाणु प्रक्षेपास्त्रों के युग में यदि हमारा चिन्तन इस तरफ आकर्षित हो तो यह कोई अस्वाभाविक बात नहीं है।

नन्दी चूर्णि और बृहद्वृति (पत्र 650) के अनुसार लेश्या आँखों को चकाचौंध करने वाली एक तीव्र प्रकाश रश्मि (उष्ण तेजोलेश्या) अथवा स्निग्ध दीप्त रूप छाया (शीतल तेजोलेश्या) है-*''लेश्या अतीव चक्षुराक्षेपिका स्निग्धदीप्तरूपा छाया''*।

भौतिक विज्ञान के अनुसार यदि इसका विवेचन करें तो, गोशालक द्वारा तेजोलेश्या का प्रक्षेपण दीर्घ गति की विद्युत् चुम्बकीय तरंगों का विकिरण है। जिन तत्त्वों के परमाणु नाभिक स्वतः अल्फा, बीटा, गामा किरणें उत्सर्जित करते हैं, उनसे रेडियो सक्रिय विकिरण

होता है। इनमें गामा किरणें बहुत खतरनाक होती हैं। इनकी वेधन क्षमता अत्यधिक होती है, जो लोहे को भी काट सकती हैं, गला सकती हैं। इसी तरह एक्स किरणें भी होती हैं जिनका रेडियोलोजी के तहत नियंत्रित उपयोग चिकित्सा एवं औद्योगिक क्षेत्रों में होता है। जिस तरह परमाणुओं को खण्डित करके विद्युत् चुम्बकीय तरंगों का प्रयोग परमाणु प्रक्षेपास्त्रों जैसे विनाशकारी कार्यों में और ऊर्जा उत्पादन जैसे कल्याणकारी कार्यों में किया जाता है उसी तरह तेजोलेश्या का प्रयोग गोशालक और भगवान महावीर ने किया। इस दृष्टि से तेजोलेश्या उच्च दीर्घ गति की प्रकाश तरंगों का शक्तिपात है।

लेश्याओं का सम्बन्ध मुख्यतः रंगों से है। भौतिक विज्ञान के अनुसार रंग, प्रकाश और ऊर्जा तीनों परस्पर सम्बन्धित द्रव्य हैं। रंग प्रकाश का ही रूप है और प्रकाश एक प्रकार की ऊष्मा-ऊर्जा है जो विद्युत चुम्बकीय तरंगों में संचरण करती है। प्रत्येक पदार्थ की एक विशिष्ट उष्मा होती है और उस उष्मा के तापमान के अनुसार उसका रंग होता है। दूरस्थ तारों का तापमान उनके रंगों से ज्ञात किया जाता है। इसी तरह पृथ्वी के गर्भ में स्थित तत्त्वों की खोज एवं शरीर के आन्तरिक अवयवों की बहुत सी जानकारी यंत्रों द्वारा उनके विशिष्ट ताप और रंग के आधार पर की जाती है। वस्तु के तापमान में परिवर्तन के साथ-साथ उनके रंग विकिरण में भी परिवर्तन हो जाता है। प्रकाश, रंग और ऊर्जा का जो पारस्परिक सम्बन्ध भौतिक विज्ञान ने सिद्ध किया है, उनसे मिलती-जुलती बहुत सी जानकारी लेश्या सिद्धान्त में लक्षित की जा सकती है। प्रकाश की विद्युत् चुम्बकीय तरंगें अपनी शक्ति, गति और तरंग दैर्घ्य (वेव लेन्थ) के अनुसार अपना प्रभाव उत्पन्न करती हैं। प्रकाश की शक्तिशाली लेजर तरंगें वस्तुओं को भाप बनाकर उड़ा देती हैं, उसी तरह गोशालक तेजोलेश्या का प्रयोग मुनियों को भस्मीभूत करने के लिए करता है। इसके विपरीत महावीर की करुणामय शीतल तेजोलेश्या सूर्य के प्रकाश से मिलने वाले स्निग्ध ताप की तरह जीवन का परिपोषण करती है और रक्षा करती है। जैन आगमों में लेश्याओं का वर्ण-वर्गीकरण और प्रभाव जिस तरह वर्णित हुआ है वह द्रव्य की संरचना में प्रकाश-रंग-ताप और ऊर्जा के भौतिक सिद्धान्तों का सूक्ष्म निदर्शन है।

प्रज्ञापनासूत्र के वृत्तिकार ने लेश्याओं को योग परिणाम कहा है- 'योगपरिणामो लेश्या' यह योग परिणाम कर्मों पर निर्भर करता है। कर्म यदि अशुभ हो तो उनका योग परिणाम जघन्य, निम्नगामी ही होगा और शुभ कर्मों का योग परिणाम प्रशस्त और ऊर्ध्वगामी होगा। भगवान महावीर और गोशालक से सम्बन्धित तेजोलेश्या के कथा प्रसंग की समीक्षा इस दृष्टि से भी की जा सकती है। पातंजल योग दर्शन में बताया गया है कि योग साधना के समय योगी को विविध प्रकार की सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं। योग दर्शन के विभूति पाद में

अणिमा आदि आठ सिद्धियों का वर्णन मिलता है। इनमें 'ईशित्व' नाम की एक सिद्धि है, जिसके प्राप्त होने पर योगी भौतिक पदार्थों को नाना रूपों में उत्पन्न करने और उनका इच्छानुसार संचालन करने की सामर्थ्य पा लेता है (योग दर्शन : विभूतिपाद-45) किन्तु समाधि की सिद्धि में ये सिद्धियाँ विघ्न स्वरूप हैं (योग दर्शन : 3/37) सम्यक् दर्शन, ज्ञान और चरित्र के अभाव में ये सिद्धियाँ विनाशकारी होती हैं। गोशालक के साथ भी ऐसा ही हुआ। अपने अहंकार और दुश्चरित्र के कारण उसने तेजोलेश्या की शक्ति का प्रयोग निकृष्ट उद्देश्यों की पूर्ति के लिए किया। इस योग के जघन्य परिणाम स्वरूप वह अपनी साधना से च्युत हो गया और अपने पतन का कारण बना। गोशालक की कथा द्वारा शास्त्रकार ने यह स्पष्ट किया है कि शक्ति का असम्यक् उपयोग विनाशकारी और सम्यक् उपयोग कल्याणकारी होता है।

संदर्भ:-

1. नामाइं वण्ण-रस-गंध-फास-परिणाम-लक्खणं।
   ठाणं ठिइं गइं चाउं, लेसाणं तु सुणेह मे।- उत्तराध्ययनसूत्र, 34.1
2. निर्देश वर्णपरिणामसंक्रमकर्मलक्षणगतिस्वामित्वसाधनसंख्याक्षेत्रस्पर्शनकालान्तर भावाल्प-बहुत्वैश्च साध्या लेश्याः।-तत्त्वार्थवार्तिक, 4,22.10

-एसोशिएट प्रोफेसर (से.नि.), आरण्यक, गली नं.2, बरपेटा रोड़-781315 (असम)

जीवन-बोध क्षणिकाएँ

श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा.

भव दुःख से उबार

संसार का सुख कांटे
की तरह चुभेगा,
तब ही इस भव
दुःख से उबरेगा।

देहातीत

हे आत्मसाधक!
हो जा देहातीत
फिर नहीं होगा तन की
बीमारी से भयभीत।

साधना में दम

जो समझते हैं स्वयं को
किसी से अधिक या कम,
उनकी साधना में नहीं है
अभी तक दम।
(णो हीणे णो अइरिते- आचारांग)

संसार रिक्त

चित्त में जब तक भरा है वित्त,
तब तक नहीं होगा
संसार रिक्त (परीत)।

-संकलित

English-Section

Vegetarianism : A Personal Quest

Sh. Shyam K. Saksena

From childhood, I have been a vegetarian by choice. A lone vegetarian in a non-vegetarian clan! However, I cannot take any high moral ground, because I am not sure, whether by just being a vegetarian, I am doing justice to my own personal philosophy of 'Ahimsa'. In Hinduism, Buddhism and Jainism Ahimsa is accepted as a very desirable way of life, though the definition and scope of Ahimsa in the three religions may vary. To generalise, for me Vegetarianism is a subset of Ahimsa. It embodies the very noble concept of 'Reverence for Life' - not just reverence for human life, but for all denizens of the Animal and Vegetable Kingdoms, too. And not the least, to eschew violence against Mother Earth (Mineral Kingdom), which is unfortunately regarded by most as 'inanimate'! Our wise ancestors so pithily encapsulated the concept in just two words - 'Vasudhaiva Kutumbakam'. We cannot hurt anyone, without hurting ourselves. Only, the connection may not be so obvious. Existence is like an air mattress. We press it here and another bump comes up somewhere else! The environmentalists and chaos theorists call it the 'butterfly effect'. The economists and sociologists could call it the 'Law of Unintended Consequences'. This brings us to the question of our food. Vegetables and fruits are also parts of plant life, and we revere plant life! So what do we do? I posed this question to great Jain savant, Chitrabhanuji. To the extent I can remember, he explained thus:

In the hierarchy of needs physical survival mostly takes precedence over all other needs. Food is essential for survival and it has to come from lower forms of life, but it does involve cruelty, as they also have senses, though perhaps to a lesser degree. Our aim should be to minimise the consumption of all life forms, so as to minimise the

totality of our cruelty. Their survival on planet earth is equally vital for they are very much a part of balance of the environment that supports us. He gave me to study a 5th century sacred Jain text 'Tattvartha Sutra'. I was amazed in what detail, the subject has been delineated. The sensitivity of life forms has been categorised from those with fewest senses (one) to those with most senses (five) thus:

One sense (touch) - plants

Two senses (touch, taste) - worms, leeches, snails etc

Three senses (touch, taste, smell)- ants, fleas, lice, insects, etc.

Four senses (touch, taste, smell, and sight)- wasps, flies, gnats, mosquitoes, butterflies, etc.

Five senses (touch, taste, smell, sight, hearing)- fish, birds, quadrupeds, humans, etc.

I do not know if botanists and zoologist of today would agree with the above categorisation, but this could be the logic for preferring vegetarianism over other choices. 'Killing' plants is an unavoidable evil, as they have only one sense and possibly suffer less. Whereas animals and humans have five senses and hence suffer more. To us humans, cannibalism is most abhorrent, killing animals less so and 'killing' plants the least.

Another aspect over which I have agonised is how to expect an Eskimo to be a vegetarian. Poor chaps, they have only fish and seals to sustain them. Then we have the Laplanders of Finland. Their entire life is dictated by their reindeer herds. They are necessarily nomads, for they have to follow their herd with the seasons. They live on reindeer milk, reindeer meat, reindeer hide and fur for clothing and tents. Their tea is made from reindeer milk and reindeer meat. Also reindeer bones for tools and beads. Reindeers pull their sledges, too. No wonder, they decorate and worship and ask for Forgiveness before they kill the hapless beast for meat. Such examples abound around the globe.

Over millennia, people of the earth have fashioned their ways of

survival, eating habits, belief systems and religions depending on the harshness or generosity of their geography. We Indians are blessed, that our ancestors were nurtured by the rich lush and fertile Indo-Gangetic plains and other riverine systems. Thanks to abundance of vegetation, we did not necessarily have to kill animals for survival. A culture of Vegetarianism sprung as a general way of life, such as not found in any other part of the world. We are bound to be grateful, hospitable, tolerant, complacent and indolent. Very importantly, we had Leisure to speculate on the meaning of life, cosmos, etc. Thus the Vedas, Upanishads to name a few.

I can imagine that cultures which sprang up in deserts, tundra and the arctic, were nurtured in a hostile environment and shortages of food and water. This meant hardships, toils, uncertainty about tomorrow. Deprivation often leads to hostility and even suspicion towards outsiders. Their beliefs and lifestyles are bound to be so different from ours.

It is difficult for me to make sense of these numerous variants of mankind's heritage and how much we can be at odds with each other, because of this. The bottom line for me is Gandhiji's admonishment to lead a life simple. Minimum desire and minimum consumption in the spirit of Ahimsa, will lead to minimum violence against humans, the animal and vegetable kingdoms and Mother Earth - something so vital for the survival of the human species. On a lighter note.

आवश्यक सूचना

सभी जिनवाणी एवं साहित्य सदस्यों को सूचित किया जाता है कि आप अपनी जिनवाणी/साहित्य की सदस्यता को प्रमाणित करवाने हेतु अपनी सदस्यता संख्या, नाम, पता, पिनकोड, फोन नं एवं ईमेल सहित 31 दिसम्बर 2015 तक सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल कार्यालय को ईमेल (sgpmandal@yahoo.in, jinvani@yahoo.co.in) से, एसएमएस (9782943720) से, व्हाटस् अप (9782943720) से अथवा पत्र द्वारा सूचित करावें, ताकि सदस्यता विवरण को दुरूस्त किया जा सके।

-मंत्री, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर-302003 (राज.)

प्रासंगिक

स्थानकवासी परम्परा के मूलनायक : लोकाशाह

डॉ. दिलीप धींग

1. **परिवार :-** **माता :** सुश्राविका गंगा बाई,
   पिता : सुश्रावक हेमाशाह चौधरी (ओसवाल),
   पत्नी : सुदर्शना (सुनंदा), **पुत्र :** पूर्णचंद्र (पूनमचंद)।
2. **जन्म :-** **स्थान :** अरहट्टवाड़ा (गुजरात),
   तिथि : कार्तिक पूर्णिमा, विक्रम संवत् 1472 (सन् 1415)
3. लोकाशाह अथवा लोंकाशाह का पूर्व नाम लोकचन्द्र था। वे व्यसनमुक्त, अनासक्त, धर्मनिष्ठ, नीतिवान्, व्रती, माता-पिता के आज्ञाकारी और अध्ययनशील प्रवृत्ति के थे।
4. वे एकान्तप्रिय और वैराग्यवृत्ति वाले होने के बावजूद धर्म के संघीय स्वरूप को महत्त्व देते थे और धार्मिक कार्यों में उत्साहपूर्वक भाग लेते व सहयोग करते थे।
5. लोकाशाह व्यापार में अहिंसक मूल्यों के प्रति सजग रहते थे। उनका किसानों के साथ लेन-देन भी था। यदि दुष्काल या किसी कारण से किसानों की फसलें नष्ट हो जाती तो लोकाशाह स्थिति व परिस्थिति के अनुसार उनके कभी ब्याज तो कभी ऋण माफ कर देते थे। वे कभी भी मद्य, मांस जैसे निन्दित व्यापारों के लिए धन मुहैया नहीं करवाते थे।
6. लोकाशाह जब मात्र 23-24 वर्ष के थे, तब वर्षभर के अन्तराल में ही उनके माता और पिता का देहावसान हो गया। इससे उन्हें संसार की क्षणभंगुरता का तीव्र अहसास हुआ। इसके पश्चात् वे अपनी पत्नी और पुत्र के साथ अहमदाबाद में रहने लगे। अहमदाबाद में लोकाशाह ने जवाहरात का कार्य किया। वे रत्नों व मोतियों के कुशल पारखी थे।
7. अहमदाबाद नरेश मोहम्मदशाह ने लोकाशाह की तीक्ष्ण-बुद्धि, ईमानदारी, त्वरित निर्णय क्षमता तथा उनके मानवीय सद्गुणों से आकर्षित होकर उन्हें राज्य का कोषाधिकारी मनोनीत किया।
8. अहमदाबाद नरेश के सत्ता लोलुपी पुत्र कुतुबशाह ने उसके पिता को विष देकर मार डाला। इससे धर्मप्राण लोकाशाह का अध्यात्म के प्रति रुझान बढ़ गया तथा उन्होंने

राजकीय पद का त्याग कर दिया।

9. लोकाशाह की लिखावट बहुत सुन्दर, सुपाठ्य तथा आकर्षक थी। इससे प्रभावित होकर यति ज्ञानसुन्दर ने उनको आगम ग्रन्थों की प्रतिलिपि करने का कार्य सौंपा।
10. प्रज्ञाशील लोकाशाह आगम-प्रतिलिपि का कार्य लगन से करने लगे। वे महज लिपिकार ही नहीं थे, इसलिए एक सजग स्वाध्यायी और गम्भीर अध्येता के रूप में आप्त-वचनों को हृदयंगम करने लगे।
11. मूल आगम दशवैकालिक-सूत्र का लिपि-कार्य करते समय उनकी तर्क-मनीषा आन्दोलित हो उठी। उन्हें एक उपाय सूझा - आगमों का पुन: पुन: स्वाध्याय करने के लिए दो प्रतियाँ तैयार करना - एक दिन में, दूसरी रात्रि में। एक प्रति वे अपने पास रख लेते।
12. एक बार ज्ञानसुन्दर जी ने लोकाशाह के घर से आगम की प्रतियाँ मँगवाई। उस समय लोकाशाह घर पर नहीं थे। उनकी भद्र भार्या ने पूछा- "दिन वाली दूँ या रात वाली?" इससे लोकाशाह से आगम-लेखन का कार्य वापस ले लिया गया।
13. इस घटना से लोकाशाह की आगम-स्वाध्याय की रुचि तीव्रतर हो उठी। श्रावक-श्राविकाओं तथा साध्वियों को भी आगम रखने और पढ़ने का पूरा अधिकार होता है, इस बात को उन्होंने आगे बढ़ाया।
14. श्रुत और आचार की एकनिष्ठ आराधना से उनकी तेजस्विता प्रखर होती चली गई। धर्म के नाम पर होने वाले आडम्बर और सुविधाभोग की वृत्तियाँ देख उनका मन व्यथित हो गया। श्रमणाचार और श्रावकाचार में तेजी से पनप रहे स्वच्छन्दाचार को उन्होंने खुली चुनौती दी। उनका विरोध व्यक्ति या परम्परा से नहीं, विकृतियों से था।
15. चहुँ ओर लोकाशाह की चर्चा होने लगी। वे मैत्रीभाव से ओतप्रोत, सत्य के प्रति दृढ़, साधना और विचारों की ऊर्जा से भरे थे; इसलिए निर्भीक तथा निश्शंक थे।
16. उनकी धर्म-क्रान्ति के शंखनाद से वातावरण बदलने लगा। वे निन्दा और प्रशंसा से परे रहकर धर्म-ध्वजा लिये आगे बढ़ते रहे।
17. उस समय के जाने-माने श्रेष्ठी लखमसी भाई संघपति की हैसियत से लोकाशाह से शास्त्रार्थ करने के लिए प्रस्थित हुए। सत्य की सतत साधना से आलोकित लोकाशाह के आभामण्डल में लखमसी भाई शास्त्र-चर्चा के उपरान्त लोकाशाह के समर्थक बन गये। इससे लोकाशाह के अभियान को और बल मिला।
18. उस समय अरहट्टवाड़ा, सिरोही, पाटण और सूरत के जैन संघ अहमदाबाद में थे। चारों संघों के सदस्यों ने लोकाशाह से धर्म और तत्त्व पर मुक्त चर्चा करने का विचार किया।

19. लोकाशाह शुष्क तार्किक नहीं थे; इसलिए उनकी बातों का गहरा असर होता था। चारों संघ लोकाशाह से न सिर्फ सहमत हुए, अपितु चारों संघ-प्रमुखों ने अनगार-धर्म अंगीकार करने की प्रबल इच्छा व्यक्त की; जिससे धर्म के रूढ़ि-मुक्त स्वरूप का व्यापक प्रचार-प्रसार हो सके। जबकि उस समय लोकाशाह स्वयं श्रावक ही थे।

20. चारों संघ-प्रमुखों के इस अद्भुत परिवर्तन से अन्य इकतालीस व्यक्ति भी दीक्षा के लिए तैयार हो गये। चूंकि लोकाशाह स्वयं श्रावक थे, इसलिए दीक्षा के लिए ज्ञानजी मुनि को आमंत्रित किया गया। पैंतालीस व्यक्तियों ने एक साथ दीक्षा ले ली। यह घटना ऐतिहासिक, अपूर्व और प्रेरक है। चार संघ-प्रमुखों सहित 45 व्यक्तियों द्वारा एकाएक घर-बार छोड़ देना तथा दीक्षा के लिए मुनिराज को आमंत्रित करना, सत्य के लिए सर्वस्व समर्पण और उदारता का उत्कृष्ट उदाहरण है।

21. आगमों पर आधारित लोकाशाह द्वारा लिखित दो कृतियों का उल्लेख मिलता है - (1) लुँकाना सद्धियाँ अट्ठावन बोल, तथा (2) लुँकानी हुण्डी तैंतीस बोल। लोकाशाह के तेरह प्रश्न भी बहुत चर्चित हुए।

22. विक्रम संवत् 1536 में वीर लोकाशाह ने भी जैन आर्हती दीक्षा अंगीकार कर ली। तब तक लाखों व्यक्ति उनके धर्मक्रान्ति अभियान से जुड़ चुके थे।

23. पंथवादियों और सुविधाभोगियों को धर्म का आडम्बर-विहीन वैज्ञानिक स्वरूप नहीं जँचा। वे लोकाशाह के विरुद्ध दुष्प्रचार करने लगे, पर सफल नहीं हुए। उन्होंने कायरता का रास्ता अपनाया। श्रमणवर लोकाशाह इन्द्रप्रस्थ (दिल्ली) से विहार कर अलवर पहुँचे। यहाँ किसी विधर्मी ने धर्मप्राण लोकाशाह को विषयुक्त आहार दे दिया। विषाक्त भोजन ग्रहण करने के बाद उन्हें अनहोनी का आभास हो गया। समता व क्षमाभाव को कायम रखते हुए तुरन्त संलेखना संथारा ग्रहण कर वे महाप्रयाण कर गये। यह घटना चैत्र शुक्ल 11, विक्रम संवत् 1546 की है।

24. जैन धर्म की स्थानकवासी परम्परा के पुनरुद्धारक/प्रवर्तक लोकाशाह ने विष पीकर भी विश्व को पीयूष बाँटा। उनका उत्सर्ग व्यर्थ नहीं गया। भारतीय संस्कृति व श्रमण संस्कृति के इतिहास व उत्कर्ष में अनेक नये प्रेरक अध्याय जुड़ते चले गये तथा जुड़ते जा रहे हैं।

25. लोकाशाह ने अपने अनुयायियों को सदैव मैत्री-पथ पर चलने की शिक्षा दी। एक प्रसंग अत्यन्त प्रेरक है। वि.सं. 1636 में लोकाशाह के अनुयायी देवजी ने तपागच्छ के प्रभावक आचार्य हीरविजय जी को अपने यहाँ आश्रय देकर मुगलों से उनकी रक्षा की।

26. अनेक मतभिन्नताओं के बावजूद लोकाशाह का जीवन बंधुत्व और समत्व से

अनुप्राणित था। अशोभनीय शब्दों में निन्दा करने वालों तथा ईर्ष्यालुओं के प्रति भी उनके मन में लेशमात्र द्वेष और कटुता नहीं थी।

27. कुछ लोगों ने लोकाशाह के जीवन के महत्त्वपूर्ण तथ्यों और साक्ष्यों को धूमिल, विकृत या नष्ट करने का प्रयास किया। संभवत: इसीलिए लोकाशाह की जन्म-तिथि, जन्म-स्थान, जन्म-कुल, गोत्र, श्रावक-जीवन, श्रमण-जीवन, स्वर्गवास-तिथि आदि के बारे में विविध/परिवर्तित जानकारियाँ मिलती हैं। कुछ मनीषियों और शोधार्थियों के द्वारा अनुसंधानों और प्राप्त साक्ष्यों के आधार पर उनके जीवन के अधिकांश तथ्य सुस्थिर किये गये हैं। फिर भी नवीन शोध के द्वार हमेशा खुले रहते हैं।

28. श्रमण संस्कृति (जैन धर्म) में किसी नई सम्प्रदाय का प्रवर्तन प्राय: किसी श्रमण के नेतृत्व में होता आया है। लेकिन स्थानकवासी परम्परा का प्रवर्तन या पुनरुद्धार क्रांतधर्मी श्रावक लोकाशाह ने किया। इससे श्रावक और श्राविका का तीर्थ-स्वरूप मुखर और प्रखर हो उठा।

29. लोकाशाह ने ग्रंथालयों और पुस्तकालयों में उपेक्षित, जीर्ण-शीर्ण तथा दीमक से क्षतिग्रस्त आगमों की प्रतियों को सहेजा। इस क्रम में उन्होंने बत्तीस आगमों की सुन्दर लिखावट में प्रतिलिपियाँ बनाईं, बनवाईं और सुरक्षित करवाईं। शास्त्र-सुरक्षा और शास्त्र-स्वाध्याय पर उन्होंने बहुत जोर दिया। वे अपने समय के महान् शास्त्रोद्धारक मनीषी थे।

30. आचार्य श्री हस्तीमलजी प्रणीत जैन धर्म का मौलिक इतिहास (चतुर्थ भाग) के अन्त में लोकाशाह के व्यक्तित्व और कृतित्व पर दो सौ से अधिक पृष्ठ समर्पित किये गये हैं। उन्होंने लोकाशाह को आचार्य देवर्द्धि क्षमाश्रमण (पाँचवीं सदी) के बाद का सर्वोच्च क्रियोद्धारक और धर्मोद्धारक बताया।

31. मरुधर-केसरी मुनि श्री मिश्रीमलजी ने इतिहास-पुरुष लोकाशाह के जीवन पर 'धर्मवीर लोकाशाह' पुस्तक लिखी। उन्होंने कार्तिक पूर्णिमा को लोकाशाह जयन्ती आयोजन को व्यापक बनाने के सफल प्रयास किये। पूज्य श्री घासीलालजी महाराज के नाम से 'लोकाशाहचरितम्' महाकाव्य भी प्रकाशित है।

32. लोकाशाह की धर्मक्रांति को जीवराजजी, लवजीऋषि, धर्मदासजी, धर्मसिंहजी प्रभृति मुनिवरों ने विशेष रूप से आगे बढ़ाया। इन्हीं श्रमणवरों की शिष्य-प्रशिष्य परम्पराओं को मिलाकर स्थानकवासी सम्प्रदाय बना। स्थानकवासी परम्परा में से सन् 1760 (वि. सं. 1817) में तेरापंथ सम्प्रदाय का उदय हुआ।

-निदेशक : अंतरराष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन व शोध केन्द्र,
सुगन हाउस, 18, रामानुजा अय्यर स्ट्रीट, साहुकारपेट, चेन्नई-600079

वीर-निर्वाण दिवस पर विशेष

'MAHAVIR' शब्द से लें प्रेरणा

आचार्यश्री देवेन्द्रमुनिजी म.सा.

कार्तिक अमावस्या को प्रभु महावीर का निर्वाण दिवस उपस्थित होता है। महावीर के जीवन को जानने वाले कई श्रद्धालु भक्त हैं, किन्तु उनके जैसे जीवन जीने वाले बहुत कम हैं। महावीर का एक-एक अक्षर हमें संदेश देता है, उसे हम जीवन में आचरित करें तो जीवन में महावीरत्व प्रकट हो सकता है। आइये हम महावीर (MAHAVIR) को जानें-

M= Make your Heart Merciful- हृदय को दया-अनुकम्पा से भर दो। दया जिसके दिल में है वही अहिंसा का आराधक हो सकता है। हमें दयावान बनना है धर्मरुचि के जैसा। जिन्होंने चीटिंयों पर दया करके अपने प्राणों की कुर्बानी दे दी।

A= Anger is the madness of mind- क्रोध मस्तिष्क का पागलपन है। 'क्रोध हटाये जीवन से बोध'। जीवन की सुख-शान्ति को भंग करने वाला परमाणु अस्त्र क्रोध है। 'उवसमेण हणे कोहं' क्रोध को क्षमा से जीतो। क्षमावान बनना है स्कन्धक जैसा। जिन्होंने चमड़ी उतारने वालों को सिद्ध पद के लिए साधन समझा।

H= Huminity is the root of all virtues- मानवता सर्व गुणों की जननी है। मानव में मानवता नहीं है तो उसका जीवन पशुवत् है। नमक के बिना शाक में स्वाद नहीं होता, वैसे ही मानवता के बिना मानव का कोई मूल्य नहीं है।

A= Abandonment should be our motto- त्याग ही जीवन का सिद्धान्त है। त्याग में जो आनन्द है, वह भोगों में नहीं है। इसी आनन्द को पाने के लिए चक्रवर्ती, राजा, महाबलवान योद्धा अपार सुखों को ठुकराकर त्याग के पथ पर अग्रसर हुए। हमारा जीवन अल्प है, श्वासों की क्षणिकता के साथ जीवन में विसर्जन का गुण अपनाएँ। संग्रह में सुख नहीं, दुःख है।

V= Virtue makes man great and happy- सद्गुण मानव को महान् और सुखी बनाता है। गुलदस्ते को सजाने के लिए अनेक प्रकार के फूल उसमें रखने होते हैं, तभी वह मनभावन होता है। ठीक उसी प्रकार हमारा जीवन सर्व गुणों से युक्त हो- सरलता, सहिष्णुता, समता, धैर्य आदि सद्गुणों की सुवास से सुरभित हो।

I= Idleness is the root of all sins- प्रमाद पाप का मूल है। जीवन में यदि सफलता के शिखर पर चढ़ना है, कामयाबी का परचम लहराना है तो आलस्य को हटाना होगा। 'प्रमाद मृत्यु है- अप्रमाद जीवन है' आलस्य को त्यागने वाला ही आत्मा के आवरणों

को दूर कर सकता है। प्रमाद को छोड़ने वाला परमपद को प्राप्त करता है। प्रभु महावीर का जीवन अप्रमत्तता की मिसाल था। उन्होंने अपने दीर्घ साधनाकाल में मात्र 48 मिनिट नींद ली। यह है जागृत अवस्था। 'जो सोवत है सो खोवत है, जो जागत है सो पावत है'।

R= Rightiousness must be root of life- सच्चाई हमारे जीवन का मूल है। **'सत्यमेव जयते नानृतम्'** यह भारतीय संस्कृति का उद्घोष है और यही जैनदर्शन का आघोष है कि- **'सच्चं खु भगवं'** सत्य ही भगवान् है। झूठ के पैर नहीं होते, यह सर्वविदित है। सत्य के आधार पर ही श्रमण और श्रावकों का व्रत-महाव्रत है। सत्य बोलने वाला भयभीत नहीं होता है।

लो वन्दन शत वार!

श्री अमित जैन

संयम-धन के प्रहरी! महावीर! स्मृतियों के आधार,
दृढ़-प्रतिज्ञ कर्त्तव्य तुम्हारा निखर रहा साकार।

वृक्षों के झुरमुट से झाँका, जब इस अवनि तल पर,
मुरझायी सी, कान्तिहीन सी, देख इसे तुम जलधर!
आँसू बनकर ढुलक पड़े तुम, धर मन में अनुकम्पन,
अनुप्राणित हो नाच उठा प्यासी धरती का कण-कण,
इसके प्रति अणु में अन्तर्हित तेरा ही आकार।

तृषित वासना का संगम ही क्या मानव का जीवन?
लहरों के जो सबल थपेड़ों से झुक जाए नत बन,
वह दीपक क्या स्नेह-सिक्त बन, जलने को ललचाए?
एक झकोरे से अपना जो चिर अस्तित्व लुटाए,
तुम तो थे अभिताप! जले बस अपने ही आधार।

आज बने तुम केवल बस मानस की एक पहेली,
जीवन की नश्वर प्याली में अमृत घूँट उँडेली।
अपने श्वासों के रथ पर ही प्राणदेव! तुम आए,
तभी गगन मण्डल में अगणित ये तारे छितराए।
इसीलिए युग नत-मस्तक है लो वन्दन शत वार।।

-1-स-23, पुराना हाउसिंग बोर्ड, पाली-मारवाड़-306401 (राज.)

चिन्तन

प्रत्येक धर्मानुष्ठान स्वात्मा में गुप्त होने की साधना है

श्री उदयमुनिजी म.सा.

जो अबुद्ध हैं, किन्तु जगत में पूज्य हैं, शास्त्रार्थ में विजयी होते हैं, परन्तु सम्यग्दृष्टि नहीं हैं, ऐसे लोगों का तप, दान, अध्ययन, यम-नियम (व्रत-महाव्रतादि) में किया गया पराक्रम अशुद्ध है। जो बुद्ध हैं (आत्मज्ञाता हैं) उनका तप आदि में हुआ पराक्रम शुद्ध है। जो महान् कुलोत्पन्न व्यक्ति प्रव्रजित होकर फिर पूजा-सत्कार के लिए तप करते हैं, उनका तपादि में किया गया पराक्रम शुद्ध नहीं है। जिस तप को अन्य न जाने, आत्मार्थी ऐसा गुप्त तप करते हैं। वे अपने तप की प्रशंसा नहीं करते हैं/ नहीं करवाते हैं। (सूत्रकृतांग, 8 वां अध्ययन, गाथा 432-434) (समणसुत्तं, गाथा 343, 353, 482)

इससे स्पष्ट हुआ कि तपानुष्ठान आडम्बर या दिखावे या प्रशस्तिगान-अभिनन्दन या भेंट-प्राप्ति के लिए नहीं होता है। पूजा-सत्कार के लिए नहीं होता है। स्वयं में गुप्त होने, ज्ञाता-द्रष्टा भावस्वरूप हो जाने के लिए है। उसी से कर्म का संवर और निर्जरा है, मोक्ष है। अन्यथा तो भयंकर कर्मबंध का कारण होता है। उसमें भी मूल तो सम्यक्त्व है। आत्मभाव बोध-आत्मज्ञान है। ऐसा साधक जब संयम और तप में जाता है तो सर्वकर्मों का क्षय करके, सर्व दुःखों का अन्त करता है। महर्षिगण ऐसा करते हैं। (उत्तराध्ययनसूत्र, अध्ययन 28 वां, गाथा 36) अन्यथा पालित संयम और कृत तप देवगति के सुख देने वाला होता है। (व्याख्याप्रज्ञप्ति 1.2, उपपात, व्याख्याप्रज्ञप्ति 7.6, एवं 2.5, स्थानांग, पांचवा स्थान, उत्तराध्ययन 13 वां अध्ययन गाथा 31, राजप्रश्नीय सूत्र, प्रश्नव्याकरण में संवरद्वार समवायांग 5.26 आदि)

देशविरति या सर्व विरति संयम की साधना की चरम-परम परिणति, परमोत्तम साधना है- संलेखना-संथारा-समाधि साधना। संलेखना में साधक आत्मध्यान में अधिकाधिक लीन रहता है। उसी से अवशिष्ट कषाय कृश होते जाते हैं। आत्मा में अमृतपान से बाह्य में आहार सहज ही घटता जाता है। शरीर या रसनेन्द्रिय में रही-सही आसक्ति या रस भी क्षीण हो जाता है। बाह्यतप तो दिखते हैं, किन्तु वह तो वस्तुतः आत्मा में, स्वयं में गुप्त हो जाता है। आगम सूत्र है कि अज्ञानी करोड़ों-करोड़ वर्षों तक तप करके जितने कर्म क्षय करता है, उतने कर्म को आत्मज्ञानी त्रिगुप्त होकर एक उच्छ्वास-निच्छ्वास में क्षय कर देते हैं।

(व्याख्याप्रज्ञप्ति 3.3, महाप्रत्याख्यान प्रकीर्णक-3, गाथा 101)

ऐसा ही मारणान्तिक संलेखना-संथारा-समाधि का स्वरूप आगमों में, धर्मकथानुयोग में आया है, परन्तु दुर्भाग्य ही कहें कि पाँचवें आरे के लोगों ने आत्मार्थ साधने का, आत्मशुद्धि या आत्मसिद्धि का लक्ष्य ही नहीं बनाया। स्वरूप समझें तो लक्ष्य भी निर्धारित हो। मात्र पुण्य लक्ष्य या संसार लक्ष्य से यह साधना भी होने लगी। विशेषतः गृहस्थों की। जैसे अन्य धर्मानुष्ठानों में विकृतियाँ पनपीं वैसे ही कहीं-कहीं इस अन्तिम साधना में भी उभरकर आई। कुछ नासमझ लोगों ने इसे भी विकृत कर दिया। उससे उच्च न्यायालय ने संथारे को आत्महत्या मान लिया। निर्णय में याचिकाकर्ता ने जो तथ्य प्रस्तुत किए, वे देखें। विमलादेवी को साध्वी-रूप स्थापित करके, जीवनपर्यन्त अनशन को उसके परिजनों ने उसके फोटो सहित अखबारों के आकर्षक कालमों में खूब विज्ञापित किया। सुसज्जित शव के फोटो भी छपवाए। अखबारों में कई धार्मिक सभाओं के विवरण छपवाए। विमलादेवी के कार्य की खूब वाहवाही हुई और समाज में परिवार की प्रतिष्ठा बढ़ गई। (पैरा 5)

तथ्य प्रस्तुत हुए-संथारा समाज में कीर्ति हेतु होता है। जिसने संथारा ले लिया वह उस संकल्प को तोड़ नहीं सकता। उसका पूरा कुटुम्ब और पूरा जैन समाज उसे प्रक्रिया को पूरी करने के लिए बाध्य कर देते हैं, जबकि वह अमानवीय एवं असह्य कष्ट से दुःखी हो रहा है। वह दुःख सहा नहीं जा रहा है, अतः वह भोजन-पानी मांगे तब भी उसे नहीं दिया जाता। संथारा लेने वाला/वाली भी मानते लगती है कि भोजन-पानी ले लूँ तो भयंकर अधर्म हो जाएगा, समाज में भी आलोचना होगी, इस भय से मृत्यु स्वीकार कर लेता है/लेती है। (पैरा 19) उत्तरदाता के अभिभावक ने भी संथारे की प्रक्रिया समझाने हेतु जोर-जोर से मंत्रोच्चारण करके न्यायालय कक्ष में बैठी आम जनता को विस्मित करने का कार्य किया। (पैरा 20)

सभी जैन साधकों को इस निर्णय से यह बोध लेना चाहिए कि कोई भी धर्मानुष्ठान, धर्माचरण बाह्य में दिखाने का नहीं होता है। अपने आपमें गुप्त हो जाने का है। जितना आडम्बर-प्रदर्शन-दिखावा होगा, वही विकृति कहा जाएगा। वह कर्म का संवर या निर्जरा का कारण नहीं, आस्रव और बंध ही कराएगा। न्यायालय में विपक्ष के द्वारा जो चित्र संथारे का प्रस्तुत हुआ, वह निर्जरा का, निर्वाण का कारण नहीं माना जा सकता। सर्वोच्च न्यायालय में भी ये ही तथ्य प्रकरण-प्रलेखों में होंगे। वही भारतीय दण्ड संहिता की धारा 309 होगी। इसलिए मैंने सभी जैन धर्मानुयायियों की ओर से और सबके हित में एक जन-परिवाद लोकसभा के सभापतिजी को प्रस्तुत करवाया है। उसमें आगमिक प्रमाण, ऐसे साधकों के विवरण और इसकी प्राचीनता के प्रमाण दिए हैं तथा यह मांग की है कि इन आधारों पर धारा 309 में संसद ऐसा संशोधन करे कि जैन धर्म की संलेखना-संथारा-

समाधि साधना पर यह धारा लागू नहीं होगी। सभी सम्प्रदायों के आचार्यों या नायकों को प्रति भेजकर विनति की है कि वे इसके समर्थन में पत्र लिखें। अखिल भारतीय स्तर के सभी जैन संगठन भी सभापतिजी को समर्थन में पत्र लिखें। विधि-निर्माण में संसद की सर्वोपरिता है। न्यायालय में इसी बिन्दु पर विचाराधीन प्रकरण उस सर्वोपरिता में बाधक नहीं माना जाता है।

प्रेरक-प्रसंग

कीमती पत्थर

श्री गौतम कुमार सुराणा

एक राजा को हीरे-जवाहरात संग्रह करने का शौक था। उसने दूर-दूर से हीरे, माणिक,पन्ने, पुखराज आदि कीमती पत्थरों को मंगवाकर उन्हें काँच की अलमारियों में सजा रखा था। प्रत्येक अतिथि को वह कीमती पत्थरों से भरी अलमारी दिखाता और प्रशंसा के शब्द सुनकर गर्व से मुस्कराता था।

एक दिन एक महात्मा उसके महल में आये तो राजा ने वही अलमारी उन्हें भी दिखाई और प्रत्येक पत्थर की कीमत भी बताई। जिसे सुनकर महात्मा ने राजा से पूछा- " इनसे कितना लाभ तुम्हें मिल जाता है? " राजा यह सुनकर हँसते हुए बोला-" भला, इनसे आमदनी। अरे, मुझे तो इनकी सुरक्षा हेतु विश्वासपात्र चौकीदार रखने पर हजारों रुपया खर्च करना पड़ रहा है।"महात्मा ने कहा- "तब तो इनका रखना व्यर्थ है।" राजा यह सुनकर खिन्न हो गया और बोला- "महात्मा जी,भला आप क्या जानो, इन कीमती पत्थरों का महत्त्व, ऐसे पत्थर स्वप्न में भी न देखे होंगे।"

महात्मा सीधे सरल शब्दों में बोले " राजन् मैंने इनसे भी मूल्यवान उपयोगी पत्थरों को देखा है। " राजा ने उन्हें देखने की उत्सुकता प्रकट की तो महात्मा उनको एक पास की झोंपडी में ले गये और एक विधवा की आटा पीसने की चक्की की ओर अंगुली का इशारा कर कहा-"महाराज देखिये, असली कीमती पत्थर।" राजा क्रुद्ध हो गया। " भला यह पत्थर कैसे इतना कीमती है?" महात्मा ने कहा -"तुम्हारे हीरे-मोती किसी का पेट नहीं भर सकते। यह विधवा आटा पीसकर अपना व बच्चों का पेट पालती है। वे बेकार पड़े हीरे किसका पेट भरते हैं, उन्हें मूल्यवान कैसे कहूँ?" राजा का भ्रम और घमण्ड जाता रहा। उसने प्रजा के लिये उपयोगी कार्य प्रारम्भ करवाये। पाठशालाएँ, चिकित्सालय और उद्योग केन्द्र खुलवाये, जिससे प्रजा को ज्ञान और पेट भरने के साधन मिल पाये।

सच ही कहा है - उपयोग में आए वही धन है, अन्यथा पत्थर है।

-पोस्ट-कंवलियास, वाया-रुपाहेली कलां, जिला-भीलवाडा-311030 (राज.)

तत्त्वज्ञान प्रश्नोत्तरी (क्रमशः96)

आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ

श्री धर्मचन्द जैन

(गमा का थोकड़ा)

जिज्ञासा– सोलहवाँ भव का स्थान कौनसा बतलाया गया है?

समाधान– सोलहवाँ भव का स्थान ऐसे संख्यात वर्ष की आयु वाले सन्नी मनुष्य तथा असन्नी मनुष्यों से है जो मरकर तेउकाय-वायुकाय में उत्पन्न होते हैं। ऐसे मनुष्यों की स्थिति स्थान प्रमाण हो सकती है। अर्थात् जघन्य अन्तर्मुहूर्त से लेकर एक करोड़ पूर्व वर्ष तक की स्थिति इन मनुष्यों की हो सकती है।

जिज्ञासा– इस सोलहवें भवस्थान में जीव लगातार कितने भव कर सकते हैं?

समाधान– प्रज्ञापना सूत्र के छठे पद में वर्णित छोटी गति-आगति के थोकड़े से स्पष्ट है कि संख्यात वर्ष की आयु वाले सन्नी मनुष्य तथा असन्नी मनुष्य ये दोनों प्रकार के जीव मरकर तेउकाय-वायुकाय में उत्पन्न हो सकते हैं, किन्तु तेउकाय-वायुकाय के जीव भव-स्वभाव से ही मनुष्य के रूप में उत्पन्न नहीं हो पाते। इस कारण से जघन्य-उत्कृष्ट दो भव ही लगातार हो सकते हैं, अधिक नहीं।

जिज्ञासा– संख्यात वर्ष की आयु वाले सन्नी मनुष्य तथा असन्नी मनुष्य कितने गमों से तेउकाय-वायुकाय के घर में आकर उत्पन्न हो सकते हैं?

समाधान– संख्यात वर्ष की आयु वाले सन्नी मनुष्य तो सभी नौ गमों से तेउकाय-वायुकाय में आ सकते हैं, किन्तु असन्नी मनुष्य तीन गमों से ही तेउकाय तथा वायुकाय के घर में आ पाते हैं। वे तीन गमे इस प्रकार हैं-

(अ) जघन्य से औधिक, (ब) जघन्य से जघन्य,(स) जघन्य से उत्कृष्ट। असन्नी मनुष्यों में अन्तर्मुहूर्त की ही स्थिति होती है। अर्थात् इनकी जघन्य तथा उत्कृष्ट दोनों ही प्रकार की स्थिति अन्तर्मुहूर्त की होती है, फिर भी जघन्य स्थिति के अन्तर्मुहूर्त से उत्कृष्ट स्थिति का अन्तर्मुहूर्त बड़ा समझना चाहिए। ये अपर्याप्त अवस्था में ही काल कर जाते हैं। अतः ये उपर्युक्त तीन गमों से ही तेउकाय-वायुकाय के घरों में आ पाते हैं।

(अ) जघन्य से औधिक– इस गमे के अन्तर्गत ये असन्नी मनुष्य तेउकाय

वायुकाय में जब आकर उत्पन्न होते हैं तो वहाँ वायुकाय में अन्तर्मुहूर्त से लेकर 3 हजार वर्ष तक की स्थिति प्राप्त कर सकते हैं तथा तेउकाय में अन्तर्मुहूर्त से लेकर तीन अहोरात्रि तक की स्थिति प्राप्त कर सकते हैं।

(ब) **जघन्य से जघन्य-** इस गमे के अन्तर्गत ये असन्नी मनुष्य तेउकाय तथा वायुकाय इन दोनों में जब आकर उत्पन्न होते हैं तो अन्तर्मुहूर्त की ही स्थिति प्राप्त करते हैं, इससे अधिक स्थिति इस गमे के अन्तर्गत प्राप्त नहीं कर पाते हैं।

(स) **जघन्य से उत्कृष्ट-** इस गमे के अन्तर्गत आने वाले असन्नी मनुष्य वायुकाय में तीन हजार वर्ष की तथा तेउकाय में तीन अहोरात्रि की स्थिति ही प्राप्त करते हैं, इससे कम अथवा अधिक स्थिति प्राप्त नहीं कर पाते।

जिज्ञासा- असन्नी मनुष्यों की क्या-क्या प्रमुख विशेषताएँ हैं?

समाधान- असन्नी मनुष्यों की प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं-

1. असन्नी मनुष्य चौदह अशुचि स्थानों में उत्पन्न होते हैं।
2. ये आहार, शरीर, इन्द्रिय व श्वासोच्छ्वास ये चार पर्याप्तियाँ उत्पन्न होते समय प्रारंभ करते हैं। प्रथम तीन पर्याप्ति तो पूर्ण कर लेते हैं, किन्तु स्थिति अल्प होने के कारण ये श्वासोच्छ्वास पर्याप्ति पूर्ण नहीं कर पाते हैं।
3. असन्नी मनुष्य लब्धि अपर्याप्त ही होते हैं अर्थात् ये अपर्याप्त अवस्था में ही काल कर जाते हैं। ये नियमा मिथ्यादृष्टि होते हैं।
4. असन्नी मनुष्य यदि लगातार असन्नी मनुष्य के रूप में उत्पन्न हो तो अधिकतम आठ भव कर सकते हैं।
5. असन्नी मनुष्य यदि औदारिक के दस दण्डकों (पाँच स्थावर, तीन विकलेन्द्रिय, तिर्यंच पंचेन्द्रिय व मनुष्य) में उत्पन्न हो तो जघन्य के तीन गमों से ही उत्पन्न होते हैं।
6. औदारिक के 8 दण्डकों के जीव (तेउ-वायु को छोड़कर तीन स्थावर, तीन विकलेन्द्रिय, तिर्यंच पंचेन्द्रिय और मनुष्य) यदि असन्नी मनुष्य के रूप में उत्पन्न होते हैं तो 1. औधिक से जघन्य, 2. जघन्य से जघन्य, 3. उत्कृष्ट से जघन्य इन तीन गमों से ही आकर उत्पन्न होते हैं। शेष 6 गमों से आकर उत्पन्न नहीं होते।

जिज्ञासा- तेउकाय-वायुकाय के जीवों की क्या-क्या प्रमुख विशेषताएँ हैं?

समाधान- तेउकाय-वायुकाय के जीवों की प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं-

1. तेउकाय-वायुकाय के जीव गमन क्रिया की अपेक्षा गति त्रस कहलाते हैं, किन्तु स्थावर नाम कर्म का उदय होने की अपेक्षा तो इन्हें स्थावर ही माना जाता है।
2. तेउकाय-वायुकाय के जीव मरकर मनुष्य के रूप में उत्पन्न नहीं हो पाते। अर्थात् संख्यात वर्ष की आयु वाले सन्नी मनुष्य तथा असन्नी मनुष्य ये दोनों तो तेउकाय-वायुकाय में आकर उत्पन्न हो सकते हैं, किन्तु तेउकाय-वायुकाय के जीव मनुष्य के रूप में उत्पन्न नहीं हो सकते।
3. तेउकाय-ज्वलन गुण वाली है तथा वायुकाय-ज्वलन गुण को बढ़ाने में सहायक है।
4. तेउकाय-वायुकाय में रहा हुआ जीव वहाँ से निकलकर तिर्यंच गति में जहाँ भी जाकर उत्पन्न होता है, वहाँ उस भव में मिथ्यादृष्टि ही रहता है। उसके अगले भवों में सम्यक् दृष्टि भी बन सकता है।
5. तेउकाय-वायुकाय में यदि जीव अन्तर्मुहूर्त से अधिक स्थिति तक रहे तो भव स्वभाव से वहाँ मनुष्यगति, मनुष्यानुपूर्वी तथा उच्च गोत्र इन तीनों प्रकृतियों का बन्ध नहीं करता है, तथा इन तीनों के दलिकों की उद्वलना करना प्रारंभ कर देता है। उद्वलना पूर्ण करने में पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग काल लगता है।

   (उद्वलना से तात्पर्य इन प्रकृतियों के सत्तागत कर्म दलिकों को अपनी सजातीय प्रकृतियों के दलिकों में संक्रमित करना है।)
6. तेउकाय-वायुकाय के जीव यदि तेउकाय-वायुकाय में लगातार जन्म-मरण करता रहे तो कम से कम दो भव तथा अधिक से अधिक असंख्यात भव कर सकता है।
7. तेउकाय-वायुकाय के जीवों की कायस्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त से लेकर उत्कृष्ट असंख्यात काल- पृथ्वीकाल तक की हो सकती है। अर्थात् असंख्यात लोकों में जितने आकाश प्रदेश हों, उनको यदि कोई प्रति समय गिने और उनके गिनने में जितने समय लगे, उतना काल लगता है। दूसरे शब्दों में असंख्यात उत्सर्पिणी तथा असंख्यात अवसर्पिणी काल तक वह जीव तेउकाय में तथा वायुकाय में अलग-अलग रह सकता है। यह उत्कृष्ट काल तेउकाय-वायुकाय के सूक्ष्म-बादर, अपर्याप्त-पर्याप्त इन चारों भेदों को मिलाने पर ही हो पाता है। इसका दूसरा नाम सूक्ष्मकाल भी है।

-रजिस्ट्रार, अ.भा.श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर (राज.)

नारी-स्तम्भ

माता - भाग्य निर्माता

श्रीमती सुनीता मेहता

पूज्य गुरुदेव से एक महिला ने पूछा-"गुरुदेव! बच्चे को संस्कार कब से देना चाहिए।"

पूज्य गुरुदेव ने पूछा- "यह बच्चा कितने वर्ष का है?"

महिला- "पाँच वर्ष का।"

गुरुदेव- "तुमने पाँच साल 9 महीने की देरी कर दी। अर्थात् जैसे ही माता को पता चलता है कि उसने गर्भधारण किया है तभी से संस्कार की शुरूआत हो जानी चाहिए।"

जब से बच्चा गर्भ में आता है, तभी से माँ का संरक्षण प्राप्त होता है। कहा भी है- "Mother is the First School of Child"। अर्थात् माता शिशु की प्रथम पाठशाला होती है। सती मदालसा ने पालना झुलाते-झुलाते अपने पुत्रों को वैरागी बना दिया। वीर अभिमन्यु ने भी चक्रव्यूह भेदन की गाथा माँ के गर्भ में ही सुनी थी। बच्चों पर संस्कार जन्म से नहीं, गर्भ से ही पड़ने शुरू हो जाते हैं। अतः माताओं को ध्यान रखना चाहिए कि हम जिस प्रकार के वातावरण में रहेंगे, जिस प्रकार का खान-पान होगा, जिस प्रकार का व्यवहार होगा, वैसा ही असर गर्भस्थ शिशु पर पड़ेगा वैसे ही संस्कार व भावनाएँ उसमें पनपेंगी। गर्भवती बहिनें गर्भ में पल रहे बच्चे को भार स्वरूप न समझें वरन् अपना कर्त्तव्य समझें, क्योंकि जितनी वेदना उनको होती है, उससे अनेक गुणी वेदना गर्भस्थ शिशु को होती है।

आज समाज में टी.वी., वीडियो, इण्टरनेट का आंतरिक प्रदूषण बहुत बढ़ गया है। होटल, पिकनिक एवं पर्यटन से मानव का आंतरिक वातावरण कलुषित हो गया है। कितने ही युवा बालक, बालिकाएँ, महिलाएँ, फैशन-व्यसन एवं वैभव विलास की बाढ़ में बहकर जिंदगी बर्बाद कर रहे हैं। आज के इस विज्ञान प्रधान युग में बाह्य साधनों से भले ही हम प्रगति की राह पर हैं, परन्तु पाश्चात्त्य संस्कृति की लालसा के कारण मनुष्य अपनी मानवता और भारतीय संस्कृति को भूलता जा रहा है, इसलिए आज घर-घर की स्थिति बिगड़ती जा रही है। वर्तमान युग में बच्चे सुनते नहीं, कहना मानते नहीं । बचपन की उम्र से ही अपने सारे फैसले अपनी इच्छानुसार लेने के आदी हो जाते हैं।

प्रश्न यह उठता है कि विज्ञान की दृष्टि से हम प्रगति के पथ पर आगे बढ़ रहे हैं तो फिर मानवता, सहयोग, सेवा, कर्त्तव्य और समर्पण की भावना में उतने ही पीछे क्यों जा रहे हैं? आज

के युग में श्रवणकुमार जैसे पुत्र, भरत जैसे भाई, राम जैसे पति, सीता जैसी पत्नी, मदालसा जैसी माता के दर्शन दुर्लभ हो गये हैं। ये सब महापुरुष हमारे अतीत का हिस्सा बन गये हैं।

फिलहाल हमारे आदर्श तो टी.वी. सिनेमा के हीरो-हीरोइन बन गए हैं। आखिर ऐसा क्यों हो रहा है? यह बदलाव क्यों? इसका मूल कारण क्या? क्यों हमारी वर्तमान पीढ़ी माता-पिता के प्रति अपने कर्त्तव्यों से पीछे हट रही है, इसका एकमात्र जवाब है- वर्तमान युग के बच्चों में संस्कारों का नितान्त अभाव। आज की फास्ट-फॉरवर्ड लाइफ में सामान्यतया हर माता-पिता की भी यही इच्छा होती है कि उनके बच्चे आधुनिक तरीके से चलें, चाहे वे सब संस्कारों के विपरीत हों। अब ये संस्कार कब, कहाँ, कैसे, किसलिए दिये जाएं। जीवन में संस्कारों का बीजारोपण कितना महत्त्वपूर्ण होता है, इस पर विचार करने की आवश्यकता है।

जीवन में संस्कारों की शुरूआत जीव के गर्भ में आने के साथ ही हो जानी चाहिए। गर्भकाल के दौरान माता प्रसन्नचित्त रहे, आनन्दित रहे, पर मौजमस्ती नहीं करे, पिक्चर, टी.वी. सीरियल नहीं देखे। ज्यादा से ज्यादा धर्म ध्यान में अपना समय व्यतीत करे। ब्रह्मचर्य का पालन करे, क्योंकि ब्रह्मचर्य सबसे बड़ा तप कहा गया है और गर्भस्थ शिशु का ध्यान रखना भी एक प्रकार की तपस्या है, साधना है। ब्रह्मचर्य में रहने से आंतरिक विकारों का शमन होगा, शुभ भावना जाग्रत होगी, आत्म स्वरूप में रमणता बढ़ेगी, जिसका असर बालक पर आजीवन रहेगा। वह सदाचारी व संस्कारित बनेगा, फिर चाहे वह दुनिया के किसी भी कोने में चला जाए। वह अपने संस्कार नहीं भूलेगा। इसलिये बच्चे को आठ-नौ साल की उम्र तक अच्छे संस्कार दे देने चाहिये, क्योंकि उसके बाद वह स्वयं समझने लगता है और दूसरों की शिक्षा का उस पर ज्यादा प्रभाव नहीं पड़ता।

गर्भकाल से ही माता को गर्भ पालन के साथ-साथ ही स्वाध्याय शुरू कर देना चाहिए। स्वाध्याय हेतु निम्नलिखित पाठ एवं साहित्य अत्यन्त उपयोगी हैं-

1. नवकार मंत्र
2. उपसर्गहर स्तोत्र (उवसग्गहर)
3. मेरी भावना
4. बारह भावना
5. लघु साधु वन्दना
6. बड़ी साधु वन्दना
7. सुखविपाक सूत्र
8. छज्जीवणी दशवैकालिक सूत्र के प्रथम चार अध्ययन
9. वीरत्थुई (पुच्छिंस्सु णं स्तोत्र)
10. भक्तामर स्तोत्र (सवेरे)
11. कल्याण मंदिर स्तोत्र (शाम को)
12. आनुपूर्वी
13. श्री वज्रपंजर स्तोत्र
14. चत्तारि मंगलं पाठ

15. तीन मनोरथ चिन्तन
16. तीर्थंकर सिद्ध स्तुति
17. चौदह स्वप्न चिन्तन
18. महावीराष्टक
19. लोग्गस्स पाठ
20. णमोत्थुणं पाठ

महापुरुषों का जीवन चरित्र भी पढ़ना चाहिए। परन्तु आज की फैशन-परस्त युवतियाँ टी.वी., सिनेमा देखने में अपना समय व्यतीत करती हैं, जिससे बच्चे को अच्छे संस्कार नहीं मिलते और वह क्रोधी, जिद्दी, आलसी तक हो जाता है। जब माता टी.वी. देखती है तो उसके माध्यम से बच्चा भी जन्म लेने से पहले ही चोरी, डकैती, झूठ, लड़ाई-झगड़ा, मार-काट आदि देख लेता है। उन सबका प्रभाव भी सीधा उस पर पड़ता है। अतः गर्भस्थ माता को नित्यप्रति जीवन निर्माणकारी शिक्षाओं का स्वाध्याय करना चाहिए। अश्लील उपन्यास नहीं पढ़ने चाहिए।

हे पुत्र! तू कौन है, तू शुद्ध है, बुद्ध है, निरंजन है, तेरा स्वरूप वाला है। संसार माया का स्वरूप है, मोह की निद्रा को छोड़ देना।

गुजरात में अभी भी ऐसे संस्कार दिये जाते हैं। वहाँ कई घरों में बच्चे रात्रिभोजन नहीं करते। यह है संस्कार। चाहे वह दुनिया के किसी भी कोने में जाये उसको वे संस्कार काम आयेंगे और वह गुमराह नहीं होगा। बिना संस्कार के बच्चा गुमराह हो जाता है।

बच्चे में शुरू से ही विनय एवं विनम्रता की आदत डालनी चाहिए ताकि वह बड़ों का हमेशा आदर सम्मान करे। दान देने की भावना जाग्रत करनी चाहिए। किसी कवयित्री ने भी कहा है-

माँ संवेदना है, भावना है, अहसास है।
माँ जीवन के फूलों में, खुशबू का वास है।
माँ रोते हुए बच्चे का खुशनुमा पालना है।
माँ लोरी है, गीत है, प्यारी सी थाप है।
माँ ममता की धारा है।
माँ त्याग है, तपस्या है, सेवा है।

इस कविता के माध्यम से माँ की शक्ति का बोध होता है। वह जिधर चाहे अपने बच्चे को मोड़ सकती है। सती मदालसा ने जन्म से ही अपने बच्चे में संस्कार दिये।

एक बच्चे ने अपने पिता से कहा- वह पढ़ने के लिए विदेश जाना चाहता है। माँ-बाप ने सोचा विदेश जायेगा, पढ़ेगा, लिखेगा, खूब नाम कमायेगा। यह सोचकर विदेश भेज दिया, लेकिन अच्छे संस्कार नहीं दिये थे। वहाँ जाकर एक अंग्रेज महिला के चक्कर में फंस

गया। लड़का पहले हर रोज माँ-बाप से फोन पर बात करता था, फिर सप्ताह में करने लगा। उसके पश्चात् काफी समय तक फोन नहीं आया। एक वर्ष बीत गया। माँ-बाप को चिन्ता हुई। बाप विदेश में बेटे के पास पहुँचा एवं देखा कि बेटा अंग्रेज महिला के साथ रह रहा था। बेटे ने बाप को देखा और पहचानने से इन्कार कर दिया और धक्का देकर बाहर निकाल दिया। बाप वापस आ गया और पत्नी से बोला कि बेटा मर गया और उसका क्रियाकर्म कर दिया। उधर वह अंग्रेज महिला जब तक उसके पास धन था तब तक रही और अंत में उसको कंगाल करके चली गई। अब बेटे को पश्चात्ताप हुआ, बड़ी मुश्किल से पैसा उधार लेकर अपने घर आया। बाल, दाढ़ी बढ़े हुए, गंदे कपड़े पहने हुए घर में प्रवेश किया। माँ ने कहा भूत आया भूत आया, पर पिता को तो पता था कि यह उसी का बेटा है। उन्होंने दरवाजा खोला और उसको अंदर आने दिया तथा उसे माफ कर दिया। यह सच्ची घटना है। अगर हम चाहते हैं बच्चे सही सलामत रहें तो शुरू से ही उन्हें संस्कारित करना चाहिये।

गर्भ संस्कार

गर्भधारण करने के तुरन्त बाद से जो-जो माता करती है उसका सीधा व अमिट प्रभाव बच्चे पर पड़ता है। गर्भस्थ अवस्था में जीव का एक मात्र कनेक्शन माँ के साथ होता है। एक डोर, एक तार से दोनों की सांसे चलती है। माँ के विचार उसके विचार, माँ का खानपान उसका खानपान, माँ की लेश्या उसकी लेश्या, माँ के भाव उसके भाव। नौ महीनों तक जीव एक ही ट्रेनिंग सेण्टर में एक ही गुरु के अधीन रहता है, वह है उसकी माँ। फिर अपने जीवनकाल में ऐसा अवसर मिलना नामुमकिन है।

गर्भ में आया हुआ जीव माता द्वारा खाये हुए अनेक प्रकार के रसों का एक भाग आहार रूप में खाता है। (भगवती सूत्र शतक 1, उद्देशक 7, सूत्र-241-250) इस खाये हुए आहार से वह गर्भ का जीव चय करता है, यानी पचाता है, फिर उससे इन्द्रियाँ, शरीर, हड्डी, मांस, अंग-उपांग, मज्जा, नख, केश आदि बनाता है। गर्भ में रहे हुए जीव के मल-मूत्र आदि नहीं होते। इसका तात्पर्य यह है कि गर्भ में रहा हुआ जीव आहार के रूप में माता द्वारा खाये हुए भोजन से बने हुए रस को ही ग्रहण करता है फिर उससे अपने शरीर व इन्द्रियों का निर्माण करता है जो जीवन पर्यन्त उसके साथ रहता है। इस तरह से माता के खान-पान का पूरा संस्कार शरीर, इन्द्रिय आदि रूप में शिशु के साथ जीवनपर्यन्त रहता है।

एक मातृजीव रसहरणी नाडी (नाभिका नाल) जो माता के साथ प्रतिबद्ध होती है तथा शिशु के मात्र स्पर्श होती है, इसी के द्वारा शिशु माता का रस आहार रूप में ग्रहण करता है।

दूसरी पुत्रजीवरसहरणी नाडी होती है जो शिशु के साथ प्रतिबद्ध होती है तथा माता के मात्र स्पर्श होती है। इससे शिशु आहार का चय-उपचय (पाचन) करता है। इसी से गर्भस्थ

जीव पुष्टि प्राप्त करता है तथा इन्द्रियाँ, शरीर, अंग-उपांग, नख, केश आदि का निर्माण करता है। ये इन्द्रियाँ शरीर आदि सभी शिशु के जीवनपर्यन्त रहते हैं।

कर्मसिद्धान्त के अनुसार 8 कर्मों में 7 कर्मों का संक्रमण हो सकता है, पर आयुष्य कर्म एक ऐसा कर्म है जो जैसे बंधता है, वैसे ही भोगना पड़ता है। यदि गर्भस्थ अवस्था में जीव काल कर जाए और माँ की लेश्या या विचार उस समय अशुभ रहे तो उस जीव पर उसी विचार के प्रभाव से उसके नरक के बंधन भी हो सकते हैं। उस समय माँ के शुभविचार शुभ भावना गर्भस्थ जीव के शुभ गति का भी कारण हो सकता है। माता के शारीरिक एवं मानसिक विचार गर्भस्थ शिशु पर अपना प्रभाव डालते हैं। बच्चा वही देखता है, जो माता देखती है। बच्चा वही अनुभव करता है जो माता अनुभव करती है। बच्चा वही आहार करता है जो माता करती है। बच्चा वही सुनता है जो माता सुनती है। गर्भकाल में माँ को सदा ध्यान रखना चाहिए कि वो क्या कर रही है। क्योंकि उसका सीधा प्रभाव बच्चे पर पड़ता है। उसका ऐसा अमिट प्रभाव पड़ता है, जो बदला नहीं जा सकता। माता के खड़े रहने पर खड़ा रहता है, बैठने पर बैठता है, सोने पर सोता है। माता की क्रिया पर शिशु की क्रिया निर्भर है। (भगवती सूत्र, शतक 1, उद्देशक 3.7, गाथा-258-)

माँ एक मूर्तिकार है जो जैसा चाहे वैसा आकार अपने गर्भस्थ जीव को दे सकती है। कुम्भकार कच्ची मिट्टी को मन चाहा आकार प्रदान कर सकता है, पर एक बार बर्तन तैयार हो जाए तो वह भिन्न-भिन्न रंगों से उसे पोत सकता है, पर आकार वही रहेगा। ठीक इसी प्रकार माँ गर्भस्थ जीव पर उसके हर विचार, भाव, व्यवहार, खान-पान, हर छोटी से छोटी क्रिया का असर बच्चे पर छोड़ती है। **(क्रमशः)**

-पूर्व महामंत्री, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, जोधपुर (राज.)
-467 ए, सातवीं 'ए' रोड़, सरदारपुरा, जोधपुर-342003 (राज.)

कहती है यह जिनवाणी

श्री मगनचन्द जैन

मुक्ति-मार्ग के चार सूत्र हैं, कहती है यह जिनवाणी।
सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यक् चारित्र, सम्यक्तप।।
राग-द्वेष दो बीज भ्रमण के समझाती है जिनवाणी।
चतुष्क कषाय का चक्र बुरा है ध्यान दिलाती जिनवाणी।
अपना जीवन आप सुधारो शिक्षा देती जिनवाणी।

-से.नि. अध्यापक, फाजिलाबाद (हिण्डौन), जिला-करौली (राज.)

आचार्य पद रजतवर्ष

ये हीरा गुरु हमारा

श्री उम्मेदमल जैन

कोटि-कोटि कण्ठों से निकली, वाणी अमृत धारा।
ये हीरा गुरु हमारा।।
मात मोहिनी का सुत प्यारा, मोती का नन्द दुलारा।
ये हीरा गुरु हमारा।।
पीपाड़ शहर में जन्म लिया, पीपाड़ में शिक्षा पायी।
तरुण अवस्था भई आपकी, सेवा सुगम अपनायी।
प्रिय बहना जब स्वर्ग सिधाई, संसार से किया किनारा।।1।।
गुरु हस्ती पीपाड़ पधारे, हीरा सत्संग में आया।
काती सुदि छठ के दिन यह, संयम पथ अपनाया।
गुरु हस्ती का शिष्य बना, और साधु धर्म स्वीकारा।।2।।
हस्ती ने हीरा चमकाया, शास्त्रज्ञान ये गहरा पाया।
अन्त समय में पत्र लिखाया, हीरा को आचार्य बनाया।
रतन संघ का ताज बना, कीना धर्म प्रचारा।।3।।
जोधाणा की मरु भूमि में, आचार्य पद पाया।
विचर-विचर कर सारे जग में, हस्ती पाट दिपाया।
ज्ञान की ज्योति जगाई भारत में, अद्भुत जादू डाला।।4।।
द्वेष मिटाया, प्रेम बढ़ाया, संगठन का बिगुल बजाया।
व्यसन-मुक्ति अभियान चलाकर, नवयुवकों को जगाया।
कई हजार गो वंश बचाकर, अहिंसा धर्म प्रचारा।।5।।
अमृतवाणी जब बरसावे, उमड़-उमड़ कर जनता आवे।
शास्त्रज्ञान सुनाकर भाई, जग में धर्म दिपाया।
सामायिक स्वाध्याय का नारा, गुरु का नाम उच्चारा।।6।।
आचार्य पद रजत साल का ऐसा अवसर आया।
शरण पड़ा उम्मेद आपके, चरणों में शीश झुकाया।
इस भूले भटके सेवक को, गुरुवर पार लगाना।।7।।

-चौथ का बरवाड़ा, जिला-सवाईमाधोपुर (राज.)

गीत

ज्ञान-अर्जन में समय गर लगाएँ

श्री अक्षय जैन

(तर्ज:- चलो शिव शंकर के मन्दिर में.....।)

चलो गुरु हीरा के चरणों में श्रावक,
बरसेगी गुरुवर की हम पर कृपाएँ।
होगा जग-बन्धन से मुक्त मन हमारा,
ज्ञान-अर्जन में समय गर लगाएँ।
चलो गुरु हीरा के....।।1।।

ये जीवन क्षणिक है, है क्षण का जगत-सुख।
जो की गुरु की भक्ति, तो ना होगा फिर दुःख।
करें गुरु की सेवा, मिले हमको शक्ति।
शक्ति भी ऐसी कि जग को दिपाएँ।
होगा जग-बन्धन से मुक्त मन हमारा,
ज्ञान-अर्जन में समय गर लगाएँ।
चलो गुरु हीरा के....।।2।।

गुरु हैं दयालु, हैं दानी दया के,
तिरेंगे वे जग से, जो मानेंगे बातें।
क्षमा के हैं सागर, हैं अमृत के गागर।
सुनें हम जो बोले गुरुवर कथाएँ।
होगा जग-बन्धन से मुक्त मन हमारा,
ज्ञान-अर्जन में समय गर लगाएँ।
चलो गुरु हीरा के....।।3।।

हैं गुरु एक पानी का, निर्मल-सा सोता,
'अक्षय' मन-मैल, उसमें है धोता।
करे जो भी मन से गुरुवर का चिन्तन,
बरसाते गुरुवर जी आशीष छटायें।
होगा जग-बन्धन से मुक्त मन हमारा,
ज्ञान-अर्जन में समय गर लगाएँ।
चलो गुरु हीरा के....।।4।।

-सुपुत्र श्री चान्दमलजी जैन, जैनविहार कॉलोनी, अलीगढ़, जिला-टोंक-304023 (राज.)

युवा-स्तम्भ

ऑनलाइन शॉपिंग का औचित्य?

संकलन : श्री विनोदकुमार जैन

एक बार मैं अपने अंकल के साथ एक बैंक में गया, उन्हें कुछ पैसा ट्रान्सफर करवाना था। यह स्टेट बैंक एक छोटे से कस्बे के छोटे से इलाके में था। एक घण्टा बिताने के बाद जब हम वहाँ से निकले तो यह पूछने से मैं अपने आप को रोक नहीं पाया।

अंकल क्यों ना हम घर पर ही इंटरनेट बैंकिंग चालू कर लें?

अंकल ने कहा- मैं ऐसा क्यों करूँ?

तो मैंने बताया कि अब छोटे-छोटे ट्रान्सफर के लिए बैंक आने की और एक घण्टा टाइम खराब करने की जरूरत नहीं, आप जब चाहें तब घर बैठे अपनी ऑनलाइन शॉपिंग भी कर सकते हैं। हर चीज बहुत आसान हो जाएगी। मैं बहुत उत्सुक था, उन्हें नेट बैंकिंग की दुनिया के बारे में विस्तार से बताने के लिए। इस पर उन्होंने पूछा- ''अगर मैं ऐसा करता हूँ तो क्या मुझे घर से बाहर निकलने की जरूरत ही नहीं पड़ेगी? मुझे बैंक जाने की भी जरूरत नहीं?''

मैंने उत्सुकतावश कहा- हाँ आपको कहीं जाने की जरूरत नहीं पड़ेगी और आपको किराने का सामान भी घर बैठे ही डिलिवर हो जाएगा और एमजॉन, फ्लिपकॉर्ट व स्नैपडील सबकुछ घर पर ही डिलिवरी करते हैं।

उन्होंने इस बात पर जो जवाब मुझे दिया उसने मुझे सोचने को विवश कर दिया कि ऑनलाइन शॉपिंग के समाज पर कितने दुष्प्रभाव हैं।

उन्होंने कहा- ''आज सुबह जब से मैं इस बैंक में आया, मैं अपने चार मित्रों से मिला और मैंने उन कर्मचारियों से बातें भी की जो मुझे जानते हैं। मेरे बच्चे दूसरे शहर में नौकरी करते हैं और कभी-कभार ही मुझसे मिलने आते जाते हैं, पर आज ये वो लोग हैं जिनका साथ मुझे चाहिए। मैं अपने आपको तैयार करके बैंक में आना पसंद करता हूँ, यहाँ जो अपनापन मुझे मिलता है उसके लिए ही मैं वक्त निकालता हूँ।''

''दो साल पहले की बात है, मैं बहुत बीमार हो गया था। जिस मोबाइल दुकानदार से मैं रिचार्ज करवाता हूँ, वो मुझे देखने आया और मेरे पास बैठकर मुझसे सहानुभूति जताई और उसने मुझसे कहा कि मैं आपकी किसी भी तरह की मदद के लिए तैयार हूँ।''

वो आदमी जो हर महीने घर आकर मेरे यूटिलिटी बिल्स ले जाकर स्वयं भर आता था,

जिसके बदले मैं उसे थोड़े बहुत पैसे दे देता था। उस आदमी के लिए कमाई का यही एक जरिया था और उसे रिटायरमेंट के बाद खुद को व्यस्त रखने का तरीका भी।

कुछ दिन पहले मोर्निंग वॉक करते वक्त अचानक मेरी पत्नी गिर पड़ी, मेरे किराने वाले दुकानदार की नज़र उस पर गई, उसने तुरन्त अपनी कार में डालकर उसको घर पहुँचाया, क्योंकि वह जानता था कि वह कहाँ रहती है।

अगर सारी चीजें ऑनलाइन ही हो गई तो मानवता, अपनापन, रिश्ते-नाते सब खत्म ही नहीं हो जाएँगे?

मैं हर वक्त अपने घर पर ही क्यों मँगाऊँ?

मैं अपने आपको सिर्फ अपने कम्प्यूटर से ही बातें करने में क्यों झोंकू?

मैं उन लोगों को जानना चाहता हूँ, जिनके साथ मेरा लेन-देन का व्यवहार है, जो कि मेरी निगाहों में सिर्फ दुकानदार नहीं हैं।

क्या एमजॉन, फ्लिपकॉर्ट या स्नैपडील ये रिश्ते-नाते, प्यार, अपनापन भी दे पाएँगे?''

फिर उन्होंने बड़े पते की एक बात कही जो मुझे बहुत ही विचारणीय लगी, आशा है आप भी इस पर चिन्तन करेंगे.....।

उन्होंने कहा कि घर बैठे सामान मंगवाने की सुविधा देने वाला यह व्यापार उन देशों में फलता-फूलता है जहाँ आबादी कम है और लेबर काफी मंहगी है।

अपने भारत जैसे 125 करोड़ की आबादी वाले गरीब एवं मध्यमवर्गीय देश में इन सुविधाओं को बढ़ावा देना आज तो नया होने के कारण अच्छा लग सकता है, पर इसके दूरगामी प्रभाव बहुत ज्यादा नुकसानदायक होंगे। देश में 80 प्रतिशत जो व्यापार छोटे-छोटे दुकानदार गली-मौहल्लों में कर रहे हैं वे सब बंद हो जायेंगे और बेरोजगारी अपने चरम सीमा पर पहुँच जायेगी। अधिकतर व्यापार कुछ गिने-चुने लोगों के हाथों में चला जायेगा और बाकी जनता बेकारी की ओर अग्रसर हो जायेगी।''

मैं उनको क्या जवाब दूँ, यह आजतक नहीं समझ पाया हूँ। वास्तव में आज समाज को ऑनलाइन व्यापार आदि प्रक्रियाओं के दूरगामी परिणामों पर विचार करने की आवश्यकता है।

(Whatsapp से संकलित)-अलीगढ़, जिला-टोंक (राज.)

दोष को करें सत्ताहीन

जब दोषी निज विवेक के प्रकाश में अपना दोष देख लेता है, तब बेचारा दोष सत्ताहीन हो जाता है। - *'मानव की माँग' पुस्तक से साभार*

चिन्तन

संथारा : अहिंसा-पालन की उत्कृष्ट साधना

श्री कैलाशमल दुग्गड़

राजस्थान उच्च न्यायालय के फैसले के बाद संथारा और संलेखना विषय को लेकर सारा जैन समाज चिंतित हुआ और इस पर गहन चिंतन करने के लिए विवश हुआ। कोर्ट के इस फैसले ने दो प्रश्न खड़े किए और अपना निर्णय दिया। पहला निर्णय कि संथारा-संलेखना भारतीय कानून के अन्तर्गत आत्महत्या के समकक्ष है। दूसरा निर्णय कि यह जैन धर्म का आवश्यक अंग नहीं है। यह बड़े हर्ष का विषय है कि सुप्रीम कोर्ट ने हमारी प्रार्थना को स्वीकार करते हुए इस फैसले पर रोक (Stay) लगा दी है। हमें तात्कालिक राहत मिल गई है, लेकिन जैन समाज को सुप्रीम कोर्ट में यह साबित करना होगा कि संथारा आत्महत्या नहीं है और जैन धर्म की साधना में यह एक आवश्यक अंग है।

इस संदर्भ में कई जैन विद्वानों ने संथारा और आत्महत्या के अन्तर को बताते हुए यह प्रमाणित करने की कोशिश की है कि संथारा और आत्महत्या में रात-दिन का अन्तर है। मैं समझता हूँ कि इसके साथ-साथ हमें यह भी साबित करना आवश्यक होगा कि संथारा सिर्फ हमारी आस्था ही नहीं हमारे धर्म के मूलभूत सिद्धान्तों की अत्यन्त आवश्यक परिपाटी है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि यह परिपाटी सदियों से चली आ रही है और इस साधना को अनेक साधकों ने अपनाया है। हमारा प्रयास यह होना चाहिए कि हम निर्विवाद रूप से यह साबित करें कि संथारा जैन धर्म का एक आवश्यक अंग है। लेकिन कोर्ट के इस फैसले के बाद एक सुखद आश्चर्य हुआ की देश के विभिन्न कोणों से इस फैसले के विरोध में सारे जैन समाज ने एक होकर हजारों लाखों की संख्या में मौन जुलूस के रूप में अपनी आपत्ति जताई। इस एकता को देखकर लगा कि सारे जैन समाज की मान्यताएँ एक ऐसी धुरी पर टिकी हैं, जिसके बारे में कोई संशय या विवाद नहीं है। वह मूलभूत सिद्धान्त है- अंहिसा। 'अंहिसा परमो धर्मः' पर हम सबकी पूरी आस्था व विश्वास है। संसार के हर प्राणी को जीने का अधिकार है, इसलिए हर मानव का और विशेषकर हर जैन का कर्त्तव्य है कि अपने जीवनयापन के लिए हिंसा में अधिकाधिक कमी करे। इसी अंहिसा का लक्ष्य रखते हुए हर जैन अपनी शक्ति के अनुसार इसकी परिपालना विभिन्न रूपों में करता है। श्रावक जीविकोपार्जन एवं पारिवारिक परिस्थितियों के कारण आंशिक रूप से इसकी परिपालना करता है। जैसे किसी भी परिस्थिति में मांसाहार नहीं करना और इसी अहिंसा की साधना हमारे साधु-साध्वी बहुत ही ऊँचे लक्ष्य के साथ करते हैं। साधु-साध्वी अपनी

दिनचर्या और जीवन में कम से कम हिंसा की परिपालना के लिए कितने ही कष्ट झेलते हैं। नंगे पांव और विवेक से चलते-फिरते हैं। भिक्षा लेकर आरम्भ-सभारम्भ की हिंसा से बचते हैं। रात्रिभोजन और पानी का पूर्ण त्याग करते हैं, सचित्त पदार्थों का त्याग करते हैं। ऐसे विभिन्न आयामों द्वारा अंहिसा की परिपालना करते हैं।

संथारा चरम लक्ष्य की वह स्थिति है, जिसमें साधक किसी भी तरह की जीव हिंसा एवं विराधना नहीं करना चाहता। वह सारे सांसारिक मोह को छोड़कर प्रकृति व पर्यावरण का संरक्षण करना एवं मात्र अहिंसा का पूर्ण उपासक बनकर रहना चाहता है और तब वह संथारा/संलेखना धारण करता है। इस प्रकार अहिंसा की साधना में उत्कृष्ट स्थिति तक पहुँचने का लक्ष्य संथारा है।

अब प्रश्न उठता है कि क्या किसी भी अच्छे लक्ष्य की प्राप्ति के प्रयास में प्राणों के उत्सर्ग होने की संभावना को आत्महत्या मान लिया जाए? अच्छे लक्ष्य की प्राप्ति के लिए जान का जोखिम उठाना कदापि आत्महत्या नहीं हो सकता है। अगर ऐसा होता तो एक सिपाही जो सीमा पर लड़ते हुए शत्रु का सामना करने के लिए आगे बढ़ता है और सामने दुश्मन का बड़ा काफिला है। मृत्यु निश्चित है, फिर भी वह देश की रक्षा के लिए अपने प्राणों का बलिदान दे देता है। क्या यह आत्महत्या मानी जाएगी? देश के लिए प्राणों की बाजी लगा देना देश के लिए बलिदान होगा, आत्महत्या नहीं होगी। कुछ अनावश्यक लक्ष्य की प्राप्ति के लिये भी जान की बाजी लगायी जाती है, पर उसको आत्महत्या का प्रयास नहीं माना जाता है। कारों की रेस एक खतरनाक शौक और खेल है। इस खेल में कितने ही लोग अपनी जान गंवा चुके हैं, फिर भी कार की रेस में लोग भाग लेते हैं और मौत का खतरा उठाते हैं। जानबूझकर मौत का खतरा उठाने पर भी इसे आत्महत्या का प्रयास नहीं माना जाता है।

माउण्ट एवरेस्ट विश्व का सबसे ऊँचा पहाड़ है। इसकी चढ़ाई बहुत कठिन है। इस पर चढ़कर अपना झण्डा फहराने के लिये काफी लोग तत्पर रहते हैं। इस प्रयास में कितने ही लोगों की जान जा चुकी है। फिर भी कई लोग आज भी अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिये अपनी जान जोखिम में डालकर इस पहाड़ की चढ़ाई करते हैं। क्या इस प्रक्रिया में आत्महत्या का प्रयास माना जायेगा? कई बार डॉक्टर रोगी की जान बचाने हेतु वेंटीलेटर के उपयोग की सलाह देता है। रोगी अपनी आर्थिक परिस्थितिवश अथवा अपनी धार्मिक आस्थावश वेंटीलेटर का उपभोग नहीं करना चाहता है, ऐसी स्थिति में रोगी आत्महत्या का दोषी नहीं माना जाता है। रोगी को अपनी इच्छानुसार इलाज करवाने का पूर्ण हक है। इन सब उदाहरणों में व्यक्ति मृत्यु की परवाह नहीं करते हुए अपने लक्ष्य की प्राप्ति हेतु ऐसा

कार्य एवं प्रयत्न करता है, जिसमें मृत्यु की भी सम्भावना है, फिर भी इन सब परिस्थितियों को आत्महत्या का प्रयास नहीं माना जाता है।

दूसरी ओर अहिंसा में पूर्ण विश्वास रखने वाले संथारा साधक को अहिंसा की चरम स्थिति की साधना करने का अधिकार नहीं देना कहाँ तक न्यायोचित है? अहिंसा का पालन हर जैन धर्म के अनुयायी का आवश्यक अंग है। जब जीवन में सामान्य लक्ष्य की प्राप्ति में मृत्यु की संभावनाओं को आत्महत्या का प्रयास नहीं माना गया, तब जीवन के उच्च आध्यात्मिक लक्ष्य की प्राप्ति को आत्महत्या कैसे करार दिया जा सकता है। गौरतलब है कि हमारा संविधान अपने धर्म के पालन की हमें पूर्ण स्वतन्त्रता देता है, तब हमें अहिंसा की इस साधना से रोकना कहाँ तक न्यायोचित है?

हमारे धर्म में सागारी संथारे की भी व्यवस्था है। सागारी संथारा कुछ समय तक अथवा कुछ परिस्थितियों में लिया जाता है। इसलिये संथारा सदैव मृत्यु के आने तक लेना आवश्यक नहीं है। यह एक साधना है। संथारा धारण करने वाला अगर अपनी इच्छा से संथारा को निरन्तर नहीं रखना चाहे तो उसे इस बात से रोकने का किसी को अधिकार नहीं है। इसलिये संथारा को आत्महत्या समझना सही नहीं है। संथारा अहिंसा के पालन की उत्कृष्ट साधना है और जैन धर्म का आवश्यक अंग है।

-अध्यक्ष, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर-302003 (राज.)

ज्ञान का दीप जलायें

श्री सुमेरसिंह मुणोत

दीपावली के दिन दीप जलाकर बाहर के अंधकार को जिस तरह मिटाते हैं, उसी तरह अपने अंतर के अधंकार को मिटाने के लिए ज्ञान का आश्रय लेना जरूरी है। बाहर से घरों को लीप-पोतकर साफ-सुथरा बना लेते हैं, किन्तु कभी हमने चिन्तन किया है कि हमारे अंतर्मन में तथा आस-पास इतना अंधकार क्यों है या फिर कभी स्वयं से पूछा है कि मैं अधंकार में क्यों जी रहा हूँ, क्या यह अंधकार किसी भी धातु के दीपक से मिटाया जा सकता है? प्रश्न अनेक हैं, लेकिन उत्तर सिर्फ एक ही है कि अपनी चैतन्य ज्योति को प्रज्वलित कर स्वयं दीप की भाँति बनें। जिस तरह दीपक की लौ ऊपर की ओर उठती है, ठीक उसी तरह हमारे जीवन की ज्योति भी ऊँची होनी चाहिए। हमारा मन तत्त्वहीनता की अंधेरी गलियों में भटक रहा है, इसलिए हमें स्वयं अपने अंतर के प्रकाश को दीपायमान करना है। आप जागे तो जग जागा। अंधेरा अज्ञान का प्रतीक है। दीप प्रज्वलन करना अज्ञान से ज्ञान की ओर बढ़ने का आह्वान है।

-'मुणोत निवास' 1051, चौथी मेन रोड़, के.एन.एक्सटेंशन, यशवन्तपुर, बैंगलोर (कर्नाटक)

काव्य

वीर प्रभु की अन्तिम वाणी (16)

मधुर व्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा.

श्रद्धेय मुनिश्री द्वारा रचित यह पद्यानुवाद सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के कार्याध्यक्ष एवं उत्कृष्ट कवि श्री सम्पतराजजी चौधरी-दिल्ली द्वारा संशोधित-सम्पादित है।-**सम्पादक**

(तर्ज:- गुण सौरभ से रहे महकता, ऐसा अपना घर हो)

वीर प्रभु की अन्तिम वाणी, सुनलो और सुनालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।
उत्तराध्ययन में गुंजित होती, प्रभु शिक्षा अपनालो।
जीवन धन्य बनालो.....।।

(अट्ठाईसवाँ अध्ययन : मोक्षमार्ग गति)

ज्ञान दर्श चारित्र तप को, मोक्ष मार्ग बतलाया,
वरदर्शी अरिहन्तों ने, निज अनुभव से फरमाया,
इसी मार्ग का आराधन कर, सिद्ध गति को पालो।।447।।
पंचविध ज्ञान कहा जिनवर ने, श्रुत आभिनिबोधिक,
अवधि-मन; केवल को जानो, अर्थ बड़ा ही मार्मिक,
द्रव्य गुणों और पर्यायों की, इनसे समझ बनालो।।448।।
गुण का जो आश्रय होता है, उसे द्रव्य हैं कहते,
जो एक द्रव्य के आश्रित हैं, उनको गुण हैं कहते,
आश्रित हैं जो द्रव्य-गुणों के, पर्याय उसे कहालो।।449।।
धर्म-अधर्म आकाश काल, पुद्गल है अरु चेतन,
षड्द्रव्यात्मक लोक कहा है, वरदर्शी का प्रवचन,
पहले तीनों एक-एक हैं, बाकी अनन्त कहालो।।450।।
धर्म का लक्षण गति कहा, अधर्म का है स्थिरता,
सब द्रव्यों का भाजन नभ है, लोक अलोक समाता,
परिवर्तन है काल का लक्षण, इनका बोध करालो।।451।।
जीवों के लक्षण को जानो, ज्ञान-दर्शन और चरित,
तप-वीर्य-उपयोग भी उनमें, होते हैं सब संयुक्त,

जीव-अजीव में भेद की रेखा, लक्षण से समझालो।।452।।
पुद्गल के भी लक्षण जानो, शब्द-वर्ण और रस को,
गन्ध-तिमिर-उद्योत-प्रभा, आतप छांव फरस को,
द्रव्य नित्य पर्याय अनित्य, इसका ज्ञान करालो।।453।।
जीव-अजीव-बन्ध अरु आश्रव, पाप पुण्य अरु संवर,
निर्जरा-मोक्ष तत्त्व ये नौ हैं, करना ज्ञान है हितकर,
साधक-बाधक तत्त्व जानके, अपना साध्य सम्भालो।।454।।
जिन-भाषित इन नव तत्त्वों पर, जो भी श्रद्धा करता,
प्राप्त उसे समकित होता है, हेतु मोक्ष का बनता,
निष्ठा से अनुशीलन करके, आत्म-भाव विकसालो।।455।।
दस प्रकार कहे समकित के, निमित्त रुचि बतलाये,
व्यवहार नय से रुचि भेद हैं, प्राज्ञों ने समझाये,
निश्चय से समकित निज गुण है, मोह छोड़ प्रगटालो।।456।।
अपनी रुचि से नौ तत्त्वों को, जाने श्रद्धा करते,
निसर्ग रुचि उसको कहते हैं, सहज भाव मन धरते,
सत्य वही जो कहा प्रभु ने, ऐसी श्रद्धा बसालो।।457।।
केवलज्ञानी या अन्यों से, सुनकर श्रद्धा करते,
उपदेश रुचि उसको कहते हैं, सत्य ज्ञान मन धरते,
मोक्ष-मार्ग को सुनकर के भी, श्रद्धा भाव जगालो।।458।।
राग-द्वेष से मुक्त पुरुष की, आज्ञा में रुचि रखते,
तत्त्वों पर उनकी श्रद्धा को, आज्ञा रुचि हैं कहते,
आप्तजनों में श्रद्धा रखकर, अन्तस् वहाँ झुकालो।।459।।
अंग शास्त्र या अंग बाह्य का, अवगाहन जो करते,
उनसे जो समकित मिलती, उसे सूत्र रुचि हैं कहते,
सम्यग्दर्शन प्राप्ति के हित, आगम सिन्धु नहालो।।460।।
ज्यूं एक बीज के बोने से, अनेक बीज मिल जाते,
वैसे ही जब एक हेतु से, तत्त्वों में श्रद्धा पाते,
इसको बीज रुचि कहते हैं, अन्तःकरण जगालो।।461।।
ग्यारह अंग प्रकीर्णक अरु, दृष्टिवाद को जाने,

अर्थ सहित अधिगत करने को, अभिगम रुचि माने,
तत्त्वज्ञान को विकसित करने, आगम मर्म पचालो।।462।।
प्रमाण और नय की विधि से, द्रव्य भाव सब जाने,
विस्तार रुचि कहते हैं इसको, सम्यग्दर्शन पाने,
प्रत्यक्ष-परोक्ष निरूपण करके, सत्य तथ्य निकालो।।463।।
चारित्र और क्रिया में जो, निष्ठा से रुचि रखते,
पाते इससे समकित को, क्रिया रुचि हैं कहते,
शुद्ध क्रिया के अनुष्ठान से, दृढ़ निष्ठा अपनालो।।464।।
नहीं कुशल वो जिन प्रवचन में, परमत को ना जाने,
मिथ्यात्व का आग्रह नहीं हो, अल्पबोध से माने,
संक्षेप रुचि उसको कहते हैं, श्रद्धा अटल जगालो।।465।।
जिन कथित द्रव्य श्रुत चरित, धर्म में श्रद्धा रखते,
ऐसे जीवों के समकित को, धर्म रुचि हैं कहते,
जिन प्रवचन में श्रद्धा रखकर, सम्यग्दर्शन पालो।।466।।
तीन गुणों के प्रतिपादन से, सम्यक्त्वी पहचाने,
तत्त्ववेत्ता की सेवा करते, तत्त्व स्वरूप बखाने,
मिथ्यात्वी संसर्ग छुड़ाकर, समकित दृढ़ बनालो।।467।।
सम्यक्त्व बिना चारित्र नहीं, चारित्र बिना भी दर्शन,
या तो दोनों युगपद् होते, या पहले होता दर्शन,
मोक्ष महल की पहली सीढ़ी, इस पर कदम बढ़ालो।।468।।
दर्शन बिना ज्ञान नहीं होता, ज्ञान बिना चर्या ना,
मोक्ष मिले नहीं चरणहीन को, बिना मोक्ष शान्ति ना,
कर्म मुक्ति होती सद्गुण से, दृढ़ विश्वास बनालो।।469।।
आठ अंग कहे समकित के, अन्तर के हैं चारों,
शेष चार बहिरंग हैं जानो, समकित को उर धारो,
सम्यग्ज्ञान इन्हीं से होता, मन में इन्हें सजालो।।470।।
संदेह नहीं हो जिनवचनों में, पर दर्शन नहीं पाले,
शंका नहीं धर्म के फल में, मूढ दृष्टि ना चाले,
निजआतम के गुण ये चारों, कर पुरुषार्थ जगालो।।471।।

गुणीजनों की करे प्रशंसा, जिनशासन चमकाये,
धर्म मार्ग में अचल करे फिर, वत्सल भाव बहाये,
बाहर के ये गुण हैं चारों, धर्म संघी प्रतिपालो।।472।।
चारित्र प्रथम है सामायिक, छेदोपस्थापन दूजा,
तीजा है परिवार विशुद्धि, सूक्ष्मसम्पराय चौथा,
यथाख्यात पाँचवाँ जानो, कर्म रिक्त कर डालो।।473।।
दो प्रकार के तप कहे हैं, बाह्य और आभ्यन्तर,
छःछः भेद कहे दोनों के, सम्यक् पालन हितकर,
विशुद्ध बनाता आत्म तत्त्व को, बिना कामना पालो।।474।।
जीव ज्ञान से तत्त्व जानता, दर्शन से श्रद्धा करता,
कर्म-निरोध चरण से होता, तप से शुद्धि धरता,
क्षय करके संचित कर्मों का, सिद्धि पद को पालो।।475।।

(क्रमशः)

संकलनकर्ता- नवरतन डागा, पूर्व महामंत्री, अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, 'लक्ष्य' 76, नेहरुपार्क, बख्तसागर स्कीम, जोधपुर-342003 (राज)

रजत वर्ष है छाया हर्ष है

व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभाजी म.सा.

स्वहित साधक, परहित चिन्तक, गुरुवर हीरा हमारे।
सद्गुण धारक, दोष निवारक, गुरुवर हीरा हमारे।।टेर।।
गुरु ही ब्रह्मा, गुरु ही विष्णु, गुरु ही प्राण पियारे।
गुरु हस्ती के चरणों में, आ जीवन बगिया संवारें।।1।।
आणाए धम्मो आणाए तवो सूत्र जीवन में उतारें।
आज्ञापालक! हे आराधक, आज्ञा से आत्मा निखारें।।2।।
शिथिलाचार का ना है समर्थन, उत्कृष्टता का ना है प्रदर्शन।
सदाचार के सच्चे पालक, पापों से हमें उबारें।।3।।
अष्ट मंगल है अष्ट सम्पदा, छत्तीस गुण को धारे।
'सरल' मना है, साधकता है, पाप-कर्म निवारे।।4।।
रजत वर्ष है छाया हर्ष है, आचार्य हीरा से संघ उत्कर्ष है।
दिल के द्वार से स्वर ये निकले, युग-युग जीओ गुरु हमारे।।5।।

कविता

रे मन! अब आराम करने दे

श्री आर.प्रसन्नचन्द चोरडिया

रे मन! तू बिना कहे, बिना बताये दूर कहाँ चला जाता है?
रोकते हैं पर तू हाथ कहाँ आता है?
उड़ जाता है अनन्त आकाश में नज़र नहीं आता है।
हो जाय जब मर्जी तब वापिस लौट आता है।
माना तू है शहंशाह अपनी मर्जी का, फिर भी थोड़ा सा संयम,
आँख की शर्म रखना जरूरी है।
इस धरती पर आये हैं तो सभी के साथ सीमा में रहना जरूरी है।
रे मन! कभी तू गुलाल की तरह रंग बिखेरता आकाश में छा जाता है।
मस्ती में आ खुशी के चंग बजाता है।
कभी-कभी निराशा के अंधेरे में घिरा एकान्त कोने में बैठ मातम मनाता है।
क्या कहें तुझे, समझ में आता नहीं।
तू हरफन मौला है, पार तेरा कोई पाता नहीं।
कभी कलकल बहती जलधारा के साथ जुड़ जाता है।
कभी-कभी पत्थर की तरह किसी बात पर अड़ जाता है
तो कभी-कभी नरम फूलों की तरह,
कोमल टहनियों की तरह मुड़ जाता है।
तेरा क्या है, तू कहीं भी चला जाता है,
कभी सुन्दरियों की बातों में रम जाता है
तो कभी संन्यासियों की पांत में बैठ जाता है।
तिलक लगा हाथों में मंजीरे लिये, भजन गुनगुनाता है।
अब तो तू हमारा कहना मान ले मन,
क्यों फिरता है इधर-उधर छोड़कर हमारा तन, रे मन!
रे मन! तू क्या है, आज तक कोई समझ नहीं पाया
तू एक पल में बन जाता है अपना, दूसरे पल हो जाता है सपना।।

कभी एक पल में क्रोध का उफान आता है
उस समय तुझे कोई नज़र नहीं आता है
पड़ते हैं जब शान्ति के छींटें
तब बड़ी मुश्किल से तू काबू में आता है।
रे मन! तू एक पल में अपनों से दूर चला जाता है।
छल प्रपंच रचाता है सताता है, उस समय विवेक-अविवेक का
ध्यान नहीं रह पाता है।
रे मन मेरे! मेरे भाई अच्छा सोचना अच्छा करना
इस चराचर में जो भी मिले, सभी से प्यार करना, मिलकर रहना
कुछ लोग जो तुझे काबू में रखते हैं
वे शान्ति से अपने कदम होले-होले इस धरा पर धरते हैं।
उन्हीं चरणों को पूजा जाता है, उन्हीं पलों में धरती पर स्वर्ग उतर जाता है।
हम तुम्हारा आदर से ध्यान लगाते हैं
आँखे मूँद कर पद्मासन में, प्यार से बुलाते हैं
तू भी आराम कर हमें भी आराम करने दे,
साथ में रहते आये हैं साथ निभाने दे।
जगमगाती दिव्य ज्योति को पाने दे
रे मन! आलोकित पथ को करने दे,
पाया है, जन्म मानव का उसे सफल बनाने दे
लो जग गई आत्मा तुम्हारी यह श्री मुख से कहने दे
अपने कानों से सुनने दे।
रे मन! अब आराम करने दे।

-52, कालाथी पिल्लै, स्ट्रीट, चेन्नई-600079 (तमिलनाडु)

आवश्यकता

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ को दक्ष हिन्दी आशुलिपिकों की आवश्यकता है। अपनी योग्यता-विवरण के साथ निम्नांकित पते पर आवेदन करें।- पूरणराज अबानी, महामंत्री, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001 (राज.), फोनः 0291-2636763

स्वास्थ्य-विज्ञान

रंग चिकित्सा

डॉ. चंचलमल चोरडिया

रंगों का हमारे स्वास्थ्य पर प्रभाव

विभिन्न रंगों का हमारे जीवन पर अत्यधिक प्रभाव पड़ता है। प्रत्येक रंग के अपने विशिष्ट गुण होते हैं। आकाश नीला ही क्यों? सभी वनस्पतियाँ पेड़-पौधे एवं उन पर लगने वाले फल प्रारम्भ में हरे ही क्यों होते हैं? आँखों की शल्य चिकित्सा के पश्चात् हरे रंग की पट्टी ही आँखों पर क्यों लगाई जाती है, अन्य रंगों की क्यों नहीं? शल्य चिकित्सा करते समय दुनियाँ भर के शल्य चिकित्सक प्राय: हरी पोशाक ही क्यों पहनते हैं? रंगों से सम्बन्धित ऐसे विविध प्रश्नों पर चिन्तन करने से हमारे जीवन में रंगों की उपयोगिता समझी जा सकती है। रंग हमारे आकर्षण का मुख्य स्रोत होते हैं। रंगों के सही संतुलन और तालमेल से बने दृश्य हमें आनन्ददायक लगते हैं। इसी कारण वस्त्रों का चयन, भवन की दीवारों के रंगों के चयन, सजावट आदि में रंगों की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। आँखों से दिखने वाले अलग-अलग प्राकृतिक दृश्यों, कपड़ों, पदार्थों, चित्रों का सही तालमेल हमारे आकर्षण का मुख्य कारण होता है। हमें आनन्द, खुशी, प्रसन्नता प्रदान करता है। इसके विपरीत गलत रंगों का तालमेल हमें अरुचिकर लगता है। कारण स्पष्ट है कि रंग प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से हमारे जीवन को प्रभावित करते हैं। शरीर के प्रत्येक अंग और अवयव को अलग-अलग रंगों की विशेष आवश्यकता होती है। इस प्रकार रंग का हमारे जीवन में बहुत महत्त्व होता है। बिना रंग-संतुलन के व्यक्ति जीवित नहीं रह सकता। शरीर में किसी भी अवयव के रंग का असंतुलन रोग का कारण होता है। यदि शरीर में रंगों को आवश्यकतानुसार किसी विधि द्वारा संतुलित कर दिया जाये तो व्यक्ति सभी स्तरों पर स्वस्थ एवं रोग मुक्त हो सकता है।

स्वास्थ्य हेतु प्रचलित रंग-उपयोग की विधियाँ

आहार विशेषज्ञ शरीर के अवयवों के असंतुलन को दूर करने हेतु अन्य आवश्यक उपचारों के साथ-साथ उनको पुष्ट करने वाले रंगों के अनुसार फल, सब्जियाँ, अनाज तथा खाद्य पदार्थ खाने का परामर्श भी देते हैं। पुष्प चिकित्सक अलग-अलग रंगों के पुष्पों के अर्क का उपचार हेतु दवा के रूप में उपयोग करते हैं। रत्न चिकित्सक अलग-अलग रत्नों से निकलने वाली अलग-अलग रंगों की तरंगों के आधार पर उन रत्नों का शरीर के विशेष स्थानों पर स्पर्श करवाकर असाध्य रोगों का उपचार करने का दावा करते हैं। ज्योतिष विशेषज्ञ भी अलग-अलग ग्रहों के दुष्प्रभावों को कम करने हेतु अलग-अलग अंगुलियों

में, अलग-अलग धातुओं के साथ आवश्यकतानुसार क्षमता के रत्नों को अंगुलियों में धारण करने का परामर्श देते हैं। स्फटिक चिकित्सक विविध प्रकार के स्फटिकों को शरीर में धारण करवा उनसे निकलने वाली अलग-अलग रंग की तरंगों से रोगों का उपचार कर स्वास्थ्य लाभ का दावा करते हैं। ध्यान साधक शरीर में अलग-अलग प्राण ऊर्जा के केन्द्रों पर सम्बन्धित रंगों का ध्यान कर अपना आत्मबल बढ़ाने का कथन करते हैं। आयुर्वेद की अनेक दवाइयाँ शरद पूर्णिमा की चाँदनी में ही बनाई जाती है। उस दिन रात भर चाँदनी की शीतलता एवं रंग से प्रभावित अनेक खाद्य पदार्थ आज भी स्वास्थ्यवर्धक औषधि रूप में लिये जाते हैं। सूर्य किरण चिकित्सक विविध प्रकार के सूर्य ऊर्जित रंगों की दवायें बना अथवा रोग ग्रस्त भाग पर सूर्य की किरणें सीधी डालकर सभी प्रकार के रोगों का उपचार करते हैं। इस प्रकार शरीर में रंगों की तरंगों के प्रकम्पनों अथवा अन्य विधियों द्वारा उनका आवश्यकतानुसार उपयोग करने से हम स्वस्थ एवं रोग मुक्त जीवन जी सकते हैं।

रंगों द्वारा आन्तरिक भावों की पहचान

रंग हमारे शारीरिक, मानसिक और भावानात्मक स्वास्थ्य को प्रभावित करते हैं। हम प्रतिक्षण श्वास के माध्यम से जिन पुद्गलों को ग्रहण करते हैं, वे रंग, गंध, रस, स्पर्श आदि से युक्त होते हैं। हमारे भावों का रंग के साथ गहन संबंध होता है। शरीर एवं मन के साथ-साथ वाणी के प्रकम्पन भी रंगीन होते हैं। प्रत्येक व्यक्ति के आभा मंडल के चित्र किरिलियन केमरे से लिये जाये तो उनका रंग अलग-अलग होता है। उसके रंग भाव-परिवर्तन के साथ बदलते रहते हैं। भाव और आभा मंडल का गहरा संबंध होता है। भाव शुद्धि द्वारा आभा मंडल को विशुद्ध बनाया जा सकता है तथा आभा मंडल के रंगों से भावों को जाना जा सकता है। शरीर में भी रोग ग्रस्त भाग का आभामण्डल विकृत हो जाता है। सभी व्यक्तियों का रंग रूप एक सा क्यों नहीं होता? शरीर में भी किसी के बाल काले तो किसी के सफेद, तो किसी के अन्य अलग-अलग रंगों के क्यों होते हैं? रक्त लाल ही क्यों होता है?

सूर्य किरणों में विभिन्न रंग

सूर्य की किरणों में सात दृश्यमान एवं दो अदृश्यमान रंगों की किरणें होती हैं। दृश्यमान सात रंग निश्चित क्रम से होते हैं, जिन्हें इन्द्रधनुष के समय अथवा विशेष प्रयोगों द्वारा आसानी से देखा जा सकता है। विभिन्न रंगों का मानव के शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य पर गहरा प्रभाव पड़ता है। प्रत्येक रंग के अपने विशेष स्वास्थ्यवर्धक गुण होते हैं। सूर्य की किरणों से होने वाले सात रंग बैंगनी (Violet), नीला (Indigo), आसमानी (Blue), हरा (Green), पीला (Yellow), नारंगी (Orange), लाल (Red) के क्रम से होते हैं।

पहले तीन रंग शरीर में गर्मी को नियंत्रित करने तथा कष्ट में शांति पहुँचाने में सहायक

होते हैं। ये रंग शरीर के अवयवों में रासायनिक परिवर्तन करने में अहं भूमिका निभाते हैं। अत: सूर्य की इन तीन रंग की किरणों तथा पराबैंगनी किरणों को रासायनिक किरणें भी कहते हैं। मध्य वाला हरा रंग गर्मी एवं सर्दी के प्रभाव को संतुलित रखने में सक्षम होता है। अन्तिम तीन रंग शरीर में गर्मी पहुँचाने वाले होते हैं। प्रात: चन्द मिनटों तक उदित सूर्य को खुली आँखों से देखने से शरीर में आवश्यक रंगों की पूर्ति हो जाती है एवं शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ने लगती है। इसके अतिरिक्त सूर्य की किरणों को अलग-अलग रंगों के माध्यम से विभिन्न पदार्थों को ऊर्जित करने से वे पदार्थ दवा बन जाते हैं, जिनका रोगों के उपचार हेतु उपयोग किया जा सकता है।

कपड़ों एवं वातावरण के रंगों का प्रभाव

लाल, पीला और नारंगी रंग गरम प्रकृति का होता है। अत: गर्मी की मौसम में इन रंगों के कपड़े नहीं पहनना चाहिए। नीले, हरे, बैंगनी और आसमानी कपड़ों का प्रयोग गर्मी में हितकर होता है। धूप के चश्मे नीले या हरे रंग के अधिक शांतिदायक होते हैं। शयनागर की दीवारें और खिड़कियों का रंग भी ठण्डी प्रकृति वाले रंगों का होने से निद्रा अच्छी एवं गहरी आती है। इसके विपरीत यदि कमरे की दीवारों का रंग लाल हो या लाल बल्ब जल रहा हो, वहाँ निद्रा बराबर नहीं आती। ऐसे लाल वातावरण में रहने वालों को क्रोध अधिक आता है। ठण्डे रंगों के चिन्तन और ध्यान से गर्मी का प्रभाव कम होता है।

सर्दी के मौसम में गर्म प्रकृति के रंगों का उपयोग गर्मी बढ़ाने में सहायक होता है। जिन देशों में सर्दी संबंधी रोगियों का प्रतिशत अधिक होता है, उनके लिए लाल, पीले, नारंगी रंग के कपड़े ज्यादा लाभप्रद होते हैं। पगथली ठण्डी होती हो तो लाल मौजों का प्रयोग करना चाहिए। गठियाँ के रोगी अथवा जोड़ों में दर्द वालों को लाल कपड़े ज्यादा लाभप्रद होते हैं। सर्दी की मौसम में ठण्डक से सुरक्षा हेतु रजाई के अस्तर का रंग लाल रखना चाहिए। चर्म रोगियों को हरे रंग के कपड़े लाभदायक होते हैं। टोपी या हेल्मेट के अन्दर का भाग हरा रखने से मस्तिष्क शांत रहता है। शरीर की गर्म और ललाईयुक्त सूजन वाले भाग पर नीला और सफेद मिश्रित कपड़ा पहनना चाहिए। पुराने तथा सख्त सूजन वाले स्थान पर लाल कपड़ा पहनना चाहिए।

आयुर्वेद के त्रि-दोष सिद्धान्त से समानता

आयुर्वेद के आधारभूत त्रिदोष सिद्धान्त के अनुसार वात, कफ एवं पित्त रूपी तीन दोषों का असन्तुलन ही रोग उत्पत्ति का प्रमुख कारण होता है। रंग-चिकित्सा में कफ प्रधान अथवा सर्दी के कारण होने वाले रोगों में नारंगी तथा लाल रंग का, वात प्रधान या शरीर में गन्दगी बढ़ जाने एवं उसका सही विसर्जन न होने से उत्पन्न होने वाले रोगों में हरे रंग का

तथा पित्त प्रधान अथवा गर्मी की अधिकता से होने वाले रोगों में नीले रंग के विधिवत् प्रयोग द्वारा कफ, वात एवं पित्त को संतुलित कर रोगी को रोगमुक्त किया जा सकता है।

सूर्य किरणों द्वारा उपचार का वर्तमान में प्रचलित स्वरूप

वर्तमान में सूर्य किरण चिकित्सा में सात रंगों के स्थान पर प्रत्येक समूह में से एक रंग का ही उपयोग करने का अधिक प्रचलन है। जिससे चिकित्सा पद्धति अधिक सरल बन गयी है। प्रथम तीन रंगों के समूह में से प्राय: नीला रंग, अंतिम रंगों के समूह में से नारंगी एवं बीच के हरे रंग का अधिकतर उपयोग किया जाता है। परन्तु विशेष एवं लम्बे रोगों की स्थिति में बैंगनी एवं लाल रंग का भी उपयोग किया जा सकता है। रोगी के लिये कौनसी किरणों का उपचार किया जाये, यह रोग की स्थिति पर निर्भर करता है।

नारंगी रंग की विशेषताएँ

आमाशय, तिल्ली, लीवर, आंतों, फेंफड़ों व हाथ पैर के रोगों में इसका अधिक अनुकूल प्रभाव पड़ता है। यह आयोडीन की कमी को मिटाता है एवं रक्त में लाल कण बढ़ाता है। मांसपेशियाँ स्वस्थ बनाता है और झुर्रियां मिटाने में सहायक होता है। रक्त संचालन एवं स्नायु संस्थान को सक्रिय बनाता है। गतिहीन अंगों की जड़ता दूर कर उसमें गति लाने की क्षमता रखता है। भूख न लगना, गैस, जोड़ों का दर्द, खांसी, दमा, बच्चों की बिस्तर में पेशाब करने की आदत, निम्न रक्तचाप, स्नायु दुर्बलता आदि रोगों को मिटाने की अद्‌भुत क्षमता रखता है। सुस्ती आने, जम्भाइयाँ लेने, अधिक नींद आने, नाखून नीले पड़ जाने आदि रोगों में नारंगी रंग काफी लाभप्रद होता है। नारंगी रंग की दवा का प्रयोग सदैव भोजन या नाश्ते के 15 मिनट बाद और 30 मिनट के भीतर करना चाहिये।

हरे रंग की विशेषताएँ

हरा रंग गर्म और ठण्डे रंग के बीच का रंग होने से गर्मी तथा सर्दी के प्रभावों को संतुलित करता है। यह शरीर की गन्दगी बाहर निकालने, शरीर का ताप सन्तुलित रखने, कैंजी मिटाने तथा खून को साफ करने में विशेष सहायक होता है। शरीर के विषैले तत्त्वों को शरीर से बाहर निकाल फैंकने की अद्‌भुत क्षमता के कारण छूत की बीमारियों के निवारण में यह बहुत ही उपयोगी होता है।

अल्सर, टाइफाइड, चेचक, सूखी खाँसी, खुले घाव, दाद, पथरी, रक्तचाप, मिर्गी, हिस्टीरिया, मुंह में छाले तथा शरीर के किसी भी भाग में पीब पड़ने की अवस्था में उनको नष्ट करने में काफी लाभप्रद होता है। आँतों, गुर्दों, मूत्राशय, त्वचा, कमर व पीठ के नीचे के अंगों से संबंधित रोगों में हरा रंग अधिक प्रभावशाली होता है। शरीर में इस रंग की कमी

से विभिन्न चर्म रोग तथा दोषों की सम्भावनाएँ बढ़ जाती हैं। चर्म रोग में हरा पानी पीने तथा सूर्य तप्त नीला तेल रोग ग्रस्त त्वचा पर अथवा दाद पर लगाने से रोग नष्ट हो जाता है। हरे रंग की दवा का प्रयोग सदैव प्रात:काल खाली पेट या आधा घण्टे से एक घण्टे भोजन के पहले करना चाहिये।

नीले रंग की विशेषता

नीला रंग ठण्डा, शान्तिदायक, कीटाणुनाशक एवं सिकुड़न वाले स्वभाव का होने से गर्मी के प्रकोप से उत्पन्न रोगों में विशेष प्रभावशाली होता है। कीटाणुनाशक होने के कारण मवाद पड़ने की अवस्थाओं में काफी लाभप्रद होता है। शरीर की गर्मी, हाथ पैरों की जलन, प्यास की अधिकता, तेज बुखार, हैजा, अजीर्ण, दस्त, अनिद्रा, मिर्गी, पागलपन, हिस्टीरिया, उच्च रक्तचाप, मूत्रावरोध, मूत्र में जलन, शरीर में किसी प्रकार का जहर फैल जाना, जैसे रोगों में नीले रंग की दवा काफी लाभप्रद होती है। नीले रंग की दवा शरीर के अन्दर अथवा बाहर से बहने वाले खून को बन्द करती है। गर्मी से गला पड़ने पर नीले पानी के गरारे से लाभ होता है। गले, गर्दन, मुँह, मस्तिष्क एवं सिर से संबंधित रोगों पर नीले रंग का अधिक अनुकूल प्रभाव पड़ता है। नीले रंग का प्रयोग सदैव भोजन या नाश्ते के आधा घण्टे पूर्व करना चाहिए।

लकवा, सन्धिप्रवाह, छोटे जोड़ों का दर्द (गठिया), विभिन्न वात, कम्पनजन्य रोग व ठण्ड से उत्पन्न विकार और अधिक कैंज की शिकायत में नीले रंग का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

चीनी पंच तत्त्व एवं उनसे सम्बन्धित प्रमुख ऊर्जाओं का रंगों से संबंध

शरीर में हरे रंग के असंतुलन से यकृत-पित्ताशय एवं उससे सम्बन्धित प्रमुख वायु ऊर्जा, लाल रंग के असंतुलन से हृदय-छोटी आंत एवं उससे सम्बन्धित ताप ऊर्जा, पीले रंग के असंतुलन से तिल्ली (Spleen)-आमाशय एवं उससे सम्बन्धित नमी ऊर्जा, सफेद रंग के असंतुलन से फेंफड़े-बड़ी आंत एवं उससे सम्बन्धित शुष्क ऊर्जा तथा कृष्ण रंग के असंतुलन से गुर्दे-आमाशय एवं उससे सम्बन्धित ठण्डक ऊर्जा असंतुलित हो जाती है और सम्बन्धित अंग रोगग्रस्त होने लगते हैं। रंगों की आवश्यकतानुसार तर्जनी और मध्यमा अंगुलि में बटन चुम्बकों द्वारा बियोल मेरेडियन में सम्बन्धित ऊर्जा को संतुलित कर सम्बन्धित अंगों के रोगों का रंग संतुलन प्रभावशाली ढंग से किया जा सकता है। शरीर में किसी भी रंग की आवश्यकता से अधिक उपस्थिति के समय वह रंग अच्छा नहीं लगता जबकि शरीर में किसी रंग की कमी के समय उस रंग के प्रति आकर्षण बढ़ जाता है। वह रंग अपेक्षाकृत अच्छा लगने लगता है। जैसे किसी व्यक्ति को लाल रंग अधिक अच्छा लगता

है अथवा अधिक खराब लगता है तो, दोनों ही स्थितियों में रक्त सम्बन्धित रोग होने की सम्भावना रहती है। इतना सही, सरल निदान एवं प्रभावशाली उपचार अन्य चिकित्सा पद्धतियों में प्राय: संभव नहीं होता।

शरीर में त्वचा के रंग परिवर्तन का स्वास्थ्य पर प्रभाव

त्वचा के रंग में परिवर्तन के आधार पर भी प्राण ऊर्जा के असंतुलन का सरलता से निदान किया जा सकता है। यदि त्वचा के किसी भाग में हरापन आ गया हो तो शरीर के उस भाग में वायु ऊर्जा का असंतुलन होने की प्रबल संभावना रहती है। इसी प्रकार शरीर के किसी भाग में त्वचा लाल हो जाने पर उस भाग में ताप ऊर्जा के असंतुलन, पीली पड़ जाने पर नमी ऊर्जा, मन्द कान्ति या फीका पड़ जाने पर शुष्क ऊर्जा और काला पड़ जाने पर संबंधित भाग में ठण्डक ऊर्जा का असंतुलन, रोग का कारण हो सकता है।

अत: उपर्युक्त अंगों से संबंधित रोगों की अवस्था में यदि किसी विधि द्वारा अभाव वाले संबंधित रंगों की तरंगों को प्रवाहित किया जाये तो तुरन्त स्वास्थ्य लाभ होता है। उसके लियें संबंधित रंग की किरणों को विद्युत बल्ब के माध्यम से संबंधित अंगों पर डाला जाता है। यदि वे अंग कमजोर अथवा निष्क्रिय हों तो संबंधित रंगों की किरणें उन पर डालने से अंग सक्रिय एवं शक्तिशाली होने लगते हैं। यदि रोग का कारण अंगों की आवश्यकता से अधिक सक्रियता हो तो संबंधित रंगों के प्रभाव को कम करने वाले रंगों की किरणें संबंधित भाग पर डालने से रोग मुक्त हुआ जा सकता है।

रंग संतुलन की स्वावलम्बी विधि

प्रत्येक मनुष्य के शरीर के चारों तरफ एक आभामंडल होता है। उसके रंग भाव परिवर्तन के साथ बदलते रहते हैं। भाव और आभामंडल का गहरा संबंध होता है। अत: भावशुद्धि द्वारा आभामंडल को विशुद्ध किया जा सकता है। इसी सिद्धान्त के अनुसार रंग की कमी से रोग हों तो उसी रंग के वातावरण की कल्पना करते हुये श्वास लेने से शरीर में उस रंग की पूर्ति होने लगती है। परन्तु रोग का कारण यदि किसी रंग की अधिकता से होता हैं तो उस रंग के चिन्तन के साथ रेचक करने से लाभ होता है। साथ ही उस रंग के प्रभाव को कम करने वाले रंग की अपने आसपास के वातावरण में कल्पना कर पूरक करने से अच्छे परिणाम आते हैं।

लाल रंग बढ़ाने से नीले रंग से सम्बद्ध विकार, हरा रंग बढ़ाने से बैंगनी रंग से होने वाले तथा नीला रंग बढ़ाने से लाल रंग की अधिकता से होने वाले विकार दूर हो जाते हैं। शरीर के किसी भाग के उपचार हेतु लाल रंग की किरणों से उपचार करते समय, मस्तिष्क को

आसमानी रंग की किरणें साथ-साथ अवश्य देनी चाहिये। रंग चिकित्सा से उपचार करते समय रोगी का स्वभाव उसके रंगों के प्रति रुचि या अरुचि, मौसम, उसके द्वारा पहनी जाने वाली पोशाक, आसपास दृष्टिगत होने वाले रंग, भोजन में लिए जाने वाले पदार्थों का रंग आदि भी प्रभावित करते हैं। जब दो विरोधी रंग अच्छे लगते हैं तो व्यक्ति का रोग पुराना एवं जटिल होता है।

रंगों का संतुलन होते ही शरीर में रोग के बने रहने की संभावना नहीं रहती। अत: उपचार करते समय समग्र दृष्टिकोण से विभिन्न रंगों के गुणों को ध्यान में रख, रोग के लक्षणों एवं अन्य प्रभावों को ध्यान में रखकर रंगों का चयन करना चाहिए। नीला रंग गले के ऊपर के अंगों का मुख्य पोषक रंग होता है और साथ में रोगाणुनाशक गुण वाला तथा ठण्डी प्रकृति का होने से संकोचन करने वाला भी होता है। दांतों के दर्द और गले संबंधी रोगों में भी बिजली के नीले बल्ब की किरणों का प्रयोग अत्यधिक प्रभावशाली सिद्ध होता है। अत: जहाँ सूर्य किरणें उपचार हेतु उपलब्ध न हों, संबंधित रंग के बिजली के प्रकाश का उपयोग भी किया जा सकता है।

-चोरडिया भवन, जालोरी गेट के बाहर, जोधपुर-342003 (राज.)

E-mail: cmchordia.jodhpur@gmail.com, Website: www.chordiahealthzone.in

स्वास्थ्य-आलेख प्रश्नोत्तर प्रतियोगिता

जिनवाणी के इस अंक में प्रकाशित 'स्वास्थ्य-विज्ञान' स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित उपर्युक्त आलेख पर कुछ प्रश्न दिए जा रहे हैं, आप इनका उत्तर **15 दिसम्बर 2015** तक डॉ चंचलमल जी चोरडिया के उपर्युक्त पते पर अपने फोन नं., ई-मेल एवं डाक पते सहित सीधे प्रेषित कर सकते हैं। विलम्ब से प्राप्त उत्तरों को प्रतियोगिता में सम्मिलित नहीं किया जाएगा। इस प्रतियोगिता में किसी भी वय का व्यक्ति भाग ले सकता है। सर्वाधिक अंक प्राप्तकर्ताओं को प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार के अन्तर्गत 1000/-, 750/- एवं 500/- की राशि प्रेषित की जाएगी।

प्रश्न:-

1. श्वसन द्वारा रंगों के असंतुलन को कैसे ठीक किया जा सकता है?
2. चीनी पंच तत्त्व में रंगों के असंतुलन से होने वाले रोगों को कैसे ठीक किया जा सकता है?
3. आयुर्वेद चिकित्सा में रंग चिकित्सा कैसे उपयोगी हो सकती है?
4. सूर्य ऊर्जित हरे रंग का प्रयोग कब और कैसे करना चाहिए?
5. मानव को रंग क्यों और कैसे प्रभावित करते हैं?
6. रंग चिकित्सा के बारे में आपका व्यक्तिगत अनुभव एवं चिन्तन क्या है?
7. स्वावलम्बी निर्दोष चिकित्सा पद्धतियों के प्रति जनसाधारण हेतु आपके क्या सुझाव हैं?

बाल-स्तम्भ

एक दिवाली ऐसी भी थी!

श्री जसराज देवड़ा धोका

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित इस रचना को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर 20 वर्ष की आयु तक के पाठक 15 दिसम्बर 2015 तक **जिनवाणी संपादकीय कार्यालय, सामायिक-स्वाध्याय भवन, कुम्हार छात्रावास के सामने, प्लॉट नं. 2, नेहरु पार्क, जोधपुर-342003(राज.)** के पते पर प्रेषित करें। **उत्तर के साथ अपनी आयु तथा पूर्ण पते का भी उल्लेख करें।** श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्रीमती अरुणा जी, श्री मनोजकुमार जी, श्री कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-500 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-300 रुपये, तृतीय पुरस्कार- 200 रुपये तथा 150 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार। पुरस्कार राशि सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल,जयपुर द्वारा भिजवाई जाती है।

हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी दीपावली की वजह से दुकान में रंग-रोगन आदि सफाई का काम चल रहा था। मैं दुकान के काउण्टर पर बैठा हुआ इन विचारों में मग्न था कि अभी आने वाले दिनों में और क्या-क्या काम करने हैं। अचानक मुझे दुकान के सामने थोड़ा परिचित चेहरे वाला एक शख्स दिखाई दिया, जो उम्र में 60 वर्ष के ऊपर का लग रहा था। उसने ऊँची पेन्ट व गोलाई के आकार का ओपन शर्ट पहन रखा था, मैं सोच ही रहा था कि इसको मैंने कहाँ देखा है । इतने में तो मेरे दुकान के कर्मचारी वेंकटेश ने मुझे बताया कि यह तो सेठ छबीलदासजी हैं। थोड़े समय पहले इसी बाजार में इनकी प्लास्टिक की बड़ी दुकान थी, बेचारे को नुकसान लग गया था, दुकान भी नहीं रही। अब फेरी का धंधा कर रहे हैं। वेंकटेश की बातें सुन मुझे कुछ और उनके बारे में जानने की जिज्ञासा हुई।

संयोग ऐसा बना कि मुझे खाली बैठा देख स्वयं सेठ छबीलदासजी मुझसे मिलने मेरी दुकान में आ गए। अभिवादन के बाद मुझसे कहने लगे, क्या भाईसाहब! आप मुझे नहीं पहचानते? आप और मैं अक्सर मुम्बई में खरीदी करते समय मिलते रहते थे। मैंने अपने स्मृति पटल पर जोर डाला तो मुझे याद आया, यही वह व्यक्ति है जिसका मार्केट में बहुत अच्छा व्यापार चल रहा था और स्वभाव से इतना फक्कड़ मस्तमौला था कि कभी-कभी जिस दिन बहुत ज्यादा बिक्री होती थी दुकान रात्रि में 9 बजे मंगल करने के बजाय दोपहर 4 बजे ही मंगल कर देता था और अपने कर्मचारियों से कहता था कि तुम लोग भी अपने घर जाकर आराम करो, मुझे आज जितनी कमाई होनी थी मिल गई है, कल का कल देखेंगे।

मैंने सेठ छबीलदासजी से बैठने का आग्रह किया, चाय-पानी की मनुहार करने के पश्चात् उनसे पूछा- ''भाई साहब आजकल क्या चल रहा है? आपके लड़के तो कारोबार संभालने लायक हो गये होंगे?'' मेरा इतना पूछना ही था कि अचानक उनके चेहरे से लगा कि वे दुःखी हो गए, मुझे उनसे कुछ सुनने की इच्छा हो रही थी, लेकिन वे तो मौन धारण कर बैठे हुए थे। थोड़ी देर बाद मुझसे न रहा गया। मैंने उन्हें कुरेदा तो रूआंसा होकर कहने लगे क्या बताएँ भाईसाहब- ''हम भी आप के जैसे थोक माल के व्यापारी थे हमारी दुकान खूब अच्छी चल रही थी। एक वर्ष दीपावली की ही घटना है- धनतेरस के दिन अच्छा माल बिका था, अक्सर लोग दीपावली की वज़ह से नये-नये बर्तन खरीदते हैं, दुकान में माल का भरपूर स्टॉक था। दूसरे दिन रूप-चौदस थी। दुकान में सजावट व साफ सफाई का काम हुआ था। फिर दीपावली के दिन मैंने खूब हर्ष उल्लास, ठाट-बाट से लक्ष्मी पूजन किया। खुशी के माहौल में करीब रात 12 बजे मैंने दुकान मंगल कर घर की ओर प्रस्थान किया। पलटकर देखा तो नया रंग करने से दुकान की बालकनी जगमगा रही थी। घर पर सब परिवार वाले सम्मिलित होकर भोजन करने के पश्चात् सो गये थे। अचानक रात्रि 3 बजे फोन की घण्टी बजी। मैंने हड़बड़ा कर फोन रिसीव किया।'' यह सब बताते हुए छबीलदास का गला सूख रहा था। मैंने वेंकटेश से उनके लिए पानी का गिलास मंगवाया।

पानी की एक घूंट लेने के पश्चात् कहने लगे- ''वह फोन मेरे पड़ौसी दुकानदार का था। बता रहा था कि मेरी दुकान में भयंकर आग लग गई है। मैं घबराकर जैसे-तैसे दुकान के पास पहुँचा तब तक पूरा माल जलकर खाक में मिल गया था। मेरी उम्र भर की कमाई पल भर में नष्ट हो गई थी। हाँलांकि फायर बिग्रेड वाले पानी से आग बुझाने की कोशिश कर रहे थे। मेरे लिए दीपावली की वह काली अमावस्या मनहूस रात्रि बन गई थी।'' इतना कहते-कहते सेठ छबीलदासजी रोने लगे, मैंने उन्हें ढांढस बंधाते हुए पूछा- ''क्या आपकी दुकान में बिजली का शार्ट सर्किट हुआ था? आपने तो दुकान का बीमा करवा रखा होगा?'' छबीलदासजी कहने लगे- ''बिजली के शार्ट सर्किट का सवाल ही नहीं, मैंने दुकान मंगल करते वक्त दुकान के बाहर के भाग में लगे मीटर से करंट का बटन ऑफ कर दिया था। यह दुर्घटना तो पटाखों की वज़ह से हुई थी। तीर के आकार के वे सूतली बम आदि पटाखे दुकान में जले हुए मिले थे, बालकनी की खिड़की जिसके दरवाजे लकड़ी के थे, उसके द्वारा आग पूरी दुकान में फैल गयी थी।'' रही बात दुकान के बीमे की, छबीलदासजी बोले- ''मैं तो इस विषय में अनभिज्ञ था, पढ़ा-लिखा इतना हूँ नहीं, अकेला व्यक्ति था। बच्चे छोटे थे। माल लाना और बेचना इससे ही मुझे फुरसत नहीं थी। अब बच्चे उनके ननिहाल में पढ़ लिख कर बड़े हो रहे हैं। मैं और मेरी पत्नी यहाँ किराये के

मकान में रहकर छोटा-मोटा फेरी का धन्धा कर अपना गुजारा कर रहे हैं।'' बातों ही बातों में वातावरण बहुत बोझिल हो रहा था। सेठ छबीलदासजी मेरे पास से उठकर जाने लगे। मैंने व्यापारी भाई होने के नाते उनसे बहुत सहानुभूति प्रकट की, होनी को कोई नहीं मिटा सकता है। लेकिन वे तो अपने अच्छे बीते दिनों को याद कर यह कहकर भगवान किसी को भी ऐसी मनहूस दीवाली न दिखाये, चलते बने। मैं पटाखों से होने वाले नुकसानों के बारे में सोचता रहा।

-3-4-374/1/2, 'जैन श्रद्धा सुमन', लिंगम्पल्ली रोड, काचीगुडा, हैदराबाद-27 (आं.प्र.)

प्रश्नः-

1. दीपावली पर घर और दुकान में क्या-क्या कार्य होते हैं?
2. क्या छबीलदासजी एक गरीब व्यक्ति थे?
3. यदि आपके पटाखे का मनोरंजन किसी को बेघर कर दे, तो आप क्या करेंगे?
4. छबीलदासजी की दो विशेषताएँ बताइये।
5. वाक्य प्रयोग कीजिये- 1. गला सूखना, 2. ढांढस बंधाना।
6. अर्थ बताइये- अनभिज्ञ, रुआंसा, सहानुभूति, मनहूस, गुजारा, बोझिल।

बाल-स्तम्भ [सितम्बर-2015] का परिणाम

जिनवाणी के सितम्बर-2015 के अंक में बाल-स्तम्भ के अंतर्गत 'आगम-कहानी' के प्रश्नों के उत्तर 32 बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए। पूर्णांक30 हैं।

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-500/-	अनिकेत जैन-जयपुर(राज.)	28.5
द्वितीय पुरस्कार-300/-	रजत जैन-सुवासरा-मन्दसौर(मध्यप्रदेश)	28
तृतीय पुरस्कार- 200/-	अरिष्ट कोठारी-अजमेर (राज.)	27.5
सान्त्वना पुरस्कार- 150/-	अंकिता चौपड़ा-जोधपुर(राज.)	27
	पूर्वांशी छाजेड़-जोधपुर (राज)	27
	अर्पित जैन-जोधपुर (राज.)	27
	अमीषा कोठारी-अजमेर (राज.)	27
	हर्ष देशलहरा-गुण्डरदेही (छत्तीसगढ़)	27

सूचना

प्रिय बच्चों! आप सभी बाल-स्तम्भ में सहभागिता निभाकर 'जिनवाणी' के सक्रिय पाठक बन रहे हैं। आपके द्वारा उत्तर भी बहुत अच्छे प्रेषित किये जा रहे हैं। कुछ बच्चों द्वारा उत्तर पोस्टकार्ड पर दिए जाते हैं, वे पठनीय नहीं होते हैं। अतः पोस्टकार्ड पर दिए गए उत्तर प्रतियोगिता में शामिल नहीं किए जायेंगे।-**सम्पादक**

कृति की 2 प्रतियाँ अपेक्षित हैं

नूतन साहित्य

डॉ. श्वेता जैन

जैन दर्शन में ज्ञान का स्वरूप- डॉ. राजकुमारी जैन, ***प्रकाशक***- भारतीय ज्ञानपीठ, 18, इंस्टीट्यूशनल एरिया, लोदी रोड़, नई दिल्ली-110003, फोन : 011-24698417, मोबाइल:09350536020, ***पृष्ठ***-378+28, ***मूल्य***- 430 रुपये मात्र, सन् 2015

ज्ञान के स्वरूप से सम्बन्धित तत्त्वमीमांसीय, ज्ञानमीमांसीय आदि सभी दार्शनिक सिद्धान्त किस प्रकार अर्थपूर्ण, प्रयोजनभूत या उपयोगी हैं, ये हमारे जीवन मूल्यों को किस प्रकार रूपान्तरित एवं प्रभावित करते हैं तथा ये व्यक्ति के आध्यात्मिक उत्थान के साथ समाज-निर्माण की दृष्टि से कितने महत्त्वपूर्ण हैं- इन विचारों को चिन्तननिकष पर तराश कर पुस्तकीय आकार में प्रस्तुत करने वाली लेखिका के शोध प्रबन्ध ''जैन दर्शन में ज्ञान का स्वरूप'' का यह परिवर्धित और परिष्कृत संस्करण है।

दस अध्यायों में निबद्ध इस पुस्तक में जैन सिद्धान्तों के साथ बौद्धमत, अद्वैत वेदान्त मत, चार्वाक मत, न्यायवैशेषिक मत, सांख्य-योग मत को भी पाठकों के समक्ष रखा गया है। पुस्तक में अध्यायों के नाम इस प्रकार हैं- 1. द्रव्य का स्वरूप, 2. ज्ञान और आत्मा में भेदाभेद सम्बन्ध, 3. ज्ञान आत्मा का गुण, 4. ज्ञानावरणीय कर्म और ज्ञान, 5. ज्ञान का स्वपरप्रकाशक स्वरूप, 6. चेतना की सविकल्पक स्थिति ज्ञान, 7. अनेकान्तात्मक वस्तु ज्ञान का विषय, 8. ज्ञान के प्रकार, 9. ज्ञानार्जन के साधन- प्रमाण और नय तथा 10. ज्ञान की प्रामाणिकता का स्वरूप।

ज्ञान के सभी आयामों को छूते हुए विषयों के गम्भीर विवेचन से लेखिका की प्रतिभा का परिचय होता है। वे लिखती हैं कि ज्ञान आत्मा के समस्त गुणों का तथा आत्मा के समस्त गुण ज्ञान का स्वरूप हैं; उसी प्रकार दर्शन, वीर्य आदि किसी भी गुण का सम्पूर्ण स्वरूप सम्पूर्ण आत्मा है तथा ये गुण भी आत्मा के समस्त गुणों को दर्शन रूपता आदि प्रदान कर रहे हैं। इस प्रकार एक वस्तु सम्पूर्णतः एक-अनेक स्वभावी है। इसके विभिन्न स्वभावों को अमूर्तीकरण द्वारा ज्ञान और भाषा में ही अलग किया जा सकता है, लेकिन तात्त्विक रूप से उन्हें अलग किया जा सकना सम्भव नहीं है। पुस्तक के अन्त में संदर्भ ग्रन्थ सूची भी संलग्न है।

समर्थ स्तवन एवं ढाल संग्रह- संग्राहक : घीसूलाल पितलिया, ***प्रकाशक एवं प्राप्ति स्थान***- शा. घीसूलाल बसंतराज पितलिया, सिरयारी, जिला-पाली (राज.), मोबाइल : 094602-33712, ***पृष्ठ***-168, ***मूल्य***- अनुल्लिखित

पूज्य श्री समर्थमल जी म.सा. 156 रचनाओं को संकलित कर इनमें 100 स्तवनों को अकारादि क्रम से संयोजित किया गया है तथा कुछ जिनशासन गीतिकाएँ एवं ढालें भी हैं। संग्राहक का कथन है- "यदि आप इन्हें गा सकें तो ये गेय हैं, नहीं गा सकें तो ज्ञेय हैं।"

(1) आचारांग सूत्र (प्रथम श्रुतस्कन्ध), (2) विपाक सूत्र, (3) उपासकदशांग सूत्र, सम्पादक- डॉ. पवनकुमार जैन, ***प्रकाशक***- मुनीशकुमार जैन, भगवान महावीर मार्ग, बड़ौत-250611 (उत्तरप्रदेश), मोबाइल नं. : 098373-76377, ***पृष्ठ***- 176+8, 182+8, 102+8, ***मूल्य***- उल्लेख नहीं, सन् 2015

प्रस्तुत सभी आगम अर्थागम (हिन्दी अनुवाद) के रूप में प्रस्तुत हैं तथा आवश्यकतानुसार 'विशेष' शीर्षक के माध्यम से सम्पादक ने अपने विचार प्रस्तुत किये हैं। अर्थागम को पढ़ने के लिए समय की पाबन्दी नहीं है अर्थात् अस्वाध्याय काल का कोई भी कारण बाधक नहीं है, अतः इनको कभी भी, कहीं भी पढ़ा जा सकता है।

आध्यात्मिक शुभ भावनाएँ- संग्राहक व सम्पादक- जेठमल गुलेचा, ***प्राप्ति स्थान***- 269, सरदारपुरा 4 बी रोड़, जोधपुर-342003 (राज.), मो. 093513-15749, 093147-12919, ***पृष्ठ***- 179, ***मूल्य***- स्वाध्याय एवं सदुपयोग, सन् 2015

इसमें अनुप्रेक्षा और बारह भावनाओं का वर्णन है तथा सम्यक्त्व की 6 भावना, संलेखना-भावना, पापविरति की भावना, सम्यग्दर्शन की भावनाएँ, भावना से सिद्धि, धर्मध्यान की चार भावनाएँ, शुक्लध्यान की चार भावनाएँ आदि का भी उल्लेख है।

श्रावकाचार प्रवचन (भाग 1 व 2)- प्रवचनकार एवं लेखक- श्री विजयरत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा. , ***प्रकाशक***- दिव्य संदेश प्रकाशन, द्वारा- सुरेन्द्र जैन, 205, सोना चेम्बर्स, 507-509, जे.एस.एस. रोड़, चीरा बाजार, सोनापुर गली के सामने, मरीन लाईंस (ईस्ट), मुम्बई-400002 (महा.), मोबाइल नं. 098290-69330, ***पृष्ठ***-302+32, 280+28, ***मूल्य***-125 रुपये +125 रुपये, सन् 2015

प्रथम भाग में मिथ्यात्व छोड़ो, गुरुवन्दन, प्रतिक्रमण, प्रत्याख्यान, दान, शील, तप, भाव आदि 14 विषयों पर तथा द्वितीय भाग में स्वाध्याय, परोपकार, यतना, जिनपूजा, व्यवहारशुद्धि, विवेक, संवर, संघ-भक्ति, श्रुत-भक्ति, तीर्थ-प्रभावना आदि 36 विषयों पर प्रवचनों का संकलन है।

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर के 380 स्वाध्यायियों द्वारा 151 क्षेत्रों में पर्युषण पर्वाराधना सम्पन्न

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा विगत 69 वर्षों से, जैन संत-सतियों के चातुर्मास से वंचित ग्राम/नगरों में विद्वान्, क्रियावान्, योग्य एवं अनुभवी स्वाध्यायियों को भेजकर अष्ट दिवसीय पर्वाधिराज पर्युषण पर्व की साधना एवं आराधना का महान् रचनात्मक कार्य किया जा रहा है। इस संघ के लगभग 1200 स्वाध्यायी सदस्य हैं, जिनमें से अधिकांश स्वाध्यायी पर्युषण के लिए इस संघ द्वारा निर्देशित क्षेत्रों में जाकर अपनी अमूल्य सेवाएँ प्रदान करते हैं। अनेक स्वाध्यायी ऐसे भी हैं जो व्यावाहारिक जगत् में न्यायाधिपति, चार्टर्ड एकाउण्टेण्ट, इंजीनियर, प्रोफेसर, प्रशासनिक अधिकारी, एडवोकेट, उद्योगपति, व्यापारी, शिक्षक आदि प्रतिष्ठित पदों पर कार्यरत होते हुए भी अपनी बहुमूल्य सेवाएँ संघ को प्रदान करते हैं। अनेक स्वाध्यायी स्नातक, स्नातकोत्तर, बी.एड, एल.एल.बी., पी-एच्.डी. एवं एल.एल.एम. जैसी विशिष्ट उपाधियों से अलंकृत हैं।

इस वर्ष पर्युषण पर्व दिनाँक 11 सितम्बर से 18 सितम्बर, 2015 तक मनाए गए। पर्वाराधन में उत्तरप्रदेश, पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, गुजरात, राजस्थान में मेवाड़-मारवाड़, पोरवाल-पल्लीवाल आदि क्षेत्रों में विभिन्न छोटे-बड़े, दूर व निकट के 151 क्षेत्रों में लगभग 380 स्वाध्यायियों ने अपनी उल्लेखनीय सेवाएँ प्रदान की।

सभी स्थानों पर सामायिक, दया-संवर, उपवास-पौषध तथा छोटी-बड़ी अनेक तपस्याएँ बहुतायत संख्या में सम्पन्न हुई। स्वाध्यायियों द्वारा सभी स्थानों पर ज्ञानवृद्धि हेतु शिविर तथा अन्य कार्यक्रमों के साथ ही विभिन्न प्रतियोगिताएँ भी आयोजित की गईं।

विदेश

01	न्यूयॉर्क	-	डॉ. धर्मचंद जी जैन-जोधपुर

महाराष्ट्र क्षेत्र

02	मुम्बई	-	श्री कुशलचंद जी गोटेवाला-सवाईमाधोपुर
			श्री त्रिलोक जी जैन-जयपुर
			श्री मुकेश जी जैन-सवाईमाधोपुर
			विरक्त बन्धु श्री विवेक जी लूंकड़-जोधपुर
03	पश्चिम नागपुर	-	श्रीमती विजया जी मल्हारा-जलगांव
			सौ. छाया जी मल्हारा-जलगांव
			सौ. सुरेखा जी सांखला-जलगांव
04	चांदुर रेलवे	-	सौ. रसीला जी बरडिया-जलगांव
			सौ. सुनन्दा जी सांखला-जलगांव

			सुश्री मनीषा जी कोचर-फत्तेपुर
05	फत्तेपुर	-	सौ. सरला जी बम्ब-भड़गांव
			सुश्री शीतल जी तालेरा-फत्तेपुर
			सुश्री आरती जी छाजेड़-हीरापुर
06	मांडल	-	श्रीमती ललिता जी कटारिया-जलगांव
			श्रीमती तारा जी जैन-जलगांव
			श्रीमती कांता जी भंसाली-जलगांव
07	पारोला	-	श्री मनोज जी संचेती-जलगांव
			श्री अजय जी राखेचा-जलगांव
			श्री राजेन्द्र जी कावडिया-जलगांव
08	नागद	-	सौ. तिलोत्तमा जी ओस्तवाल-भडगांव
			सौ. माया जी श्रीश्रीमाल-भडगांव
			सुश्री मीनल जी रायसोनी-जलगांव
09	भडगांव	-	श्री मुकेश जी चौरडिया-पारोला
			श्री निलेश जी चौरडिया-पारोला
			श्री कल्याणमल जी धाडीवाल-कजगांव
10	दापोली	-	श्री दिलीप जी जैन-जयपुर
			श्री सुनील जी जैन-जयपुर
11	विक्रोली	-	श्रीमती पुष्पा जी मेहता-पीपाड़ सिटी
			श्री गजेन्द्र जी जैन-जयपुर
			सुश्री खुशबू जी पारख-पीपाड़ सिटी
12	विदिशा	-	सौ. छाया जी भण्डारी-जलगांव
			सौ. कुसुम जी लूंकड़-जलगांव
			सौ. दिप्ती जी श्रीश्रीमाल-जलगांव
13	सातारा	-	श्रीमती सरला जी मेहर-जलगांव
			श्रीमती पारसबाई जी बोरा-जलगांव
			सुश्री सोनम जी पोरवार-जामनेर
14	शेन्दूर्णी	-	सौ. मीनल जी समदडिया-जलगांव
			सौ. लता जी मुथा-नाशिक
			सुश्री रूचिता जी समदडिया-जलगांव
15	वालुज	-	सौ. चंद्रमाला जी गांधी-भंडारा
			सुश्री रूपाली जी अलीझाड-धुलिया
			सुश्री प्रेरणा जी ललवाणी-सिल्लौड़
16	इच्छापुर	-	सौ. चंद्रकला जी कांकरिया-जलगांव

			सौ. सविता जी कोठारी-जलगांव
			सौ. मंगला जी पारख-कासारे
17	वाकोद	-	सौ. लता जी बनवट-जलगांव
			सौ. सुरेखा जी कांकरिया-जलगांव
			सौ. सीमा जी पारख-जलगांव
18	फागणा	-	सौ. अनिता जी लूंकड़-जलगांव
			सौ. अनुपमा जी छाजेड़-अमलनेर
			सौ. शोभा जी बोरा-जलगांव
19	पिलखोड़	-	सौ. शोभा जी लुणावत-भडगांव
			सौ. मंजूलता जी लुणावत-भडगांव
			सुश्री हर्षा जी लुणावत-भडगांव
20	वरणगांव	-	सौ. सुरेखा जी चौरडिया-पाचोरा
			सौ. योगिता जी खिंवसरा-मुकटी
			सुश्री पायल जी बम्ब-भडगांव
21	खलणा	-	श्रीमती बेबीबाई जी कोचर-वड़जी
			सौ. कान्ता जी कटारिया-जलगांव
22	जायखेड़ा	-	श्री जिनेन्द्र जी जैन-मुम्बई
			श्री चंद्रकांत जी हिरण-कजगांव
			श्री धर्मेन्द्र जी मुणोत-अमरावती
23	विटनेर	-	सौ. सुशीला जी धाडीवाल-जलगांव
			सौ. देवबाला जी जैन-ठाणे
24	लोहारा	-	सौ. सरला जी कांकरिया-जलगांव
			सौ. विमला जी सुराणा-जलगांव
			सौ. मेघा जी संघवी-जलगांव
25	भंडारा	-	श्री दीपचंद जी बोथरा-पाचोरा
			श्री दिलीप जी बांठिया-पाचोरा
26	मुक्ताई नगर	-	सौ. सुगनबाई जी सांड़-जलगांव
			सौ. हेमलता जी सांखला-मुम्बई
			सौ. पारूल जी ओस्तवाल-धुलिया
27	मांगलादेवी	-	श्री रितेश जी सुराणा-जलगांव
			श्री नरेश जी हुण्डीवाल-जलगांव
28	भराड़ी	-	श्रीमती लीला जी बागरेचा-मुक्ताई नगर
			सुश्री प्रियंका जी कवाड़-नागपुर
			सुश्री रूपाली जी खिंवसरा-मुकटी

29	रालेगांव	-	सौ. ज्योति जी गादिया-भुसावल
			सुश्री प्रियंका जी गादिया-भुसावल
			सुश्री स्वीटी जी लुणावत-पारोला
30	दुसरबीड़	-	श्री तुषार जी संकलेचा-पूना
			श्री चेतन जी धाड़ीवाल-कजगांव
			श्री विराग जी कोठारी-जलगांव
31	चिखली	-	सौ. मंगला जी बागरेचा-शिरपुर
			सौ. मीना जी सिंघवी-जलगांव
			सौ. शोभा जी संकलेचा-जलगांव
32	वाशिम	-	सौ. निर्मला जी बांठिया-पाचोरा
			सौ. मोना जी भण्डारी-जलगांव
33	चिंचाला	-	श्रीमती लीला जी आंचलिया-जलगांव
			सौ. मोहिनी जी मुणोत-जलगांव
34	उम्बरखेड़	-	श्री महावीर जी आंचलिया-मुम्बई
			श्री राहुल जी बरडिया-बोदवड़
35	वरखेड़ी	-	सौ. पूनम जी वेदमूथा-जलगांव
			सौ. मंगला जी राखेचा-जलगांव
36	कासारे	-	सौ. चंदा जी कांकलिया-जलगांव
			सौ. सुशीला जी सांखला-जलगांव
			सौ. सुनन्दा जी रांका-जलगांव
37	देऊ बुद्रक	-	सौ. संतोषीबाई जी सिसोदिया-चिखली
			सौ. उषा जी कटारिया-जलगांव
38	पलासखेड़ा	-	श्रीमती उषा जी धोका-धामणगांव
			श्रीमती कमला जी जांगडा-धामणगांव
39	नसीराबाद	-	श्रीमती सायरबाई जी सुराणा-शिरपुर
			सौ. चंद्रकला जी बाफना-शिरपुर
40	कासमपुरा	-	सौ. निर्मला जी डोसी-जलगांव
			सौ. शकुंतला जी संचेती-जलगांव
41	शेलवड़	-	श्रीमती सुशीला जी पगारिया-जलगांव
			सौ. कल्पना जी पगारिया-जलगांव
42	वाकड़ी	-	सौ. शकुंतला जी कटारिया-जलगांव
			सौ. प्रेमलता जी डाकलिया-जलगांव
			सौ. चंद्रकला जी सुराणा-जलगांव
43	चिपलुण	-	श्री सुभाष जी कोठारी-माजलगांव

			सुश्री पूनम जी पोरवार-जामनेर
			सुश्री अनीषा जी कोठारी-बोदवड़
44	गंगाखेड़	-	श्रीमती मंजु जी जैन-उमरी
			सुश्री पूजा जी दर्डा-उमरी

दक्षिण क्षेत्र

45	चेंगलपेट	-	श्री फूलचंद जी मेहता-उदयपुर
			श्री अभय जी सुराणा-चेन्नई
			श्री रिखबचंद जी बाघमार-चेन्नई
46	अयनावरम	-	श्री नेमीचंद जी कर्णावट-भोपालगढ़
			श्री अलंकार जी मुणोत-कटंगी
			कमला जी ओस्तवाल-चेन्नई
47	क्रोमपेठ	-	श्रीमती मोहनकौर जी जैन-जोधपुर
			श्रीमती कंचनबाई जी मुथा-जोधपुर
			श्रीमती शोभाजी कवाड़-आवड़ी
			श्री कुलदीप जी सुराणा-चेन्नई
48	इरोड़	-	श्री सुभाषचंद जी हुण्डीवाल-जोधपुर
			श्री विनोद जी जैन-चेन्नई
			श्री विरेन्द्र जी कांकरिया-चेन्नई
49	वालाजाबाद	-	श्री राजेश जी भण्डारी-जोधपुर
			श्रीमती सरला जी भण्डारी-जोधपुर
			श्रीमती ताराजी बाघमार-चेन्नई
50	आलन्दुर	-	श्री कंवरलाल जी संघवी-जलगांव
			श्री अनिलकुमार जी कोठारी-जलगांव
			श्रीमती विजयाजी संघवी-जलगांव
51	अम्बुर	-	श्रीमती सुनीता जी नवलखा-कोटा
			श्रीमती राजकंवर जी बोहरा-चेन्नई
52	आरकाट	-	श्रीमती लीला जी सालेचा-जलगांव
			श्री पंकज जी चौधरी-भीलवाड़ा
53	बानावर	-	श्री सुरेश कुमार जी हिंगड़-चेन्नई
			श्रीमती शिल्पा जी बोथरा-चेन्नई
			सुश्री पूजा जी तातेड़-चेन्नई
54	चेटपेट, वन्दवासी	-	श्री विमलचंद जी मुथा-पल्लीपेट
			श्री नीरज जी जैन- चौथ का बरवाड़ा

55	सेयर	-	सुश्री रिंकी जी जैन-अलीगढ़
			श्रीमती ऊषा जी गुगलिया-चेन्नई
			सुश्री मोनिका जी टपरावत-सेल्युर
56	चिदम्बरम	-	श्रीमती कमलाबाई जी पगारिया-जलगांव
			श्रीमती मंजुजी पगारिया-जलगांव
			सुश्री नूतनजी चोरड़िया-पारोला
57	चित्तुर	-	श्रीमती मधुबाला जी मनन-जलगांव
			श्रीमती दर्शना जी अजमेरा-जलगांव
58	होसुर	-	श्री मुकेश जी बुरड़-शिरपुर
			श्री राकेश जी संकलेचा-शिरपुर
59	कडम्बातुर	-	श्री भंवरलाल जी लोढ़ा-चेन्नई
			श्री रविजी मुथा-जोधपुर
60	करईकल	-	श्रीमती विमला जी चोरड़िया-चेन्नई
			सुश्री नेहा जी बोथरा-चेन्नई
61	कावेरीपाकम	-	श्री रामपाल जी जैन-देई
			श्री पारसमल जी जैन-नैनवा
62	एमएमडीए कॉलोनी	-	श्रीमती बसन्ता जी संकलेचा-नरडाणा
			श्रीमती ऊषा जी चोरडिया-जलगांव
			श्री महेन्द्र जी जैन-खेरली
63	मनली	-	श्रीमती चंदनबाला जी चोरड़िया-चेन्नई
			श्रीमती कमलाजी गांधी-सेल्यूर
64	मिरसाहिबपेठ	-	श्री विलास जी कोचर-जलगांव
			श्री निलेश जी बैदमुथा-नागद
65	नंगनल्लुर	-	श्री दिनेश जी नाहटा-नगरी
			श्री अनिल जी ढेलड़िया-नगरी
66	नेलिकुप्पम	-	श्रीमती मोहनीदेवी जी कच्छवाहा-जोधपुर
			श्रीमती मंजु जी टपरावत-चेन्नई
67	नुगम्बाक्कम	-	श्री मनीष जी जैन-चेन्नई
			श्री रविन्द्र जी बोथरा-चेन्नई
			श्री अरूण जी छल्लाणी-चेन्नई
68	पल्लीपेट	-	श्री विजयराज जी रांका-फत्तेपुर
			श्री रमेश जी भंसाली-फतेहपुर
69	पेरम्बाकम	-	श्रीमती सज्जनबाई जी मेहता-जोधपुर
			श्रीमती विमला जी चौपड़ा-जोधपुर
70	पोलुर	-	श्री निखिल जी बाघमार-चेन्नई

			श्री रौनक जी कवाड़-चेन्नई
71	पुन्नमल्लै	-	श्रीमती रतनदेवी जी नाहर-बैगू
			श्री राजेन्द्र जी जैन-सवाईमाधोपुर
			श्रीमती प्रियदर्शना जी जैन-सवाईमाधोपुर
72	रोयापुरम	-	श्रीमती किरणबाई जी कोठारी-बोदवड़
			श्रीमतीआशा जी कोठारी-बोदवड़
			सुश्री जागृति जी भण्डारी-बोदवड़
73	सेल्युर	-	श्रीमती सुशीला जी गोलेच्छा-जोधपुर
			सुश्री निकिता जी जैन-सवाई माधोपुर
74	शिवाकासी	-	श्री महावीरचंद जी बाघमार-चेन्नई
			श्री राकेश जी खिंवसरा-चेन्नई
75	श्रीकालाहस्ती	-	श्री सुमेरचंद जी बाघमार-चेन्नई
			श्री निलमचंद जी बाघमार-चेन्नई
			विरक्त बन्धु श्री संदेश जी जैन-पाली
76	सुलुरपेट	-	श्री नवरतनमल जी चोरड़िया-चेन्नई
			श्री महावीरचंद जी तातेड़-चेन्नई
77	स्वाध्याय भवन	-	श्री सौभागमल जी जैन-सवाईमाधोपुर
			श्री सुरेशचंद जी जैन-खेरली
78	तिरूवन्नामल्लै	-	श्री रमेशचंद जी जांगड़ा-चेन्नई
			श्रीमती पुष्पा जी चतुर-क्रोमपेट
			श्रीमती सज्जनबाई जी बोहरा-क्रोमपेट
79	तिरूवैल्लुर	-	श्रीमती ऊषा जी बोहरा-जोधपुर
			श्री मनोज जी सेठिया-चेन्नई
			श्रीमती वसन्ता जी सुराणा-अन्ना नगर
80	उलुन्दुर पेठ	-	श्री विनयचंद जी जैन-सवाईमाधोपुर
			श्री मानमल जी सुराणा-चेन्नई
81	उत्तरामैयुर	-	श्री धर्मचंद जी जैन-कुशतला
			श्रीमती निर्मला जी कोठारी-आलन्दुर
			सुश्री निधि जी मेहता-चेन्नई
82	वडपलनी	-	श्री हस्तीमल जी गोलेच्छा-ब्यावर
			श्री अशोक जी कवाड़-चेन्नई
			सुश्री मोनाजी बाफना-गोटन
			सुश्री खुशबू जी कानूंगा-जोधपुर
83	विल्लीपुरम	-	श्री जवाहरलाल जी कर्णावट-चेन्नई

			श्री हीरालाल जी मंडलेचा-जलगांव
			श्री महावीरचंद जी लोढ़ा-चेन्नई
84	विरूगम्बाकम	-	श्री महावीरप्रसाद जी जैन-बजरिया
			श्रीमती सुजाता जी जैन-चौथ का बरवाड़ा
			सुश्री रानू जी जैन-चौथ का बरवाड़ा
85	शेनॉय नगर	-	श्री राजेन्द्र जी बाघमार-चेन्नई
86	चेटपेट, चेन्नई	-	श्रीमती कनकमाला जी कुंभट-चेन्नई
87	अंकुरवणी	-	श्री ज्ञानचंद जी बाघमार-चेन्नई
88	कालाडीपेठ	-	श्रीमती कंचनबाई जी मुथा-भोपालगढ़

(क्रमशः)

-राजेश भण्डारी, सचिव

गुरु-वन्दन के प्रति उत्साह

एक ही धुन, एक ही लगन। वंदना में हो रहे हैं सब मगन।।

हिण्डौनवासियों के लिए अत्यन्त हर्ष का विषय है कि जीवन का कल्याण एवं कायाकल्प करने वाले परम पूज्य आचार्य भगवन्त 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा 6 का पावन वर्षावास का सुयोग मिल रहा है। इस पावन सुयोग को पाकर हिण्डौन-वासी पुलकित हैं।

विशेष हर्ष का विषय यह है कि श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. की पावन प्रेरणा से तिक्खुत्तो के पाठ से 1008 वंदना महाअभियान अनवरत प्रवाहमान है। वन्दना करने वाले पुण्यार्थियों का पुरुषार्थ व उत्साह देखते ही मनमयूर नाच उठता है और मुख से बरबस निकल पड़ता है- ''धन्य है! वन्दना करने वालों को।''

आपको सूचित करते हुए हमें अत्यन्त प्रसन्नता है कि चातुर्मास प्रारम्भ के एक दिन पूर्व प्रारम्भ हुए वंदना महाभियान के अन्तर्गत 29 अक्टूबर 2015 तक 671 बार सविधि 1008 वंदना पूर्ण हो चुकी है। कुछ भाई-बहिनों ने 1008 से बढ़कर 1500, 1536, 1700, 2015, 2222, 2500, 3031, 3131, 3636 और 3700 सविधि वंदन एक ही दिन में करके नया कीर्तिमान स्थापित किया है।

इसके अतिरिक्त नित्यप्रति 108 वंदन करने वाले गुरुभक्तों का उत्साह भी 'तारीफ-ए-काबिल' है। 900 से अधिक व्यक्ति 02 अक्टूबर 2015 तक 108 वंदना कर चुके हैं।

आप सभी पाठकगण से निवेदन है कि इस वन्दना महाअभियान में जुड़कर आप अपनी सहभागिता अर्पित करते हुए गुरु चरणों में श्रद्धाभक्ति समर्पित करें।

-धीरज जैन, वन्दना प्रभारी, वर्धमाननगर, हिण्डौनसिटी, जिला-करौली (राज.)

समाचार विविधा

पल्लीवाल क्षेत्र का हिण्डौन चातुर्मास : श्रद्धा एवं भक्ति के साथ तप-त्याग का बना केन्द्र

आगमज्ञ, प्रवचन प्रभाकर, व्यसनमुक्ति, शीलव्रत एवं रात्रिभोजन-त्याग के प्रबल प्रेरक, जिनशासन गौरव, **परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा., महान् अध्यवसायी सरसव्याख्यानी श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा.** आदि ठाणा 6 के मंगल चातुर्मास से न केवल हिण्डौन का धर्म संघ, अपितु समस्त पल्लीवाल क्षेत्र एवं पोरवाल क्षेत्र लाभान्वित हो रहे हैं। यहाँ देश के कई श्रावक-श्राविकाओं ने चौका लगाकर धर्मसाधना का लाभ लिया है तथा विभिन्न स्थानों से आवागमन निरन्तर बना हुआ है। भक्ति का यहाँ विशिष्ट रूप देखने को मिल रहा है। प्रतिदिन अनेक युवक-युवतियाँ 1008 एवं उससे अधिक की वन्दना आचार्य भगवन्त के सम्मुख कर रहे हैं। ज्ञानाराधना का क्रम भी चल रहा है। सामायिक, प्रतिक्रमण, 25 बोल, थोकड़ा आदि सीखे जा रहे हैं। उभयकाल प्रतिक्रमण एवं संवर आराधना बराबर चल रही है। प्रतिदिन तेले, उपवास, दया, एकाशन, आयंबिल, नींवी की लड़ी एवं अठाई की तपस्या की कड़ी अनवरत बनी हुई है। अब तक 65 दिवसीय, 35 दिवसीय तप तथा 8 मासक्षपण की आराधना सम्पन्न हो चुकी है। श्रावक समुदाय में अत्यन्त उत्साह है।

गत माह वीरपिता श्री अशोक जी कानूंगा-हुबली वालों के स्वर्गवास के पश्चात् 29 सितम्बर को वीर भ्राता श्री दिनेशकुमारजी अभिषेक जी कानूंगा ने परिवारजनों के साथ पूज्य आचार्यप्रवर के दर्शन-वन्दन कर मांगलिक श्रवण की। 30 सितम्बर को बीजापुर संघ संवत्सरी सम्बन्धी क्षमापना करने पावन श्रीचरणों में उपस्थित हुआ। 2 अक्टूबर को संघ-संरक्षक मण्डल के संयोजक श्री मोफतराजजी मुणोत एवं कई पदाधिकारीगण उपस्थित हुए। जलगांव संघ, भोपालसंघ एवं भोपालगढ़ संघ ने चातुर्मास की विनति प्रस्तुत की। 3 अक्टूबर को हिण्डौन में गुणी-अभिनन्दन समारोह के प्रसंग से न्यायाधिपति श्री प्रकाशचन्दजी टाटिया, अध्यक्ष- मानवाधिकार आयोग, पद्मभूषण श्री डी.आर. मेहता, करौली के अतिरिक्त जिला मजिस्ट्रेट श्री महेन्द्रकुमारजी लोढ़ा आदि ने भी पावन दर्शन एवं सेवा सन्निधि का लाभ लिया। बालोतरा संघ एवं जोधपुर संघ के सदस्यों ने अपने-अपने क्षेत्र के लिए चातुर्मास हेतु विनति प्रस्तुत की। 4 अक्टूबर को वीर भाभी एवं वीर माता

श्रीमती रेखाजी धर्मसहायिका श्री निर्मल कुमारजी जैन ने पूज्य आचार्यप्रवर के मुखारविन्द से **31 दिवसीय तपस्या** के प्रत्याख्यान ग्रहण किए। पीपाड़शहर संघ, गोटन संघ, मुम्बई संघ ने अपने क्षेत्रों की चातुर्मास विनति श्री चरणों में प्रस्तुत की।

3 एवं 4 अक्टूबर को कार्यकारिणी बैठक, गुणी अभिनन्दन समारोह एवं आमसभा के निमित्त से अनेक संघों एवं श्रावक-श्राविकाओं की विपुल उपस्थिति रही। अतः दोनों दिन पूज्य आचार्य भगवन्त का मंगल उद्‌बोधन प्राप्त हुआ। 5 अक्टूबर को करौली से प्रशासनिक अधिकारी श्रीमती भारती जी लोढ़ा ने दर्शन-सेवा का लाभ लिया। 7 अक्टूबर को अमरावती संघ ने, 8 अक्टूबर को जबलपुर संघ-सदस्यों एवं कुण्डेरा संघ-सदस्यों ने चातुर्मास व क्षेत्र फरसने के भाव पावन श्री चरणों में रखे। 9 अक्टूबर को दिल्ली से वृहद् संख्या में संघ-सदस्य एवं जयपुर से नित्यानन्द नगर संघ चातुर्मास की विनति लेकर पावन चरणों में उपस्थित हुए। 10 अक्टूबर को ज्ञानार्थी भाई-बहिनों को उद्‌बोधन देते हुए पूज्यश्री ने फरमाया- "धर्म का पालन/रक्षण करते हुए अपने द्वारा किसी को दुःख नहीं पहुँचाने का बराबर विवेक रख सजगता रखना। लोकोपचार विनय का पालन कर समर्पित जीवन बनाना।" जोधपुर की मेधावी सुश्री मानसीजी के अल्पायु में स्वर्गवास हो जाने पर उनके दादाजी श्री भंवरलालजी कांकरिया, पिता-माता श्री चन्द्रप्रकाशजी-प्रीतिजी एवं नाना श्री ज्ञानेन्द्रजी बाफना-पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष परिवारजनों के साथ 11 अक्टूबर को मांगलिक श्रवण करने पूज्यप्रवर की सेवा में पधारे। इसी दिन जयपुर से मानसरोवर संघ चातुर्मास की विनति करने उपस्थित हुआ। 12 अक्टूबर को अंकलेश्वर संघ ने चातुर्मास हेतु विनति रखी। कोटा से अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्री पवनजी जैन ने दर्शन-सेवा का लाभ लिया। 13 अक्टूबर को अलवर संघ पूज्य गुरुदेव के चातुर्मास व शेषकाल में क्षेत्र को पदरज से पावन करने की भावना लेकर श्रीचरणों में उपस्थित हुआ। 15 अक्टूबर को सुमेरगंजमण्डी, 16 अक्टूबर को अजमेर से पुष्कर रोड़ संघ चातुर्मास की विनति करने, 17 अक्टूबर को जयपुर से युवारत्न बन्धुओं सहित संघ संयुक्त रूप से चातुर्मास की विनति लेकर तथा 18 अक्टूबर को सूरत संघ-सदस्य चातुर्मास हर साल प्रदान करने के भाव निवेदन करने उपस्थित हुआ। शासन सेवा समिति के संयोजक श्री रतनलाल जी बाफणा वृद्धावस्था, अशक्तता के बावजूद भी दर्शनार्थ पधारे एवं सेवा का लाभ लिया।

19 अक्टूबर से नवपद आराधना प्रारम्भ हुई। 20 अक्टूबर को पहरसर संघ चातुर्मास हेतु विनति लेकर उपस्थित हुआ। 21 अक्टूबर को विशिष्ट स्वाध्यायी शिक्षक शिविर प्रारम्भ हुआ, जिसमें 40 शिक्षक बनने योग्य स्वाध्यायियों ने भाग लिया। शिक्षण का कार्य अनुभवी व योग्य शिक्षकों के द्वारा सम्पादित किया गया। पूज्य आचार्य भगवंत ने मंगलमय

उद्‌बोधन फरमाया- ''जो स्वाध्यायी समय देकर अध्यापन कार्य करवा सके, वे ही इसमें नामांकन करायें। श्रमण भगवान महावीर ने जीवन-निर्माण के दो अनमोल सूत्र दिये हैं, वे हैं- सामायिक और स्वाध्याय। समताभाव से की गई सामायिक पापों से छुटकारा दिलाने वाली है। स्वाध्याय- स्व तथा पर का प्रकाशक होने से मिथ्यात्व का हरण करने वाला तथा तप का प्रकार होने से निर्जरा का हेतु है। **जो नियमित स्वाध्याय करने में रुचिशील हैं, समय दान की भावना वाले हैं, उन्हें आगे बढ़ाने की भावना से यह शिविर रखा गया है। पंच दिवसीय अवधि में अपनी गुणवत्ता का वर्धन कर शिक्षकों की श्रेणी में नाम दर्ज कराने का अभीष्ट प्रयास करेंगे, ऐसी भावना है।**''

पूर्व न्यायाधिपति श्री जसराजजी चौपड़ा ने सुपरिचित प्रभावी शैली में सम्बोधित कर कहा कि स्वाध्यायी कहलाने का अधिकारी वही है जो नियमित स्वाध्याय करता हो। स्वाध्यायी के लिये ज्ञानवान बनना जरूरी है। ज्ञान हो जाये तो उस पर अहंकार नहीं करें। **ज्ञान के साथ आचरणवान बनना ज्ञान-प्राप्ति का सच्चा फल है। स्वाध्यायी का जीवन प्रामाणिक होता है।** आप इस पर शत-प्रतिशत खरा उतरने का प्रयास करें। ज्ञान-क्रिया का सुन्दर संगम हर स्वाध्यायी में हो। आप सब सुविज्ञ हैं। स्वयं सीखने पर दूसरों को सिखाने का लक्ष्य रखेंगे। श्रीमती प्रेमदेवी जैन बजरिया-सवाईमाधोपुर वालों के स्वर्गवास पर 22 अक्टूबर को श्री बाबूलालजी, कमलकुमारजी जैन लहसोड़ा वाले परिवारजनों के साथ मांगलिक श्रवण करने पूज्य गुरुदेव की सेवा में पधारे। तपस्वी वरिष्ठ स्वाध्यायी साधकरत्न श्री राजमलजी जैन-चौधरी, शहर सवाईमाधोपुर के स्वर्गवास पर 23 को श्री पारसमलजी, अशोककुमारजी, मुकेशकुमारजी जैन आदि परिजन मांगलिक श्रवण करने पूज्यपाद की सेवा में उपस्थित हुए। अहमदाबाद संघ पूज्य गुरुदेव की सेवा में दर्शनार्थ उपस्थित हुआ। भगवतीसूत्र की वाचना पूर्ण होने पर दशाश्रुत स्कंध सूत्र की वाचना प्रारम्भ हुई। 25 अक्टूबर को कुशतला संघ एवं सवाईमाधोपुर नगर परिषद् से महिला मण्डल पूज्य गुरु भगवन्त की सेवा में अपनी भावना निवेदन करने आया। स्वाध्यायी शिक्षक निर्माण शिविर का आज अन्तिम दिवस था। पूज्य आचार्य भगवन्त ने अनमोल शिक्षा सूत्र के संदर्भ में फरमाया- **''जो शिक्षक बनना चाहते हैं वे नियमित स्वाध्याय का अभ्यास करें। जिस विषय की जिम्मेदारी आपको सौंपी गई है या आप आवश्यकता अनुभव करते हैं, उसका एक घण्टे स्वाध्याय चले।** श्रद्धा एवं समर्पणता के साथ आचरण की प्रमुखता हो। समय निकाल सेवा देने का लक्ष्य रखें जो पढ़ा है, सुना है, उस पर चिंतन करें। जो पढ़ा, सुना, उसमें से कितना आचरण में उतरा है। जो कर रहे हो, वह पर्याप्त है या नहीं,

चिन्तन करें। पर्युषण के आठ दिन संत की तरह रहें। आप जहाँ रहते हैं, वहाँ यदि पाठशाला चलती है तो एक घण्टे का समय दो, ताकि बच्चों का स्तर सुधरे। वर्तमान की स्थिति यह है कि दो वर्ष पहले जो स्तर था, आज भी वही है। नियमित गुनना नहीं चल रहा है। कहीं आपश्री की भी यही स्थिति तो नहीं है? स्वयं समझने की क्षमता बढ़ायेंगे तो सामने वालों को भी समझाकर संतुष्ट कर सकोगे। ऐसी विशिष्टता यहाँ आये हुए शिविरार्थी में हो। स्वाध्यायी बनने के योग्य यदि आपको कोई साथी लगता है तो उनको साथ लाने की दलाली करें। जो भी याद करें शुद्ध व विवेचन सहित पक्का करें।"

26 अक्टूबर को श्रुत केवली आचार्यप्रवर श्री विनयचन्द्रजी म.सा. के निर्मल संयमी जीवन पर महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. ने प्रवचनामृत फरमाया। 27 अक्टूबर को आयम्बिल ओली की आराधना के अन्तिम दिवस पर अच्छी संख्या में आयम्बिल की आराधना हुई। आज ही विजयनगर से पूनिया श्रावक श्री पारसमल जी खटोड़ व श्री मोहनलाल जी नाहर दर्शन लाभ की भावना से पधारे। रात्रि में बहिनों व भाइयों ने पन्द्रह, ग्यारह एवं पाँच-पाँच सामायिक की एक साथ आराधना की। 28 अक्टूबर को आचार्यप्रवर पूज्य श्री हमीरमलजी म.सा. का स्मृति दिवस तप-त्याग के साथ मनाया गया। 29 अक्टूबर को निमाज संघ सदस्य पूज्य गुरुदेव के चरणों में चातुर्मास की चल रही विनति का स्मरण कराने उपस्थित हुए। आज ही एक बहिन ने 22 दिवसीय व दूसरी बहिन ने 15 दिवसीय तपस्या के प्रत्याख्यान पावन मुखारविन्द से ग्रहण किए। अन्य छोटी-मध्यम तपस्याएँ चल रही हैं।

हिण्डौनसिटी में दर्शनार्थ पधारने वाले भक्तों का क्रम अनवरत बना हुआ है। पल्लीवाल क्षेत्र के हर गाँव से भाई-बहिन की उपस्थिति प्रायः हर दिन रहती है। सवाईमाधोपुर से भी गुरुदेव के पावन श्रीचरणों में प्रतिदिन भाई-बहिनों ने साधना-आराधना-तप-त्याग-प्रत्याख्यान में योगदान का लाभ लिया है। श्री सौभागमलजी जैन-कुश्तला वाले, श्री रामदयालजी जैन-बजरिया-सवाईमाधोपुर, चातुर्मास प्रारम्भ से गुरुदेव की चरण सन्निधि में रहकर प्रतिदिन दया, डेढ़ पौरसी, एकासन व संवर की आराधना अहर्निश कर गुरु-भक्ति का अनूठा परिचय दे रहे हैं। देश के हर सुदूर कोने से भक्तों का आवागमन जारी है- दिल्ली, आगरा, होशियारपुर, कोलकाता, कानपुर, चेन्नई, कुम्भकोणम्, गुडियातम, तिरुवन्नामल्लै, विलीपुरम्, पल्लीपट, बैंगलोर, मैसूर, हुबली, माधव नगर, लासूर स्टेशन, बीजापुर, इचलकरंजी, कोप्पल, रायचूर, लासलगांव, घोटी, तोंडापुर, बंगारेपट, सोरापुर, हैदराबाद, रायपुर, जबलपुर, इन्दौर, जामनेर, नागपुर, अमरावती, भोपाल, गजेन्द्रगढ़, धुलिया, फत्तेपुर, करही, बोदवड़, सिल्लोड, भडगांव,

जलगांव, भुसावल, पाचोरा, अंकलेश्वर, सूरत, उधना, अहमदाबाद, जोधपुर, जयपुर, पीपाड़सिटी, भोपालगढ़, गोटन, मेड़तासिटी, बीकानेर, बालोतरा, बाड़मेर, ब्यावर, निमाज, अजमेर, बिलाड़ा, भीलवाड़ा, पाली, गुलाबपुरा, थांवला, विजयनगर, पालासनी, सांचौर, दूदू, कोटा, देई, उनियारा, चौथ का बरवाड़ा, अलीगढ़-रामपुरा, पचाला, कुश्तला, कुण्डेरा, सवाईमाधोपुर, गंगापुर, भरतपुर, अलवर आदि स्थानों से दर्शन-वन्दन एवं सेवा-सन्निधि का लाभ लेने भक्तजन पधारे। हिण्डौन संघ की आवास-प्रवास व्यवस्था एवं अतिथि-सत्कार भावना बहुत ही सुन्दर है। यहाँ की युवा टीम खूब ही सक्रिय है। आगत की हर सुविधा का ध्यान रखते हुए ये पलक पावड़े बिछाये हर समय उद्यत रहते हैं। संघ के समस्त कार्यकर्त्ता समर्पण भाव से सेवा व्यवस्था में लगे हुए हैं।

विशेष:- कटला बारी, कटलाबाजार, जोधपुर निवासी श्री भीकमचन्दजी मेहता व परिवारजनों ने मुमुक्षु बहिन सज्जनकंवरजी मेहता का आज्ञा पत्र 22 अक्टूबर 2015 को पूज्य आचार्य भगवन्त की सेवा में प्रदान कर दिया है। *-जगदीश जैन 'अध्यापक'*

उपाध्यायप्रवर के जोधपुर चातुर्मास में धर्माराधना एवं ज्ञानाराधन की निरन्तरता

शान्त-दान्त-गम्भीर पूज्य **उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा.**, मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनिजी म.सा. आदि ठाणा 6 के पावन सान्निध्य में सामायिक-स्वाध्याय भवन, नेहरूपार्क में धर्माराधना एवं ज्ञानाराधना में उत्साह बना हुआ है। श्राविका मण्डल के द्वारा थोकड़ों की परीक्षाएँ कराई जा रही हैं। आयंबिल ओली की सामूहिक नवपद आराधना उत्साह से सम्पन्न हुई है। पर्युषण के पश्चात् भी नौ एवं अठाई की तपस्याएँ हुई हैं। विभिन्न नगरों से उपाध्यायप्रवर एवं संत मण्डल के दर्शन वन्दन एवं ज्ञान प्राप्ति हेतु श्रावक-श्राविकाओं का आवागमन बना रहता है। यहाँ जयपुर, चेन्नई, जलगांव, बैंगलोर, दूदू, हिण्डौन, सवाईमाधोपुर आदि विभिन्न स्थानों से संघों एवं श्रावक-श्राविकाओं का आगमन हुआ है। राजस्थान के गृहमंत्री श्री गुलाबचन्दजी कटारिया ने दर्शन-वन्दन का लाभ लिया। 30 अक्टूबर 2015 को श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर के पाइल्स का ऑपरेशन सफलतापूर्वक सम्पन्न हो गया है। *-नवरतन डागा, संयोजक, चातुर्मास समिति*

जयपुर तथा अलवर में भी उत्साह की निरन्तरता

जयपुर- सेवाभावी श्रद्धेय श्री नन्दीषेणमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 4 के सान्निध्य में 6 अक्टूबर से लगभग 15 श्रावक-श्राविकाओं के एकाशन का सिद्धि तप तथा 19 अक्टूबर से श्रावक-श्राविका वर्ग में नवपद आयंबिल की साधना सम्पन्न हुई। अभी विपाकसूत्र की

वाचना चल रही है। श्रावक एवं श्राविका वर्ग में तपस्याएँ गतिशील हैं। अष्टमी एवं चतुर्दशी को संवर तथा पौषध करने वाले श्रावक-श्राविका वर्ग में अच्छी उपस्थिति रहती है। प्रातः एवं सायंकाल दोनों समय प्रतिक्रमण एवं संवर साधना नियमित चल रही है।

-डॉ. पी.एस. लोढ़ा

अलवर- तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 4 के सान्निध्य में 16 से 30 वर्ष के किशोर-किशोरियों एवं युवक-युवतियों का यू-टर्न शिविर आयोजित हुआ, जिसमें लगभग 200 जने लाभान्वित हुए। यहाँ बीजापुर, जलगांव, मुम्बई, जोधपुर, चेन्नई, बैंगलोर आदि संघों का आगमन हुआ। जयपुर के श्रावक-श्राविका प्रायः लाभ लेते रहते हैं। आयंबिल, अठाई आदि की तपस्याएँ चलती रहती हैं। चातुर्मास से अलवर का समाज बहुत प्रसन्न है। साधर्मी वात्सल्य का संघ के द्वारा अच्छा लाभ लिया जा रहा है।

-अशोककुमार पालावत, अध्यक्ष

महासती-मण्डल के चातुर्मासों में धर्मप्रभावना

पावटा, जोधपुर- साध्वीप्रमुखा **शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा.**, व्याख्यात्री महासती श्री रतनकंवरजी म.सा. आदि ठाणा 8 की सन्निधि में शरद पूर्णिमा की रात्रि में 103 बहिनों ने 15-15 सामायिक कर धर्मजागरण किया। कुछ बहिनों ने 5 से 10 सामायिक की। आयंबिल एवं नींवी की तपस्याएँ हुईं। अभी सिद्धि तप चल रहा है।

सरवाड़, जिला-अजमेर (राज.)- विदुषी महासती श्री सौभाग्यवतीजी म.सा. आदि ठाणा 5 का चातुर्मास प्राप्त कर सरवाड़ का सकल जैन संघ स्वयं को धन्य अनुभव कर रहा है। चातुर्मास प्रवेश से पर्वाधिराज पर्युषण तक अनेकानेक व्रत-आराधना, धर्माराधना एवं तपाराधना सम्पन्न हुई हैं। पर्युषण में सामूहिक 72 तेले हुए, 7 पचोले, 4 अठाई, 3 नौ, 5 ग्यारह की तपस्याएँ सम्पन्न हुईं। स्थानक में सेवारत श्रीमती प्यारीबाई माली ने मासक्षपण तप किया, जिसके सम्पन्न होने पर 125 सामूहिक एकाशन तप की आराधना हुई। एकाशन के चार मासक्षपण तप हुए। पर्युषण के आठों दिन नवकार मंत्र का अखण्ड जाप हुआ। यहाँ प्रत्येक रविवार को बाल-संस्कार शिविर सम्पन्न होता है तथा धार्मिक प्रतियोगिता भी आयोजित होती है। पर्युषण में युवक-संघ के माध्यम से प्रतियोगिताएँ आयोजित हुईं।

नित्यानन्दनगर-जयपुर (राज.)- व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवरजी म.सा., महासती श्री विमलावतीजी म.सा. आदि ठाणा 7 के सान्निध्य में 21 से 25 अक्टूबर 2015 तक 'महिला धार्मिक शिक्षण शिविर' का आयोजन किया गया, जिसमें लगभग 30 महिलाओं ने ज्ञानार्जन किया। शिविर में शिक्षण कार्य हेतु मंजुलाजी बम्ब, सुमनजी कोठारी, दिलीपजी जैन, दीपेशजी जैन ने अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। 25 अक्टूबर 2015 को

महासतीजी के सान्निध्य में दोपहर में 'आध्यात्मिक वन डे मैच' नामक प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें 8 टीमों में 65 प्रतियोगियों ने भाग लिया। यहाँ निरन्तर धार्मिक गतिविधियाँ चल रही हैं। *-आशीष जैन*

दूदू, जिला-जयपुर (राज.)- व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 3 के सान्निध्य में दुदु नगर में धर्माराधन का पूरा उत्साह है। प्रथम चातुर्मास पाकर सभी हर्षित हैं। जप-तप आदि की साधना निरन्तर चल रही है। श्रीपाल चरित्र के माध्यम से नवकार मंत्र की महिमा सुनकर धर्म पर आस्था दृढ़ हुई है। समरादित्य कथा के माध्यम से जीवन-निर्माण की शिक्षा निरन्तर प्राप्त हो रही है। नींवी की लड़ी प्रारम्भ हुई है। यहाँ श्रीमती अजनाजी मेहता धर्मपत्नी श्री राजेन्द्रकुमारजी मेहता ने 31 दिवसीय मासक्षपण तप सम्पन्न किया है। शरद पूर्णिमा की रात्रि में धम्म जागरिया के रूप में 15-15 सामायिक की साधना की गई। दूदू श्री संघ दर्शनार्थियों की आतिथ्य-सेवा में पूर्णतया तत्पर है। *-विनोदकुमार मेहता, अध्यक्ष*

सूरत- व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबालाजी म.सा. आदि ठाणा 5 के सान्निध्य में चातुर्मास के प्रारम्भ से ही धर्माराधन, तपाराधन एवं ज्ञानाराधन का क्रम चल रहा है। यहाँ अनेक बालकों, युवकों एवं श्रावक-श्राविकाओं ने प्रतिक्रमण एवं थोकड़े कण्ठस्थ किए हैं। श्रावक-श्राविकाओं की प्रवचन में एवं सायंकालीन संवर में उपस्थिति प्रमोदकारी है। श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के अध्यक्ष श्री लाभचन्दजी नाहर चातुर्मास प्रारम्भ से ही स्थानक में अहोरात्रि संवर-साधना कर रहे हैं। यहाँ तप-त्याग अच्छी संख्या में हुए हैं। तेले की लड़ी निरन्तर चल रही है। महासतीजी के प्रवचनों से युवक भी प्रभावित हैं। प्रातःकाल 7.30 बजे युवकों की कक्षा होती है, जिसमें मुदितप्रभाजी म.सा. प्रभावी शैली में प्रेरक उद्‌बोधन दे रहे हैं।

माधवनगर (महा.)- व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवतीजी म.सा. आदि ठाणा 5 के सान्निध्य में अच्छा धर्माराधन हो रहा है। यहाँ प्रतिदिन आयंबिल एवं तेले की लड़ी चल रही है। आयंबिल के 4 मासक्षपण एवं एकाशन के 31 मासक्षपण सम्पन्न हो चुके हैं। दो श्रावक-श्राविकाओं के एकान्तर तप चल रहे हैं। उपवास एवं दया की नवरंगी, पचरंगी के अलावा 6 बार सामूहिक दयाव्रत की साधना सम्पन्न हो चुकी है। नवकार मंत्र के जाप भी 3 दिन एवं 8 दिन के सम्पन्न हुए हैं। अनेक धार्मिक प्रतियोगिताएँ आयोजित हुई हैं। 50 जनों ने आठ दिवसीय एकाशन तप किया है। 34 तेले, चोले, पचौले, 7 अठाई, 6 नौ दिवसीय एवं ग्यारह दिवसीय उपवास भी सम्पन्न हुए हैं। यहाँ 35 वर्षों में प्रथम बार अधिक तप सम्पन्न हुआ है। कई नवयुवक एवं बुजुर्ग भी जुड़े हैं। प्रार्थना, प्रवचन आदि में भाग लेकर सभी गद्‌गद् हैं। यहाँ मूर्तिपूजक, स्थानकवासी, तेरापंथी आदि सभी संगठित होकर

भाग ले रहे हैं। -*प्रवीण डि रूणवाल*

पीपाड़शहर- व्याख्यात्री महासती श्री विनीतप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 3 के सान्निध्य में पीपाड़ में अच्छी धर्माराधना हुई है। यहाँ 50 तेले एवं 12 अठाई तप के अतिरिक्त 15, 11, 9 दिवसीय तप एवं चोले-पचौले की तपस्याएँ भी हुई हैं। 40 आयंबिल ओली तप सम्पन्न हुए हैं। पाँच साधक एकाशन से वर्षीतप कर रहे हैं। सामूहिक एकाशन एवं प्रतिदिन संवर-आराधना हो रही है। तेले एवं उपवास की लड़ी निरन्तर चल रही है। शरद पूर्णिमा की रात्रि में 130 श्राविकाओं एवं पच्चीस श्रावकों ने धर्मजागरणा की। प्रत्येक रविवार को रोचक धार्मिक प्रतियोगिताएँ हो रही हैं, जिसमें 55-60 जनें भाग ले रहे हैं। भक्तामर स्तोत्र एवं उत्तराध्ययन के उन्नतीसवें अध्ययन पर प्रभावी व्याख्यान हो रहे हैं।

वैशालीनगर-अजमेर- व्याख्यात्री महासती श्री रुचिताश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 5 की सन्निधि में धर्म जागरणा का सुन्दर रूप बना हुआ है। पर्युषण के पश्चात् 27 सितम्बर से आध्यात्मिक वनडे मैच कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ, जिसमें लगभग 150 श्रावक-श्राविकाओं ने भाग लिया। सभी प्रतियोगियों के लिए 500 प्रश्न अनिवार्य थे। इस हेतु 11-11 सदस्यों की टीमें बनाई गई थी। क्वार्टर फाइनल मैच में श्रीमती रीनाजी, रिंया वाली विजेता रही। 4 अक्टूबर को आयोजित सेमी फाइनल मैच में श्रीमती मोनाजी चंगेरिया तथा 11 अक्टूबर को फाइनल मैच में श्रीमती मेघाजी कोठारी को वूमन ऑफ द मैच का खिताब मिला। पूरे मैच में वूमन ऑफ द सीरिज का खिताब डॉ. श्रीमती रचनाजी जैन को प्राप्त हुआ। मैच में विजेता टीम श्रीमती सीमा जी चोरडिया एवं उपविजेता श्रीमती पन्नाजी कोठारी की टीम रहीं। 28 सितम्बर से 4 अक्टूबर 2015 तक महिला शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें महासती श्री कृपाश्रीजी म.सा. ने कर्मग्रन्थ भाग-2 एवं सींझना का थोकड़ा, महासती श्री प्रज्ञाश्रीजी म.सा. ने उत्तराध्ययन सूत्र का चतुर्थ अध्ययन एवं महासती श्री संवेगश्रीजी म.सा. ने दशवैकालिक सूत्र का अध्ययन भावार्थ सहित करवाया। महासती श्री विवेकप्रभाजी म.सा. ने 'हीराष्टक' एवं नित्य काम आने वाली छोटी-छोटी बातों की जानकारी दी। पर्युषण पर्व के दौरान 2 अठाई एवं एक ग्यारह दिवसीय तप हुए। इस अवधि में लगभग 100 बहनों ने वर्णमाला रसना तप का मासक्षपण किया। 29 सितम्बर को एकाशन दिवस का आयोजन हुआ, जिसमें लगभग 300 एकाशन सम्पन्न हुए। यहाँ कई बालक-बालिका प्रतिक्रमण एवं कुछ श्राविकाएँ 10 थोकड़े कण्ठस्थ करने में सन्नद्ध हैं। -*रमेश सिंघी, सचिव*

विजयपुर-बीजापुर (कर्नाटक)- व्याख्यात्री महासती श्री संगीताश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 3 का चातुर्मास पाकर बीजापुरवासी प्रसन्न हैं। चातुर्मास-प्रवेश से ही उत्साह उमंग के साथ धर्मप्रभावना हो रही है। चातुर्मास प्रारम्भ से निरन्तर आयंबिल, एकाशन एवं तेले की

लड़ी गतिशील है। प्रत्येक रविवार को परिवार पर आधारित प्रवचन सम्पन्न हो रहे हैं। यहाँ 21, 15,11,9 एवं 8 अठाई के साथ 52 तेले एवं अनेक उपवास, आयंबिल एवं एकाशन सम्पन्न हुए हैं। पर्युषण में प्रवचन हॉल खचाखच भरा रहा तथा प्रतिदिन 250 प्रतिक्रमण सम्पन्न हुए।

-मदनलाल धे. बोथरा, अध्यक्ष

आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. आचार्य पदारोहण रजत वर्ष-2015-2016

जिनशासनगौरव परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के आचार्य पदारोहण के रजत वर्ष में अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ द्वारा ज्ञानाराधन, तपाराधन व धर्माराधन के विभिन्न आयाम गत जिनवाणी के अंकों में प्रकाशित किये गये थे। उसी क्रम में पूरे भारतवर्ष में रहने वाले गुरुभ्राताओं से निवेदन है कि इस कार्यक्रम को आपके परिवार में, संघ में प्रचारित एवं प्रसारित करने के साथ अपनी श्रद्धानुसार ज्ञानाराधना-तपाराधना एवं धर्माराधना से स्वयं जुड़ें तथा अपने सम्पर्क में आने वाले अन्य महानुभावों को जोड़कर रजत वर्ष के पावन प्रसंग पर गुरुदेव के प्रति सच्ची श्रद्धा की अभिव्यक्ति करें। आपके क्षेत्र में व्यक्तिगत अथवा संघ स्तर पर सम्पन्न कार्यक्रमों की रिपोर्ट संघ कार्यालय को प्रेषित करावें, ऐसा विनम्र अनुरोध है।

संघ द्वारा निर्धारित कार्यक्रम

(अ) ज्ञानाराधन-

वर्ग-प्रथम- 1. प्रतिक्रमण सूत्र विधि व अर्थ सहित, 2. हीराष्टक-हिन्दी पद्यानुवाद, 3. चयनित 25 थोकड़े, 4. वीर स्तुति-मूल एवं अर्थ, 5. उत्तराध्ययनसूत्र- प्रथम अध्ययन का सार।

वर्ग-द्वितीय-1. दशवैकालिक अध्ययन 1 से 4 तक अर्थ सहित, 2.उत्तराध्ययन सूत्र-9 वां अध्ययन का सार, 3.आचार्य-उपाध्याय के गुण, 4. विनीत शिष्य के कर्त्तव्य, 5. आचार्य श्री हीरा एवं उपाध्याय श्री मान के जीवन की प्रमुख विशेषताएँ।

नोट:-आवश्यकतानुसार पाठ्य सामग्री जिनवाणी में आलेखों एवं साहित्य के माध्यम से उपलब्ध कराई जायेगी।

(ब) तपाराधन- 1. कम से कम 2500 व्यक्तियों को न्यूनतम एक वर्ष की अवधि के लिए सामूहिक रात्रि भोजन त्याग हेतु प्रेरित करना (एक वर्ष की समयावधि तक अभ्यास के साथ इसमें आगे बढ़ने हेतु विनम्र अनुरोध), 2. कम से कम 2500 व्यक्तियों को जमीकन्द त्याग हेतु प्रेरित करना, 3. कम से कम 250 वर्षीतप (एकान्तर/एकाशन) का लक्ष्य, 4.

श्रावक-श्राविकाओं को इस वर्ष में कम से कम 25 आयंबिल/नींवी तप हेतु प्रेरित करना। 5. वर्ष पर्यन्त अथवा मासपर्यन्त कषायविजय हेतु अभ्यास।

(स) धर्माराधन- 1. कम से कम 25 प्रमुख क्षेत्रों में नियमित संवर-साधना हेतु श्रावक-श्राविकाओं को प्रेरित करना, 2. स्वाध्याय संघ का कार्य क्षेत्र देश के 25 प्रमुख प्रान्तों तक फैलाना, 3. कम से कम 125 दम्पतियों को शीलव्रत हेतु प्रेरित करना, 4. कम से कम 125 व्यक्तियों को चौविहार हेतु प्रेरित करना, 5. श्रावक-श्राविकाओं को वर्ष में कम से कम 25 पौषध करने हेतु प्रेरित करना।

(द) व्यसन -मुक्ति-

आचार्य श्री हीरा के सन्देश 'हीरा गुरु का यह आह्वान, व्यसनमुक्त हो हर इन्सान' को लेखों, कार्यशालाओं, संगोष्ठियों एवं प्रचार-यात्रा के माध्यम से देश के कोने-कोने में प्रचारित व प्रसारित करना।

आइए! आप-हम सभी त्याग-तप की आराधना के साथ लक्ष्य सिद्धि हेतु अग्रसर हों। संघनायक साधना सुमेरू महापुरुष के चरण सरोजों में यही हमारा विनम्र श्रद्धा समर्पण होगा। - *पूरणराज अबानी-राष्ट्रीय महामंत्री*

हिण्डौनशहर में गुणी-अभिनन्दन एवं सम्मान समारोह का भव्य आयोजन

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं के संयुक्त तत्त्वावधान में सम्मान समारोह एवं गुणी-अभिनन्दन का कार्यक्रम 03 अक्टूबर, 2015 को बाबा पैलेस, मण्डावरा रोड़, हिण्डौनशहर में दोपहर 12.30 बजे प्रारम्भ हुआ। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में पूर्व **न्यायाधिपति माननीय श्री प्रकाशचन्दजी टाटिया, अध्यक्ष सशस्त्र बल न्यायाधिकरण-दिल्ली,** विशिष्ट अतिथि के रूप में पद्मभूषण **माननीय श्री डी. आर. मेहता-जयपुर** व हिण्डौनशहर नगर परिषद् के सभापति **श्री अरविन्दजी जैन** पधारे। कार्यक्रम की अध्यक्षता संघ के राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष माननीय श्री पी. शिखरमलजी सुराना-चेन्नई ने की। मंच पर संघ-संरक्षक मण्डल के संयोजक माननीय श्री मोफतराजजी मुणोत-मुम्बई, शासन सेवा समिति के सह-संयोजक माननीय श्री कैलाशचन्दजी हीरावत-जयपुर, संघ के राष्ट्रीय महामंत्री श्री आनंदजी चौपड़ा-जयपुर, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अध्यक्ष श्री कैलाशमलजी दुगड़-चेन्नई, श्राविका मण्डल की अध्यक्ष श्रीमती पूर्णिमाजी लोढ़ा-जयपुर, युवक परिषद् के अध्यक्ष श्री जितेन्द्रजी डागा-जयपुर, बहू बालिका मण्डल की अध्यक्ष श्रीमती इन्दिराजी बोहरा-

चेन्नई, हिण्डौनशहर के संघ अध्यक्ष श्री शीतलप्रसादजी जैन आसीन थे। कार्यक्रम का शुभारम्भ श्रीमान प्रकाशचन्दजी जैन-जलगाँव के मंगलाचरण से हुआ। मंचस्थ अतिथियों को माला एवं शाल से सम्मानित किया गया। हिण्डौन संघ की ओर से मंचस्थ अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के पदाधिकारियों का शाल एवं माला से सम्मान श्री प्रवीणकुमारजी जैन, श्री टीकमचन्दजी जैन, श्री मूलचन्दजी जैन, श्री घासीलालजी जैन, वीर भ्राता श्री नरेन्द्र जी जैन, वीर पिता डॉ. विमलचन्दजी जैन-हिण्डौन ने किया।

संघ के **राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष श्री पी. शिखरमलजी सुराना-चेन्नई** ने समारोह में पधारे सभी अतिथियों एवं संघ सदस्यों का हृदय से स्वागत किया एवं गुणी-अभिनन्दन समारोह की पृष्ठभूमि पर अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि जिस संघ-समाज में गुणियों का सम्मान होता है वही संघ-समाज आगे बढ़ता है। रत्नसंघ की परम्परा है कि संघ-सेवियों एवं गुणीजनों को चयन कर उनको सम्मानित किया जाता है। प्रतिभाशाली संघ-सेवी, तपस्वी, उत्कृष्ट लेखक, विद्वान मनीषियों का सम्मान करना हमारा परम कर्त्तव्य है। हमारे संघ में अनेक गुणीजन हैं उनको खोजकर चयन समिति के समक्ष प्रस्तुत करना हमारा कर्त्तव्य है। मैं आज सम्मानित होने वाले सभी अभिनन्दनीय महानुभावों को हार्दिक बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि इसी प्रकार आपकी सेवाएँ भविष्य में संघ व समाज को प्राप्त होती रहे।

सम्मान समारोह में निम्नानुसार सम्मान प्रदान किए गए-

1. **आचार्य हस्ती स्मृति-सम्मान-2014-** साहित्य-प्रेमी **श्री जितेन्द्रजी बाबूलालजी शाह-अहमदाबाद** का जैन धर्म दर्शन के प्रचार-प्रसार एवं साहित्य सृजन में उल्लेखनीय सेवा प्रदान करने के लिए माल्यार्पण तथा शॉल ओढ़ाकर बहुमान किया गया एवं मुख्य अतिथि द्वारा 51 हजार की राशि के साथ प्रशस्ति-पत्र भेंट किया गया।
2. **आचार्य हस्ती स्मृति-सम्मान-2015-** संघ-सेवी सुश्राविका **श्रीमती नीलूजी डागा-बीकानेर** का 'संस्कारम्' पुस्तक के लेखन हेतु माला एवं चून्दड़ी द्वारा बहुमान किया गया एवं 51 हजार की राशि के साथ प्रशस्ति-पत्र भेंट किया गया।
3. **युवा प्रतिभा शोध-साधना-सेवा सम्मान-2014-** प्रतिभासम्पन्न युवारत्न **श्री अरिहन्तजी जैन-हिण्डौनशहर** को प्रतियोगी परीक्षा में उल्लेखनीय उपलब्धि के लिए माल्यार्पण एवं शॉल द्वारा सम्मान करने के साथ रजत पट्टिका पर अंकित प्रशस्ति-पत्र प्रदान किया गया। इनका सम्मान पिताश्री वीरभ्राता श्री अशोककुमारजी जैन ने स्वीकार किया।

4. **युवा प्रतिभा शोध-साधना-सेवा सम्मान-2015- सुश्री गार्गीजी जैन-अलवर** को आई.ए.एस. परीक्षा में उल्लेखनीय उपलब्धि प्राप्त करने के लिए रजत पट्टिका पर अंकित प्रशस्ति-पत्र प्रदान किया गया। इनका सम्मान पिताश्री श्री रविन्द्रकुमारजी जैन ने स्वीकार किया।
5. **विशिष्ट स्वाध्यायी सम्मान-2014-** आगम अध्येता, मनीषी विद्वान, **सुश्रावक श्री प्रकाशचन्दजी जैन-जलगाँव** का सामायिक-स्वाध्याय के प्रचार-प्रसार एवं पर्युषण सेवा प्रदान करने के उपलक्ष्य में माल्यार्पण एवं शॉल द्वारा सम्मान करने के साथ विशिष्ट अतिथि द्वारा 21 हजार की राशि एवं प्रशस्ति-पत्र भेंट किया गया।
6. **विशिष्ट स्वाध्यायी सम्मान-2015-** चिन्तनशील वरिष्ठ स्वाध्यायी **श्री नेमीचन्दजी कर्नावट-भोपालगढ़** का सामायिक-स्वाध्याय के प्रचार-प्रसार एवं पर्युषण सेवा प्रदान करने के उपलक्ष्य में माल्यार्पण एवं शॉल द्वारा सम्मान करने के साथ विशिष्ट अतिथि द्वारा 21 हजार की राशि एवं प्रशस्ति-पत्र भेंट किया गया।
7. **विशिष्ट महिला स्वाध्यायी सम्मान-2014-** सरलमना, श्राविकारत्न **श्रीमती मोहिनीदेवीजी कच्छवाह-जोधपुर** का सामायिक-स्वाध्याय के प्रचार-प्रसार एवं पर्युषण सेवा प्रदान करने के उपलक्ष्य में माल्यार्पण एवं चून्दड़ी द्वारा सम्मान करने के साथ विशिष्ट अतिथि द्वारा 21 हजार की राशि एवं प्रशस्ति-पत्र भेंट किया गया।
8. **विशिष्ट महिला स्वाध्यायी सम्मान-2015-** संघ समर्पित श्राविकारत्न **श्रीमती कांतिबाईजी जैन-आलनपुर** का सामायिक-स्वाध्याय के प्रचार-प्रसार एवं पर्युषण सेवा प्रदान करने के उपलक्ष्य में माल्यार्पण एवं चून्दड़ी द्वारा सम्मान करने के साथ विशिष्ट अतिथि द्वारा 21 हजार की राशि एवं प्रशस्ति-पत्र भेंट किया गया।
9. **विशिष्ट युवा स्वाध्यायी सम्मान-2014-** संघनिष्ठ, युवारत्न **श्री मुकेशजी भेरूलालजी जैन 'करेला वाले'-सवाईमाधोपुर** का सामायिक-स्वाध्याय के प्रचार-प्रसार एवं पर्युषण सेवा प्रदान करने के उपलक्ष्य में माल्यार्पण एवं शॉल द्वारा सम्मान करने के साथ 21 हजार की राशि एवं प्रशस्ति-पत्र भेंट किया गया।
10. **विशिष्ट युवा स्वाध्यायी सम्मान-2015-** संघ समर्पित, युवारत्न **श्री मनोजजी संचेती-जलगाँव** का सामायिक-स्वाध्याय के प्रचार-प्रसार एवं पर्युषण सेवा प्रदान करने के उपलक्ष्य में माल्यार्पण एवं शॉल द्वारा सम्मान करने के साथ विशिष्ट अतिथि द्वारा 21 हजार की राशि एवं प्रशस्ति-पत्र भेंट किया गया।

गुणी अभिनन्दन-2014 के अन्तर्गत अनन्य गुरुभक्त, संघनिष्ठ, सुश्रावक **श्री**

नौरतनमलजी मेहता-जोधपुर का चतुर्विध संघ-सेवा एवं संघ उन्नयन में विशिष्ट सेवाओं के लिए माल्यार्पण एवं शॉल द्वारा सम्मान करने के साथ विशिष्ट अतिथि द्वारा रजत पट्टिका पर अंकित प्रशस्ति-पत्र भेंट किया गया। कर्मठ समाज-सेवी, युवारत्न **श्री हर्षवर्द्धनजी ललवाणी-जोधपुर** को चतुर्विध संघ-सेवा में उल्लेखनीय योगदान के लिए रजत पट्टिका पर अंकित प्रशस्ति-पत्र भेंट किया गया। संघ समर्पित तपस्वीरत्ना **श्रीमती चंचलकंवरजी कुम्भट-जोधपुर** का उत्कृष्ट तपाराधना के लिए द्वारा माल्यार्पण एवं चून्दड़ी द्वारा सम्मान करने के साथ रजत पट्टिका पर अंकित प्रशस्ति-पत्र भेंट किया गया।

गुणी अभिनन्दन-2015 के अन्तर्गत संघ-समर्पित अनन्य गुरुभक्त श्रावकरत्न **श्री प्रमोदजी लोढ़ा-जयपुर** का चतुर्विध संघ-सेवा एवं संघ उन्नयन में उल्लेखनीय सेवाओं के लिए माल्यार्पण एवं शॉल द्वारा सम्मान करने के साथ विशिष्ट अतिथि द्वारा रजत पट्टिका पर अंकित प्रशस्ति-पत्र भेंट किया गया।

संघ समर्पित तपस्वीरत्ना **श्रीमती उषाजी चोरड़िया-चेन्नई** का उत्कृष्ट तपाराधन के लिए माल्यार्पण एवं चून्दड़ी द्वारा सम्मान करने के साथ रजत पट्टिका पर अंकित प्रशस्ति-पत्र भेंट किया गया। कर्मठ समाज-सेवी **श्री संजयकुमारजी जोशी-सूरत** को स्वाध्याय भवन निर्माण में उल्लेखनीय सेवाएँ प्रदान करने के लिए सम्मानित किया गया। आपके कार्यक्रम में उपस्थित न होने के कारण आपका सम्मान युवारत्न श्री राजकुमारजी गोलेच्छा-पाली को प्रदान किया गया। शिक्षाविद् सेवाभावी **श्री लादूलालजी सेन-देई** का निर्व्यसनता के प्रचार-प्रसार में उल्लेखनीय सेवाओं के लिए माल्यार्पण एवं शॉल द्वारा सम्मान करने के साथ विशिष्ट अतिथि द्वारा रजत पट्टिका पर अंकित प्रशस्ति-पत्र भेंट किया गया।

न्यायमूर्ति श्री श्रीकृष्णमलजी लोढ़ा स्मृति युवा शिक्षा प्रतिभा सम्मान-2014 प्रखर प्रतिभा के धनी युवारत्न **श्री यशजी चोरड़िया-इन्दौर** का सी.ए. परीक्षा में उल्लेखनीय उपलब्धि हेतु माल्यार्पण एवं शॉल द्वारा बहुमान करने के साथ विशिष्ट अतिथि द्वारा 21 हजार की राशि एवं प्रशस्ति-पत्र प्रदान किया गया।

न्यायमूर्ति श्री श्रीकृष्णमलजी लोढ़ा स्मृति युवा शिक्षा प्रतिभा सम्मान-2015 प्रखर प्रतिभा के धनी **श्री तुषारजी भण्डारी-जोधपुर** को शैक्षणिक क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धि हेतु सम्मानित किया गया। आपके कार्यक्रम में उपस्थित न होने के कारण आपका सम्मान संघ के राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री श्री मानेन्द्रजी ओस्तवाल-जोधपुर को प्रदान किया गया।

डॉ. बिमला भण्डारी जैन रत्न शोध सम्मान– सम्मान समारोह के अन्तर्गत इस वर्ष अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के तत्त्वावधान में श्री सरदारमल भण्डारी चेरिटेबल ट्रस्ट, जयपुर के सहयोग से डॉ. बिमलाजी भण्डारी की पावन स्मृति में 'डॉ. बिमला भण्डारी जैन रत्न शोध सम्मान' प्रारम्भ किया गया। इस सम्मान के अन्तर्गत उत्कृष्ट शोध कार्य करने के लिए निम्नांकित 4 शोधकर्त्ताओं को चयनित कर सम्मानित किया गया–

1. श्री धन्यकुमारजी जैन–खुरई **2. डॉ. रीनाजी जैन–जयपुर**

3. डॉ. पवनकुमारजी जैन–जोधपुर **4. डॉ. शैफालीजी जैन–जयपुर**

उपर्युक्त चारों विद्वानों को जैन धर्म-दर्शन पर शोध कार्य के लिए सम्मानित करते हुए माल्यार्पण एवं शॉल के साथ बहुमान किया गया। भण्डारी चेरिटेबल ट्रस्ट की ओर से डॉ. एल. एम. भण्डारी-जयपुर द्वारा प्रत्येक को 11,000/- की राशि का चैक एवं प्रशस्ति-पत्र प्रदान किए गए।

रत्नसंघ के **राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री ज्ञानेन्द्रजी बाफना** के गत तीन वर्षो के कार्यकाल में उनके सहयोगी पदाधिकारियों द्वारा उल्लेखनीय सेवाएँ प्रदान करने के साथ संघ संचालन में विशेष सहयोग प्रदान किया गया, जिसके लिए उन्हें संघ द्वारा सम्मानित किया गया। संघनिष्ठ अनन्य गुरुभक्त श्रावकरत्न **डॉ. प्रेमसिंहजी लोढ़ा–जयपुर** को चतुर्विध संघ एवं स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान हेतु, संघनिष्ठ अनन्य गुरुभक्त श्रावकरत्न **डॉ. अशोकजी कवाड़–चेन्नई** को चतुर्विध संघ-सेवा, ज्ञानार्थी एवं मुमुक्षुजन की शिक्षा में उल्लेखनीय योगदान हेतु, संघनिष्ठ अनन्य गुरुभक्त श्रावकरत्न **श्री बुद्धिप्रकाशजी जैन–कोटा** को दीक्षा महोत्सव एवं चतुर्विध संघ-सेवा में उल्लेखनीय योगदान हेतु, संघनिष्ठ संघ समर्पित युवारत्न **श्री जितेन्द्रजी डागा–जयपुर** को आध्यात्मिक शिविरों के संचालन में उल्लेखनीय योगदान हेतु विशिष्ट संघ-सेवी सम्मान के रूप में माला एवं शॉल द्वारा बहुमान करने के साथ प्रशस्ति-पत्र भेंट किया गया।

शासन सेवा समिति के सह-संयोजक **श्री कैलाशचन्दजी हीरावत–जयपुर** ने अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि हमने जीवन में तरक्की की है। लेकिन जीवन के लिए व्यवहारिक उन्नति के साथ और भी कुछ चाहिये। वर्तमान में हम आध्यात्मिक चिन्तन छोड़कर प्रगति की ओर आगे जा रहे है, परन्तु आत्मीय गुण संघ के प्रति समर्पण एवं सेवाभावना हमारे जीवन में होनी चाहिये। कुछ ऐसा कार्य करें कि हमारे जाने के बाद भी लोग हमें याद करें। हमारे संघ में न्यायाधिपति श्री प्रकाशचन्दजी टाटिया एवं करुणामूर्ति श्री

डी.आर.मेहता जैसे सेवाभावी व्यक्ति हैं जिन पर हमें नाज है।

संघ संरक्षक मण्डल के संयोजक **श्री मोफतराजजी मुणोत-मुम्बई** ने अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि हमारे संघ में गत 30-40 वर्षों से गुणीजनों को सम्मानित करने की परम्परा जीवित है। जिस संघ में गुणों की प्रशंसा नहीं होती, गुणीजनों का सम्मान नहीं होता वह संघ कभी भी आगे नहीं बढ़ सकता। गुणों के अभिवर्द्धन का महत्त्व है। मैं इस अवसर पर सभी गुणीजनों का हृदय से अभिनन्दन करता हूँ। आप संघ-सेवा में समर्पण भाव से आगे बढ़ रहे हैं, जिसका मुझे प्रमोद है। हमारा संघ गुणियों का संघ बनें हम एक-दूसरे के प्रति आत्मीय भाव विकसित कर संघ-हित में अपना अर्घ्य अर्पण करें, ऐसी अपेक्षा है।

कार्यक्रम के **विशिष्ट अतिथि श्री अरविन्दजी जैन** ने अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि हमारे हिण्डौनशहर का सौभाग्य है कि जिनशासन गौरव परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. आदि ठाणा के चातुर्मास के सुयोग के कारण आज यह अभिनन्दन समारोह हिण्डौनशहर में हुआ। मैं सभी गुणीजनों के प्रति नतमस्तक हूँ। आपने बहुविध संघ-सेवी, समाज-सेवी के रूप में अपनी सेवाएँ प्रदान की है। आप-सब लोगों के पधारने से हिण्डौनशहरवासी गद्‌गद् एवं प्रसन्न हैं।

विशिष्ट अतिथि **पद्मभूषण माननीय श्रीमान डी. आर. मेहता-जयपुर** ने अपने उद्गार व्यक्त करते हुए बताया इस संघ में इतने गुणीजन हैं, नाम गिनाने जाऊंगा तो लम्बी सूची हो जायेगी। मैं सेवा कार्यों से जुड़ा हुआ हूँ। जब तक जिन्दा रहूँगा, सेवा करूँगा। कई लोग कहते हैं कि डी. आर. मेहता करुणा और सेवा की बहुत ज्यादा बात करते हैं। लेकिन आगम में करुणा को जीव का स्वभाव कहा गया है। मैं आप सब से निवेदन करना चाहूँगा कि अपने जीवन में सेवाभाव को स्थान दें।

मुख्य अतिथि माननीय श्रीमान प्रकाशचन्दजी टाटिया ने अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि प्राप्त नामों में से गुणीजनों का चुनाव करना बहुत मुश्किल कार्य था। लेकिन चयन समिति के सभी सदस्यों के सहयोग एवं तत्परता से इस कार्य में हमें सफलता मिली। जैन धर्म एवं साहित्य का जितना प्रचार-प्रसार होना चाहिये वह कम है। आज हमारी माता-बहिनें और युवा पीढ़ी को संस्कारित करने की आवश्यकता है। इस संघ में गुणियों की कमी नहीं है, लेकिन कुछ गुणियों का प्रतीक के रूप में सम्मान किया गया है। मैं यह कहना चाहूँगा कि हमने गुणियों को नहीं गुणियों ने हमें सम्मानित किया है। मैं पुन: सभी गुणीजनों को हृदय से बधाई देता हूँ। डॉ. बिमला भण्डारी शोध रत्न सम्मान के अन्तर्गत सम्मान प्राप्त कर्ताओं को भी बधाई।

मुख्यातिथि एवं विशिष्ट अतिथियों को संघ की ओर से स्मृति चिह्न प्रदान किए गए।

राष्ट्रीय महामंत्री **श्री आनंदजी चौपड़ा** ने मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथि सहित सम्मान समारोह में पधारने वाले सभी महानुभावों का, गुणीजनों का हार्दिक आभार व्यक्त किया तथा गुणी अभिनन्दन समारोह के भव्य आयोजन के लिए हिण्डौनशहर संघ को धन्यवाद ज्ञापित किया। हिण्डौनशहर के संघमंत्री **श्री प्रवीणजी जैन** द्वारा समारोह में पधारे आगन्तुक महानुभावों का हार्दिक धन्यवाद ज्ञापित किया गया। कार्यक्रम का सफल संचालन संघ के राष्ट्रीय महामंत्री श्री आनंदजी चौपड़ा-जयपुर ने किया।

-आनन्द चौपड़ा, तत्कालीन राष्ट्रीय महामंत्री

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं की वार्षिक साधारण सभा सानन्द सम्पन्न

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, अखिल भारतीय, श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद्, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न बहू बालिका मण्डल, श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की संयुक्त वार्षिक साधारण सभा रविवार 04 अक्टूबर, 2015 को मध्याह्न 12.30 बजे बाबा पैलेस, मण्डावरा रोड़, हिण्डौनशहर में संघाध्यक्ष श्री ज्ञानेन्द्रजी बाफना की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई।

संघ के पदाधिकारियों का मनोनयन

संघ-संरक्षक मण्डल के संयोजक श्री मोफतराजजी मुणोत ने आमसभा के समक्ष संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं के निम्नांकित पदाधिकारियों के मनोनयन की घोषणा की-

अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ-

1. श्री पी.शिखरमलजी सुराणा-चेन्नई	राष्ट्रीय अध्यक्ष
2. डॉ. अशोकजी कवाड़-चेन्नई	राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष
3. श्री आनन्दजी चौपड़ा-जयपुर	राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल-

1. श्री पारसचन्दजी हीरावत-मुम्बई	अध्यक्ष
2. श्री प्रमोदजी महनोत-जयपुर	कार्याध्यक्ष
3. श्री पदमचन्दजी कोठारी-अहमदाबाद	कार्याध्यक्ष

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल–

1. श्रीमती पूर्णिमाजी लोढ़ा–जयपुर	अध्यक्ष

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद्–

1. श्री राजकुमारजी गोलेच्छा–पाली	अध्यक्ष
2. श्री राजेन्द्रजी लुंकड़–इरोड़	कार्याध्यक्ष
3. श्री लोकेशजी कुम्भट–जोधपुर	कार्याध्यक्ष
4. श्री मनीषजी पी. लोढ़ा–जोधपुर	महासचिव

उपस्थित संघ सदस्यों ने चारों नव–मनोनीत अध्यक्षों एवं पदाधिकारियों को बधाई देते हुए अपना हर्ष व्यक्त किया।

अ. भा. श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल का वार्षिक अधिवेशन सम्पन्न

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल का वार्षिक अधिवेशन 03 अक्टूबर, 2015 को हिण्डौनशहर में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में अ. भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के संघ-संरक्षक मण्डल के संयोजक श्री मोफतराजजी मुणोत–मुम्बई, राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष श्री पी. शिखरमलजी सुराणा–चेन्नई, राष्ट्रीय महामंत्री श्री आनंदजी चौपड़ा–जयपुर, श्राविका मण्डल की निदेशक श्रीमती मधुजी सुराणा–चेन्नई, अध्यक्ष श्रीमती पूर्णिमाजी लोढ़ा–जयपुर, कार्याध्यक्ष श्रीमती मंजूजी भण्डारी–बैंगलोर, महासचिव श्रीमती बीनाजी मेहता–जोधपुर, बहू बालिका मण्डल की अध्यक्ष श्रीमती इन्दिराजी बोहरा–चेन्नई मंच पर आसीन थे।

वार्षिक अधिवेशन के अन्तर्गत श्राविका मण्डल द्वारा शाखाओं को सम्मानित किया गया, जिसमें **सर्वश्रेष्ठ शाखा सम्मान–जलगाँव** को प्रदान किया गया। **अखिल भारतीय स्तर पर प्रथम बड़ी शाखा सम्मान** में चेन्नई, **द्वितीय** बड़ी शाखा सम्मान जयपुर व बैंगलोर, **तृतीय** बड़ी शाखा सम्मान सवाईमाधोपुर, **अखिल भारतीय स्तर पर मध्यम शाखा सम्मान** में कोलकाता, **द्वितीय** बड़ी शाखा सम्मान रायचूर (कर्ना.), **तृतीय** बड़ी शाखा सम्मान कोटा, अखिल भारतीय स्तर पर छोटी शाखा सम्मान में बासन गेट–भरतपुर व गोपालगढ़–भरतपुर, द्वितीय बड़ी शाखा सम्मान नागौर एवं तृतीय बड़ी शाखा सम्मान भोपालगढ़ को प्रदान किया गया।

विहार–सेवा सम्मान के अन्तर्गत सम्मान दूदू शाखा की श्रीमती नीराजी मेहता श्रीमती नीलमजी चीपड़, श्रीमती चन्द्रलताजी मेहता, श्रीमती निर्मलाजी कोठारी को तथा सूरत की

श्रीमती संगीताजी चौपड़ा, श्रीमती शर्मिलाजी बाफना को प्रदान किया गया।

श्राविका मण्डल द्वारा संचालित गतिविधियों में सहयोग प्रदान करने हेतु श्रीमती मंजूजी मेहता, श्रीमती इन्द्राजी बोहरा-ब्यावर, श्रीमती अनिताजी चौपड़ा-बालोतरा, श्रीमती पदमाजी गुगलिया-हैदराबाद को सम्मानित किया गया।

आगम में सदस्यों को जोड़ने व सहयोग हेतु सम्मान श्रीमती मीनाजी नाहर-इचलकरंजी, श्रीमती किरणजी जैन-होशियारपुर तथा श्रीमती मधुबालाजी ओस्तवाल-नासिक को प्रदान किया गया।

-बीना मेहता-महासचिव

बनें आगम अध्येता (5)

उत्तराध्ययन सूत्र पर खुली पुस्तक परीक्षा का आयोजन

'बनें आगम अध्येता' योजना के अन्तर्गत 'उत्तराध्ययनसूत्र' पर आयोजित पाँचवीं आगम परीक्षा के द्वितीय चरण में 13 से 24 अध्ययनों में से प्रश्न लिये गये हैं। इसका मूल्यांकन प्रश्न-पत्र 16 अगस्त, 2015 से भेजना प्रारम्भ कर दिया गया है। मूल्यांकन प्रश्न-पत्र भरकर अग्रांकित जयपुर पते पर भिजवाने की अन्तिम तिथि 25 नवम्बर 2015 है। 'उत्तराध्ययन-सूत्र' द्वितीय भाग की मुख्य समापक परीक्षा 20 दिसम्बर 2015 को आयोज्य है। **सम्पर्क सूत्र- अध्यक्ष-**श्रीमती पूर्णिमाजी लोढ़ा, ए-8, महावीर नगर, टोंक रोड़, जयपुर-302018 (राज.), मो. 098290-19396, **महासचिव-** श्रीमती बीनाजी मेहता, जोधपुर-097727-93625

-बीना मेहता, महासचिव

स्वाध्यायी शिक्षक-निर्माण शिविर सम्पन्न

हिण्डौन- श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा 21 से 25 अक्टूबर 2015 तक आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में हिण्डौन सिटी में स्वाध्यायी शिक्षक-निर्माण शिविर सम्पन्न हुआ। शिविर में जयपुर, जोधपुर, महाराष्ट्र, मेवाड़, पोरवाल, मध्यप्रदेश आदि क्षेत्रों के 35 शिविरार्थियों ने भाग लिया। शिविरों में प्रशिक्षण प्रदान करने वाले प्रशिक्षकों की योग्यता में अभिवृद्धि हेतु आयोजित इस शिविर में पधारे शिविरार्थियों को विद्वान् प्रशिक्षक श्री प्रकाशचन्द जी जैन-जयपुर, श्री धर्मचन्द जी जैन-जोधपुर, श्री त्रिलोकचन्द जी जैन-जयपुर, श्री धर्मेन्द्र जी जैन-जयपुर ने विशिष्ट प्रशिक्षण शैलियों से प्रभावी अध्यापन कराने का प्रशिक्षण दिया। शिविर में अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष द्वय श्री आनन्द जी चौपड़ा तथा श्री अशोक जी कवाड़ की भी महनीय प्रशिक्षण सेवाएं प्राप्त हुई। शिविर में स्वाध्याय संघ सचिव श्री राजेशजी भण्डारी की भी सेवाएँ प्राप्त हुईं।

शिविरावधि में आचार्यप्रवर ने व्यक्तिशः प्रभावी प्रेरणा एवं मार्गदर्शन प्रदान किया। श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. ने सम्यक्त्वी के लक्षणों का विशद विवेचन तथा श्री मनीष मुनि जी म.सा. ने प्रभावी वक्ता बनने के महत्त्वपूर्ण सूत्रों की प्रवचन सभा में सारगर्भित व्याख्या की। जिज्ञासा-समाधान सत्र में श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. ने उपस्थित शिविरार्थियों की सभी जिज्ञासाओं का बहुत सुन्दर एवं सटीक समाधान प्रदान किया। अन्त में सभी शिविरार्थियों एवं अध्यापकों को स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया गया। हिण्डौन शहर की सुन्दर व्यवस्था के लिए धन्यवाद ज्ञापित किया गया। *-ओमप्रकाश बांठिया, संयोजक*

जैनागम स्तोक वारिधि परीक्षा 10 जनवरी 2016 को

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की जैनागम स्तोक वारिधि (थोकड़ों) की कक्षा 1 से 7 तक की आगामी परीक्षा 10 जनवरी, 2016 को दोपहर 12.30 बजे से आयोजित की जाएगी। इच्छुक भाई-बहिनों से निवेदन है कि स्वयं बोर्ड की परीक्षा में भाग लें तथा अन्य को भी प्रेरित करें।

1. परीक्षा में भाग लेने हेतु आवेदन पत्र भरकर बोर्ड कार्यालय में जमा कराने की अन्तिम तिथि 10 दिसम्बर 2015 है।
2. कम से कम 10 परीक्षार्थी होने पर परीक्षा केन्द्र नया प्रारम्भ किया जा सकता है।
3. परीक्षा से सम्बन्धित पुस्तकें शिक्षण बोर्ड कार्यालय से प्राप्त की जा सकती है।
4. सभी उत्तीर्ण परीक्षार्थियों को प्रोत्साहन पुरस्कार व मेरिट में आने वालों को विशेष पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है।

परीक्षा सम्बन्धी अन्य जानकारी के लिए सम्पर्क करें- सुरेश बी. चोरड़िया, संयोजक-94440-28841, नवरतन गिड़िया, सचिव-94141-00759, धर्मचन्द जैन, रजिस्ट्रार-93515-89694, शिक्षण बोर्ड कार्यालय, जोधपुर-0291-2630490, 2622623, फैक्सः 2636763, Website: jainratnaboard.com, E-mail: Shikshanboard jodhpur@gmail.com, info@jainratnaboard.com

अलवर में त्रिदिवसीय यू-टर्न शिविर सम्पन्न

तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 4 के पावन सान्निध्य में 2 से 4 अक्टूबर को त्रिदिवसीय यू टर्न शिविर सम्पन्न हुआ। इसमें 16 से 30 वर्षीय लगभग 190 युवा-युवतियों ने उत्साह, उमंग व अनुशासित रूप से भाग लिया। शिविर में अतिथि वक्ता के रूप में पूर्व न्यायाधिपति श्री प्रकाशचन्दजी टाटिया, श्री विनोदजी सुराणा-चेन्नई, श्री राजेन्द्र जी दुधेड़िया-बैंगलोर, श्री दिनेश जी भंसाली आदि के प्रभावी उद्बोधन से बच्चों

को प्रेरणा मिली। 6.30 से 7.30 प्रातः ध्यान, सप्त कुव्यसन व चार भावना पर प्रभावी उद्बोधन, जिज्ञासा-समाधान व आलोचना सत्र में युवाओं को मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। ज्ञानार्जन के साथ-साथ बच्चों ने सप्त कुव्यसन त्याग व अनेक नियम लिये एवं अत्यन्त लाभान्वित हुए। *-सुमन कोठारी*

आचार्यश्री का 53 वां दीक्षा-दिवस निर्व्यसनता दिवस के रूप में मनाये जाने का संकल्प

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा 17 नवम्बर 2015 को आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के 53 वें दीक्षा-दिवस को 'निर्व्यसनता दिवस' के रूप में मनाने की मुहीम चलाई गई है। उन्होंने सभी संघों से एकदिवसीय कार्यक्रम के रूप में सामूहिक सामायिक, विशिष्ट वक्ता के व्याख्यान का आयोजन, भजन-कार्यक्रम, सायंकाल प्रतिक्रमण एवं व्यसनमुक्ति के संकल्प-पत्र पूर्ति आदि कार्यक्रमों के आयोजन रखने हेतु निवेदन किया है तथा वे अपने कार्यक्रम की रूपरेखा सभी शाखा सचिवों को प्रेषित कर रहे हैं।

शिक्षण संस्थान पूर्वछात्र परिषद् का 'सौहार्द संवर्धन' कार्यक्रम सम्पन्न

'आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान पूर्वछात्र परिषद्' की ओर से पूर्व छात्रों में 'सौहार्द संवर्धन' की दृष्टि से जैसलमेर में पारिवारिक स्नेह मिलन कार्यक्रम रखा गया। परिषद् के अध्यक्ष श्री पारसमल जैन, उपाध्यक्ष श्री गौतमचन्द जैन 'डी.एस.ओ.' सहित इस कार्यक्रम में 32 सदस्यों का पारस्परिक स्नेह मिलन हुआ एवं परिषद् की गतिविधियों को आगे बढ़ाने हेतु बैठक में निर्णय किये गए। कोषाध्यक्ष श्री जम्बूकुमार जैन ने परिषद् का आय-व्यय विवरण प्रस्तुत किया। सामूहिक सामायिक की साधना भी की गई, जिसमें परिषद् सचिव डॉ. धर्मचन्द जैन ने पारिवारिक जीवन को सुखी बनाने हेतु विचार प्रस्तुत किए। *-अशोककुमार जैन, संयुक्त सचिव*

पुणे विश्वविद्यालय में कर्म-सिद्धान्त एवं पुनर्जन्म पर व्याख्यान माला

पुणे विश्वविद्यालय के पालि विभाग द्वारा 'कर्मसिद्धान्त एवं पुनर्जन्म' विषय पर 26 से 28 अक्टूबर 2015 को व्याख्यान माला आयोजित की गई, जिसमें वेद, मीमांसादर्शन एवं बौद्धदर्शन की दृष्टि से देशभर से आमन्त्रित नौ विद्वानों ने व्याख्यान दिए। प्रो. श्री कान्त बाहुलकर-पुणे, प्रो. गोदाबरीश मिश्र-चेन्नई, प्रो. वी.पी. भट्ट-पुणे, प्रो. विमलेन्द्रकुमार, डॉ. सच्चिदानन्द मिश्र आदि ने विभिन्न दर्शनों की कर्मसिद्धान्त एवं पुनर्जन्म विषयक

विचारणा प्रस्तुत की। जिनवाणी के सम्पादक डॉ. धर्मचन्द जैन ने जैन दर्शन के अनुसार 'कर्मसिद्धान्त एवं पुनर्जन्म' विषयक व्याख्यान दिया।

समग्र जैन चातुर्मास सूची 2015 का विमोचन

समग्र जैन समाज के चारों सम्प्रदायों (श्वेताम्बर, मूर्तिपूजक, स्थानकवासी, तेरापंथी एवं दिगम्बर सम्प्रदाय) के 16008 जैन मुनिराजों एवं साध्वियों के सन् 2015 के चातुर्मासों की पूर्ण एवं प्रामाणिक 'समग्र जैन चातुर्मास सूची-2015' का विमोचन लींबडी अजरामर सम्प्रदाय के गच्छाधिपति आचार्य श्री भावचन्द्रजी म.सा. के सान्निध्य में हुआ। इसमें जैनाचार्यों, मुनिराजों एवं साध्वियों के नाम, चातुर्मास स्थल का पता, फोन-मोबाइल नम्बर, नई दीक्षा, महाप्रयाण, नई पदवियों, राष्ट्रीय संघ अध्यक्ष-मंत्री के नाम फोन नम्बर के अलावा प्रत्येक सम्प्रदाय की संख्या की तुलनात्मक तालिका आदि 516 पृष्ठों में प्रकाशित की गयी है। -*बाबूलाल जैन 'उज्ज्वल', सम्पादक*

उन्नीसवें भगवान महावीर अवार्ड हेतु प्रविष्टियाँ आमंत्रित

भगवान महावीर फाउण्डेशन द्वारा निःस्वार्थ सामाजिक बन्धुओं की सेवा करने वाले व्यक्तियों और संस्थाओं को प्रोत्साहित करने हेतु भगवान महावीर अवार्ड प्रदान किया जाता है। यह सम्मान प्रतिवर्ष 1. अहिंसा व शाकाहार, 2. शिक्षा, 3. चिकित्सा तथा 4. सामाजिक उत्थान व सेवा के क्षेत्र में दिया जाता है। इस पुरस्कार में 10 लाख की राशि, सम्मान-पत्र (प्रशस्ति पत्र) एवं स्मृति चिह्न भी प्रदान किया जाता है। इन पुरस्कारों इेतु प्रविष्टियाँ सम्पूर्ण राष्ट्र से आमंत्रित हैं। प्रविष्टियाँ प्राप्त करने की अंतिम तिथि 30 नवम्बर 2015 है। अधिक जानकारी तथा फॉर्म वेबसाइट www.bmfawards.org पर उपलब्ध है।

सम्पर्क सूत्र- 'Siyat House', 961, Poonamallee High Road, (Next to Dr. Mohan Rau Memorial Hospital), Chennai-600084 (T.N.), Ph. : 044-42933300/42933333, Fax: 044-42933339, Email: bmfawards@gmail.com

अमेरिका में शाकाहारी किराएदारों को विशेष छूट

वाशिंगटन- शाकाहार को बढ़ावा देने के लिए भारतीय मूल के जिनेश वारिया ने अपने यहाँ किराए से रहने वाले व्यक्ति को शाकाहार अपनाने पर किराए में 13000/- रुपये की छूट देने का प्रस्ताव रखा है। सिएटल में रहने वाले जिनेश स्वयं शाकाहारी हैं।

कोयम्बतूर में 'ज्ञानमीमांसा' पर संगोष्ठी सम्पन्न

आचार्य श्री विजयराजजी म.सा. के सान्निध्य में 24-25 अक्टूबर को 'जैन दर्शन में ज्ञान मीमांसा' विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी श्री कोयम्बतूर स्थानकवासी जैन संघ के सहयोग से

रिसर्च फाउण्डेशन फॉर जैनोलॉजी, मद्रास विश्वविद्यालय के जैनविद्या विभाग तथा शांतक्रांति जैन संघ के संयुक्त तत्त्वावधान में सम्पन्न हुई। इस अवसर पर आचार्य श्री ने कहा कि आज ऐसे ज्ञान की आवश्यकता है जो मैत्रीभाव बढ़ाए। संगोष्ठी के विभिन्न सत्रों में साध्वी युगप्रभा, साहित्यकार डॉ. दिलीप धींग, श्री एस. कृष्णचंद चोरडिया, श्री प्रकाशचंद पटवा, डॉ. प्रियदर्शना जैन, डॉ. ज्ञान जैन, श्री शांतिलाल बोहरा, श्री घीसुलाल हिंगड, श्री राकेश लूणिया, श्री विजया कोटेचा सहित 18 जनों ने अपने शोधपत्र प्रस्तुत किये। समापन समारोह में विद्वानों का सम्मान किया गया।

-शांतिलाल कोठारी, संयोजक-जैनविद्या संगोष्ठी-2015

संक्षिप्त-समाचार

जयपुर- श्री पद्मावती पोरवाल जैन समिति, जयपुर के तत्त्वावधान में 20 सितम्बर 2015 को वीर परिवार एवं बुजुर्ग सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। अपने परिजन को जिनशासन की सेवा में समर्पित करने वाले समाज के 40 वीर परिवारों को, समाज को अपने अनुभवों से लाभान्वित करने वाले 30 बुजुर्ग दम्पतियों का तथा चिकित्सा सेवा में समाज को सेवा देने वाले 10 चिकित्सकों का सम्मान किया गया। समारोह के **मुख्य अतिथि-** श्री बुद्धिप्रकाश जैन, कोटा-अध्यक्ष पोरवाल संघ, **अध्यक्ष-**श्री चौथमल जैन, इन्दौर, **विशिष्ट अतिथि-** श्री सुरेशचन्द जैन-कुशतला, श्री रतनलाल जैन-आलनपुर, श्री छगनलाल जैन-इन्दौर, श्री कुशलचन्द गोटेवाला-सवाईमाधोपुर थे। *-मेघराज जैन*

जयपुर- अपभ्रंश साहित्य अकादमी द्वारा राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर से मान्यता प्राप्त 'पत्राचार प्राकृत सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम' एवं 'पत्राचार अपभ्रंश सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम-2016 में प्रवेश हेतु आवेदन-पत्र व नियमावली निम्न वेबसाइट से प्राप्त की जा सकती है- (1) pra.jainapa.org, (2) apa.jainapa.org

शुल्क सहित आवेदन पत्र कार्यालय में पहुँचने की अन्तिम तिथि 28 फरवरी 2016 है। **सम्पर्क सूत्र-** डॉ. कमलचन्द सोगाणी, निदेशक, अपभ्रंश साहित्य अकादमी, दिगम्बर जैन नसियाँ भट्टारकजी, सवाई रामसिंह रोड, जयपुर-302004 (राज.), फोन नं. 0141-2385247

जयपुर- जैनविद्या संस्थान द्वारा आयोजित 'पत्राचार जैनधर्म-दर्शन एवं संस्कृति सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम' -2016 में प्रवेश हेतु आवेदन-पत्र व नियमावली निम्न वेबसाइट से प्राप्त की जा सकती है- (1) jvs.jainapa.org, (2) apa.jainapa.org

शुल्क सहित आवेदन पत्र कार्यालय में पहुँचने की अन्तिम तिथि 28 फरवरी 2016 है। **सम्पर्क सूत्र**–डॉ. कमलचन्द सोगाणी, निदेशक, अपभ्रंश साहित्य अकादमी, दिगम्बर जैन नसियाँ भट्टारकजी, सवाई रामसिंह रोड, जयपुर-302004 (राज.), फोन नं. 0141-2385247

राजगढ़- तपस्वियों की शोभायात्रा और स्वामी वात्सल्य में होने वाले व्यय को तपस्वी संजय मामा ने एक हजार विद्यार्थियों को गणवेश और मिठाई वितरित करने में खर्च करने की अनूठी पहल की है।

हैदराबाद- आचार्य श्री रामलालजी म.सा. के मुखारविन्द से सुश्री प्रीति, चिकारड़ा (चित्तौड़गढ़) एवं अक्षिता, मधुरान्तकम् (तमिलनाडु) की भागवती दीक्षा सम्पन्न हुई।

सूरत- श्री जैन रत्न हितैषी ट्रस्ट द्वारा निर्मित श्री सोहनलाल नाहर स्वाध्याय भवन जिस सड़क पर स्थित है, उस सड़क का नाम श्रावकों के सत्प्रयासों से आधिकारिक तौर पर आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा. के नाम पर 'आचार्य हस्ती मार्ग' किया गया है।

जोधपुर- श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, जोधपुर के तत्त्वावधान में 9 अक्टूबर 2015 को रत्नसंघीय श्राविका मण्डल का स्नेहमिलन आयोजित किया गया। समारोह की अध्यक्षता श्रीमती कुसुमजी सिंघवी ने की। श्रीमती संगीता जी सिंघवी, श्रीमती नलिनीजी भाण्डावत, श्रीमती उच्छबकंवर जी लोढ़ा, श्रीमती शान्ताजी सिंघवी और श्रीमती लक्ष्मीकान्ताजी मेहता कार्यक्रम की अतिथि थीं। सुश्राविका श्रीमती कमलाजी सुराणा के मंगलाचरण के अनन्तर श्रीमती सुमनजी सिंघवी ने 'श्राविका मण्डल के महत्त्व' पर, श्रीमती नीतूजी बाफणा ने 'बच्चों में सुसंस्कार कैसे डालें' विषय पर सारगर्भित प्रस्तुति दी। श्रीमती रेखाजी और पूजाजी बाफणा ने भजन प्रस्तुत किया। तपस्वी बहिनों का माल्यार्पण एवं साड़ी द्वारा सम्मान किया गया। श्रीमती उषाजी बोहरा-सचिव, श्राविका मण्डल ने वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। अन्त में श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. ने संस्कार, प्रेम और यतना विषय पर उद्बोधन देकर सभी श्राविका बहिनों को लाभान्वित किया। इस संगोष्ठी में लगभग 200 श्राविकाओं ने भाग लिया। *-श्रीमती उषा बोहरा-सचिव*

बधाई

जोधपुर- सुश्री मनीला गांधी सुपुत्री श्री गौतमचन्दजी-ललिताजी गाँधी (सुपौत्री श्री पदमचन्दजी गाँधी) ने कम्पनी सचिव की परीक्षा उत्तीर्ण की है। इससे पूर्व आपने राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की वरीयता सूची में भी स्थान प्राप्त किया है।

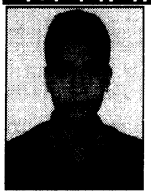

गंगापुरसिटी- श्री यश जैन सुपुत्र श्री राजेन्द्रजी जैन का ऑल इण्डिया मेडिकल की परीक्षा में चयन हुआ है। आप अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ शाखा गंगापुर के मंत्री सुश्रावक रेवती प्रसादजी जैन के पौत्र हैं। आपका चयन सवाई मानसिंह मेडीकल कॉलेज में हुआ है।

गंगापुरसिटी- सुश्री अंशुला जैन का ऑल इण्डिया मेडीकल कॉलेज जोधपुर में चयन हुआ है। आपके पिता श्री राजीव जी पल्लीवाल अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, गंगापुरसिटी शाखा के अध्यक्ष हैं। आपका चयन जोधपुर मेडिकल कॉलेज में हुआ है।

श्रद्धाञ्जलि

अजमेर- संघ-सेवी सुश्राविका श्रीमती अनोपकंवरजी दुधेड़िया का 28 अक्टूबर 2015 को परलोकगमन हो गया। सुश्राविका का जीवन संघ व समाज सेवा में समर्पित रहा। उनका जीवन सरलता, मधुरता, उदारता, सेवाभावना आदि सद्गुणों से युक्त था। आप नियमित सामायिक-स्वाध्याय करने वाली चिन्तनशील श्राविका थीं। आपने अपने जीवन में अनेक त्याग-प्रत्याख्यान ग्रहण कर रखे थे। संत-सतीवृन्द की सेवा भक्ति में आप सदैव तत्पर रहती थीं। दुधेड़िया परिवार संघ-सेवा, समाज-सेवा में सदैव अग्रणी रहा है।

चेन्नई- सुश्राविका श्रीमती बदनकंवरजी सुराणा धर्मपत्नी स्व. श्री चैनमलजी सुराणा का

16 सितम्बर 2015 को 83 वर्ष की उम्र में संथारे सहित स्वर्गवास हो गया। आप सरल स्वभावी एवं मृदुभाषी थीं। आप प्रतिदिन 7 से 8 सामायिक करती थीं। करीबन 40 साल से चौविहार व्रत का पालन कर रही थीं। आपने अपने जीवन में कई अठाइयाँ व 11 उपवास की तपस्याएँ कीं। आप सभी संत-सतियों की तन-मन-धन से सेवा करती थीं। जीवदया व गौशालाओं में दान देने में आपकी विशेष रुचि रहती थी। -*रीखबचन्द लोढ़ा, भूतपूर्व अध्यक्ष*

जोधपुर- सुश्रावक श्री गुलाबराजजी सिंघवी का 29 अक्टूबर 2015 को देहावसान हो

गया। आपका जीवन समाज सेवा में समर्पित रहा। उनका जीवन सरलता, मधुरता, उदारता, सेवाभावना आदि सद्गुणों से युक्त था। आप रत्नसंघीय संतरत्न स्व. श्री दयामुनि जी म.सा. के सांसारिक भ्राता थे। आपका जीवन हम-सबके लिए प्रेरणादायी है।

मण्डावर (दौसा)- धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री जैनीप्रसादजी जैन का 80 वर्ष की वय में 13 सितम्बर 2015 को देवलोकगमन हो गया। आप नियमित सामायिक करने वाले धार्मिक

प्रवृत्ति के श्रावक थे। आपकी रत्नसंघ के संत-सतियों के प्रति गहरी श्रद्धाभक्ति थी। आपने सामाजिक, धार्मिक एवं शिक्षा क्षेत्र में प्रामाणिकता और समर्पित भाव से निष्ठापूर्वक सेवा कार्य सम्पन्न किया है।

बजरिया (सवाईमाधोपुर)- सरल स्वभावी सुश्राविका श्रीमती प्रेमदेवी जी जैन धर्मसहायिका श्री बाबूलालजी जैन सेवानिवृत्त बैंक मैनेजर का 29 सितम्बर 2015 को 68 वर्ष की उम्र में संथारे के साथ सम्मेदशिखरजी में स्वर्गारोहण हो गया। आप धर्मनिष्ठ, आदर्श गृहिणी, मृदुभाषी एवं व्यवहार कुशल थीं। आपके जीवन में अनेक व्रत थे। नियमित रूप से आप तप त्याग एवं सामायिक स्वाध्याय की साधना में लीन रहती थीं। आपने 8 वर्ष पूर्व आचार्यप्रवर के मुखारविन्द से बीजापुर में आजीवन शीलव्रत ग्रहण किये थे। आपका अधिकांश समय धर्म की साधना तथा संत-सतियों के समागम में व्यतीत हुआ करता था। आपके पति श्री बाबूलालजी जैन श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ-बजरिया के कोषाध्यक्ष पद पर अपनी सेवाएँ दे चुके हैं एवं वर्तमान में भी संघ में अपनी महत्त्वपूर्ण सेवाएँ प्रदान कर रहे हैं। *-पदमचन्द जैन, अध्यक्ष*

जोधपुर- धर्माराधिका सुश्राविका श्रीमती पतासीबाईजी धर्मपत्नी स्व. श्री मोतीलालजी

चौरड़िया का 102 वर्ष की आयु में स्वर्गवास हो गया। अंतिम समय में वे प्रति घण्टा प्रत्याख्यान करते रहीं। वे जीवन में जीवदया के प्रति विशेष सजगता रखती थीं एवं नित्य-सामायिक, चौदह नियम ग्रहण, रात्रिभोजन त्याग (दवा रखकर) पौरसी व समस्त आरम्भ-समारंभ का यथासंभव त्याग करती थी। आप वीरपुत्र श्री पुखराजजी मोहनोत, जिनवाणी के पूर्व सह-सम्पादक की सास थीं।

सवाईमाधोपुर- आदर्श शिक्षक श्री दौलतचन्दजी जैन का 19 सितम्बर 2015 को

स्वर्गारोहण हो गया। संयम व सात्त्विकता, नियमित जीवनचर्या, मृदुमिष्ट भाषा, मिलनसार स्वभाव, शाकाहार और विनम्रता जैसे गुणों से आपका जीवन सुरभित था। आपके सुपुत्र श्री राजेन्द्रजी राजा जयपुर में संघनिष्ठ श्रावक हैं।

चांदवड, जिला-नासिक (महा.)- सुश्राविका श्रीमती कमलबाईजी धर्मपत्नी स्व. श्री शान्तिलालजी छाजेड़ का 65 वर्ष की उम्र में 10 अक्टूबर 2015 को 13 घण्टे के संथारे सहित स्वर्गवास हो गया। इन्होंने चेतनाश्रीजी म.सा., महिमाश्रीजी म.सा. के मुखारविन्द से सजगता के साथ संथारा ग्रहण किया। आपने अपने जीवन में अनेक छोटी-बड़ी तपस्याएँ

की एवं कई प्रत्याख्यान भी लिये।

कोलकाता- उदारमना श्री उगमराजजी सुराणा सुपुत्र स्व. श्री किशनराजजी सुराणा का 84 वर्ष की वय में प्रयाण हो गया। आप मिलनसार, सरल सुश्रावक थे। आप नियमित रूप से संत-सतियों की सेवा में अग्रणी रहते थे। आप स्वाध्याय व माला प्रतिदिन फेरते थे।

नेवासा, जिला-अहमदनगर(महा.)- धर्मप्रेमी सुश्रावक श्री भीकमचन्दजी शिंगी का 96 वर्ष की उम्र में 23 सितम्बर 2015 को संथारे सहित महाप्रयाण हो गया। उन्होंने संथारा लेने से पूर्व सुपात्र दान दिया।

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी-परिवार तथा अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

दीवार मिली है, द्वार भी मिलना चाहिए

डॉ. वीरसागर जैन

एक अन्धा व्यक्ति एक विशाल सभागार में अकेला असहाय रह जाने से बहुत घबरा रहा था। उसने बहुत कोशिश की, हाथ-पैर चलाए, परन्तु उसे द्वार नहीं मिल रहा था। वह बुरी तरह थक गया, निराश ही हो गया था, उसे चक्कर आने लगे। वह अत्यन्त आकुल-व्याकुल होकर रोने लगा। इतने में ही किसी शुभकर्म के योग से उसका एक हाथ सभागार की दीवार पर जा लगा। दीवार पर हाथ लगते ही उसकी सारी मनःस्थिति बदल गई। वह प्रसन्न हो गया, उसकी थकान उतर गई, निराशा आशा में बदल गई। उसे विश्वास हो गया कि दीवार मिली है तो अब द्वार भी अवश्य मिलेगा।

कुछ पल विश्राम करके वह उस दीवार के सहारे हाथ लगाता हुआ आगे बढ़ने लगा। किन्तु यह क्या, जैसे ही द्वार आया, उसके सिर में खुजली होने लगी और वह दीवार से हाथ हटाकर सिर खुजलाने लगा। वह चलता भी जा रहा था, अतः द्वार निकल गया, उसे पता ही नहीं चला। इसी प्रकार आगे आने वाले द्वार भी उससे निकल गये। वह फिर से थककर चकनाचूर हो गया और चक्कर खाकर गिर पड़ा। दीवार भी हाथ से छूट गई और वह फिर से बीच में पहुँच गया।

इसी प्रकार हमें अनन्त संसार-सागर में परिभ्रमण करते हुए किसी शुभयोग से अब देव-शास्त्र-गुरु रूपी दीवार मिली है। यह बहुत बड़ी बात हुई है। किन्तु अब हमें रत्नत्रय का द्वार भी अवश्य मिलना चाहिए, तभी हम संसार-सागर से बाहर निकल पाएँगे, अन्यथा देव-शास्त्र-गुरु रूपी दीवार भी हमसे छूट जाएगी और हम पुनः संसार-सागर के मध्य पहुँच जायेंगे।

-आचार्य एवं अध्यक्ष, जैन दर्शन विभाग,
श्री लालबहादुर शास्त्री केन्द्रीय विद्यापीठ, दिल्ली

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

1000/-जिनवाणी पत्रिका की आजीवन (अधिकतम 20 वर्ष) सदस्यता हेतु प्रत्येक

क्रम संख्या 15497 से 15516 तक 20 सदस्य बने।

'जिनवाणी' मासिक पत्रिका हेतु साभार प्राप्त

6000/- श्री सोहनलालजी, बुधमलजी, सम्पतराजजी बाघमार, मैसूर, श्री रोहितजी के 8 की तपस्या एवं श्रीमती आशादेवीजी, दिव्याजी बाघमार के तेले की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

5100/- श्री पी. शिखरमलजी सुराणा, चेन्नई की ओर से भेंट।

5100/- डॉ. शिवनारायणजी जोशी, जोधपुर, जिनवाणी श्रेष्ठ रचना पुरस्कार की प्राप्त राशि जिनवाणी को सप्रेम भेंट।

5100/- श्री नवरतनजी रांका, जयपुर, जिनवाणी श्रेष्ठ रचना पुरस्कार की प्राप्त राशि जिनवाणी को सप्रेम भेंट।

5100/- श्री मनोहरलाल जी जैन, धार (मध्यप्रदेश), जिनवाणी श्रेष्ठ रचना पुरस्कार की प्राप्त राशि जिनवाणी को सप्रेम भेंट।

5100/- डॉ. जवाहरलाल जी नाहटा, बरपेटा रोड़ (असम), जिनवाणी श्रेष्ठ रचना पुरस्कार की प्राप्त राशि जिनवाणी को सप्रेम भेंट।

5100/- श्रीमती उषा जी धर्मपत्नी श्री संजय जी मेहता, दूदू। श्रीमती उषा जी मेहता के नौ की तपस्या की खुशी में।

5000/- श्री मोहनलालजी कोठारी 'विनर', किशोरकुमारजी कोठारी, दुर्ग (छतीसगढ़), जिनवाणी श्रेष्ठ रचना में पुरस्कृत होने के उपलक्ष्य में।

3100/- श्रीमती सुकनदेवीजी, मदनलालजी बाघमार, जबलपुर, पुत्रवधू श्रीमती मधुजी धर्मपत्नी श्री राजेशजी एवं श्रीमती मंजूजी धर्मपत्नी श्री रूपेशजी बाघमार के 31 उपवास (मासखमण) की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

2500/- श्री आयुषजी बोहरा, जोधपुर, पड़दादा श्री हस्तीमलजी बोहरा की 24वीं पुण्य तिथि तथा पड़दादी श्रीमती बदनकँवरजी की 5वीं पुण्य तिथि के उपलक्ष्य में भेंट।

2400/- श्रीमती जे. मनोहरबाईजी धर्मपत्नी स्व. श्री जवरीलालजी लुणिया, पल्लीपट्ट-चेन्नई।

2100/- श्री सागरमलजी, महावीरजी, राजेशजी छाजेड़, चेन्नई, पूज्य गुरु भगवंत का आचार्य पदारोहण रजतपर्व के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

2100/- श्रीमती प्रभादेवीजी एवं हेमन्तजी नाहर, अजमेर, पूज्य श्री गोकुलचन्दजी नाहर की पुण्य स्मृति में भेंट।

2100/- श्री हुकमीचन्दजी, संतोष कुमारजी, विपुलजी डोसी, बैंगलोर, स्व. श्री विनोद कुमारजी

सुपुत्र श्रीमती मदनकँवरजी हुकमीचन्दजी डोसी का चतुर्थ पुण्य दिवस 16 नवम्बर 2015 के उपलक्ष्य में भेंट।

2100/- श्री हस्तीमलजी, बसंतीदेवीजी सुराणा, नागौर-कोलकात्ता, बैंगलोर, गुरुचरणों के सान्निध्य में धर्मध्यान करने की खुशी में सप्रेम भेंट।

2100/- श्री सुभाषचन्दजी, अशोक कुमारजी धोका, मैसूर, पर्युषण पर्व के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

2100/- श्री प्रकाशचन्दजी, महावीरचन्दजी, मीठालालजी बाघमार, मैसूर, संवत्सरी पर्व के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

2100/- श्री विनोद कुमार जी हितेष कुमार जी मेहता, दूदू, सप्रेम भेंट।

2100/- श्री बाबूलाल जी शांतिलालजी बाघमार, जबलपुर, सहयोगार्थ

2100/- श्री लाडेशकुमारजी, श्री सिद्धकुमारजी एवं श्री श्रेणिककुमारजी रांका, जोधपुर, अपने पिताश्री श्री सोहनराजजी रांका के 29 अगस्त 2015 को स्वर्गगमन होने पर उनकी पावन स्मरणांजलिस्वरूप।

2100/- श्रीमती कमलाजी सुराणा, जोधपुर, जिनवाणी सहयोगार्थ।

1151/- श्रीमती मंजूजी-गणपतजी, आस्थाजी, अल्फाजी, आकांक्षाजी, अग्रिषाजी, जोधपुर, स्व. श्रीमती लाडकंवरजी धर्मपत्नी स्व. श्री उम्मेदमलजी सुराणा की पुण्यस्मृति में।

1151/- श्री गणपतजी, अजितजी, गर्विशजी सुराणा, जोधपुर, स्व. श्री उम्मेदमलजी सुराणा सुपुत्र स्व. श्री सुजानमलजी सुराणा की पुण्यस्मृति में।

1121/- श्री गणपतजी, अजितजी, गर्विशजी सुराणा, जोधपुर, स्व. श्री सुजानमलजी सुराणा सुपुत्र स्व. श्री मानमलजी सुराणा की पुण्य स्मृति में।

1121/- श्रीमती मंजू-गणपतजी, आस्थाजी, अल्फाजी, आकांक्षाजी, अग्रिषाजी, जोधपुर, स्व. श्रीमती सुकनकंवरजी धर्मपत्नी स्व. श्री सुजानमलजी सुराणा की पुण्यस्मृति में।

1101/- श्रीमती मंजूजी-गणपतजी, मीनूजी, सोनूजी, टोनीजी सुराणा, जोधपुर, स्व. श्री धनपतमल जी सुराणा सुपुत्र स्व. श्री उम्मेदमलजी सुराणा की पुण्यस्मृति में।

1100/- श्री पदमचन्दजी, नरेन्द्र कुमारजी जैन (एण्डवा वाले), सवाईमाधोपुर, श्री जितेशजी जैन सुपुत्र स्व. श्री राजेन्द्रप्रसादजी जैन का राजस्थान प्रशासनिक सेवा 2012 में चयन होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री मनसुखलालजी, आनन्दरायजी गुगलिया, लोनावला-पूना, श्री अशोकजी की 9 की तपस्या एवं पौत्री सुश्री खुशीजी के 3 की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में।

1100/- श्री हरकचन्दजी, बच्छराजजी, मेघराजजी जैन, सवाईमाधोपुर, स्व. धर्मपत्नी श्रीमती अनोखीदेवीजी जैन की पुण्य तिथि के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री मनोजजी, रमेशजी कोठारी, जलगाँव, एक्सीडेंट में पुत्र के सकुशल बचने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री सुभाषजी, सुमितजी लोढ़ा, चेन्नई, सहयोगार्थ।

1100/- श्री राजेन्द्रजी कविताजी चोरड़िया, बैंगलोर, की ओर से सप्रेम भेंट।

1100/- श्रीमती दाखाबाईजी, ताराचन्दजी, मोहनलालजी, सोहनलालजी, राजेन्द्र कुमारजी जैन, अलीगढ़-रामपुरा, स्व. श्री मूलचन्दजी जैन की प्रथम पुण्य तिथि के उपलक्ष्य में भेंट।

1100/- श्रीमती सुशीलाजी जैन, मण्डावर-महुआ, श्री जैनीप्रसादजी जैन का 13 सितम्बर 2015 को 80 वर्ष की आयु में देहावसान हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

1100/- श्री मदनलाल जी राजेश जी बाघमार, जबलपुर, सहयोगार्थ।

1100/- श्री तपस्वीलाल जी, विरेन्द्र कुमार जी, जबलपुर, सहयोगार्थ

1100/- श्री गौतमचंद जी राजेन्द्र जी, जिनेन्द्र जी कटारिया, पीपाड़, अपने नवनिर्मित गृह प्रवेश के उपलक्ष्य में।

1100/- श्रीमती रश्मि जी धर्मपत्नी श्री पुनीतजी बाघमार, जबलपुर, श्रीमती राज एवं सुधीर जी के नौ की तपस्या के उपलक्ष्य में।

1100/- श्रीमती उषा जी धर्मपत्नी श्री अमरचंद जी चौरडिया, जोधपुर, श्रीमती पतासी बाई धर्मपत्नी श्री स्व. मोतीलाल जी चौरडिया का 29 सितम्बर 2015 को स्वर्गवास होने पर।

1100/- श्री प्रकाशचंदजी, प्रेमचंदजी, सुरेशकुमारजी भण्डारी, पीपाड़, नीतू जी के अट्ठाई के उपलक्ष्य में।

1100/- श्रीमती नीलमजी धर्मपत्नी श्री मानसिंह जी चीपड़, दूदू, श्रीमती नीलम जी के अट्ठाई तप की खुशी में।

1100/- श्राविका मण्डल, दूदू, चातुर्मास की खुशी में।

1100/- श्रीमती सुशीला धर्मपत्नी श्री गौतमचंद जी डोसी, दूदू, 15 की तपस्या के उपलक्ष्य में।

1100/- श्रीमती चंचलता जी मेहता, दूदू, सहयोग हेतु।

1100/- श्रीमती कमलादेवीजी धारीवाल, श्रीमती मधु-पृथ्वीराजजी धारीवाल, जोधपुर, सुश्री रेने सुपुत्री श्रीमती प्रितु-रोहनजी मेहता एवं सुपौत्री श्री दीपक मेहता के 7 वर्ष की लघु वय में अट्ठाई तप करने के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री एल. लालचन्दजी, सुशीलकुमारजी लुणिया, पल्लीपट्ट-चेन्नई, पौत्र के जन्म के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री अरविन्दकुमार, अमितकुमार जैन, गंगापुरसिटी, जिला-सवाईमाधोपुर, समकित जैन (सुपुत्र श्रीमती स्नेहलता-अमितकुमारजी जैन) की द्वितीय वर्षगाठ के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री महावीरजी मेहता, जोधपुर, अपने सुपौत्रवधू के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में भेंट।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के सत्साहित्य के लिए अर्थसहयोग

2,00,000/-मैसर्स धर्मचन्द पारसचन्द हीरावत, मुम्बई, मंडल से प्रकाशित सत्साहित्य पुस्तक 'संस्कारम्' व 'उत्तराध्ययन सूत्र भाग-2' के पुन: प्रकाशन हेतु सप्रेम भेंट।

1,31,000/-जैन सेण्टर ऑफ अमेरिका, न्यूयार्क, डॉ. धर्मचन्दजी जैन के द्वारा न्यूयार्क में पर्युषण सेवा प्रदान करने के उपलक्ष्य में डॉ. रजनीकान्त शाह के माध्यम से।

90,000/- श्री बसंतीलालजी रंगलालजी डांगी, जामनेर, मंडल से प्रकाशित पुस्तक "हीरा प्रवचन पीयूष भाग-1 व भाग-2" का पुन: मुद्रण कराने हेतु सप्रेम भेंट।

51,000/- श्रीमती कंचन कुमारीजी डागा, जयपुर, मंडल से सत्साहित्य प्रकाशन हेतु सप्रेम।

50,000/- श्री अशोक कुमारजी कवाड़, चेन्नई, सुपुत्र चि. पवनजी कवाड का शुभ-विवाह 28 अप्रैल 2015 को सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

11,000/- श्रीमती चन्द्राजी, सिद्धार्थजी, निशाजी कर्णावट, जयपुर, श्रीमान् सज्जनजी सुपुत्र स्व. श्री चंपालालजी कर्णावट की 60वीं वर्षगाँठ के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर

संघ-सेवा सोपान के अन्तर्गत साभार प्राप्त

1,11,111/-श्री चम्पालालजी, ज्ञानचन्दजी, किशोरचन्दजी, श्रीमती लक्ष्मीबाईजी, श्रीमती सविताबाईजी, श्री अरुणकुमारजी छाजेड़, शोरापुर-जिला-गुलबर्गा, सामायिक-स्वाध्याय भवन के उद्घाटन पर जीवदया हेतु।

1,00,000/-श्री पी. शिखरमलजी सुराणा, चेन्नई, संघ सहायतार्थ।

1,00,000/-श्री गौतमचन्दजी बाघमार, चेन्नई, संघ सहायतार्थ।

42,000/- श्री सोहनलालजी, श्री बुधमलजी, श्री सम्पतराजजी, श्री राजेन्द्रकुमारजी, श्रीमती मैनाकंवर जी, श्रीमती आशादेवीजी बाघमार, मैसूर-कर्नाटक, श्रीमती चन्द्रकलाजी जैन, जोधपुर, स्व. श्री इन्द्रसिंहजी जैन के 37 वीं पुण्यस्मृति दिवस पर संघ सहायतार्थ।

20,000/- श्रीमती उगमबाईजी-मोहनलालजी, श्रीमती मदनबाईजी-पारसमलजी, श्रीमती सरोजबाई जी,श्री सुशीलजी, अरविन्दजी, विशालजी, श्रीमती चन्द्राजी-आनन्दजी, दिव्याजी, प्रीति जी, मनीषाजी बोहरा, तिरुवन्नामलई (तमिलनाडु) संघ सहायतार्थ।

8,000/- श्री गौतमचन्दजी, प्रवीणकुमारजी, मनोजजी, कुम्बकोणम (तमिलनाडु), श्राविका रत्न श्रीमती सुशीलाजी सकलेचा की पावन स्मृति में संघ सहायतार्थ।

8,000/- श्री शैलेशजी, सिद्धार्थजी, रक्षिता सकलेचा, कुम्बकोणम (तमिलनाडु), श्राविका रत्न श्रीमती सुशीलाजी सकलेचा की पावन स्मृति में संघ सहायतार्थ।

5100/- श्री नितीनजी, शैलेशजी डोसी, जोधपुर, जीवदया हेतु।

5000/- श्री नेमीचन्दजी, नीलमचन्दजी, संजयकुमारजी, संदीपकुमारजी, भरतजी चोरड़िया, जलगांव (महा.), संघ सहायतार्थ।

2500/- श्री जवरीलालजी लुणिया, पल्लीपट (तमिलनाडु), जीवदया हेतु।

1500/- श्रीमती मंजूजी भण्डारी, कोलकाता, संघ सहायतार्थ।

1100/- श्री ईश्वरलालजी, हर्षकुमारजी लोढ़ा, जलगाँव (महा.), संघ सहायतार्थ।

1100/- श्री सुभाषचन्दजी, नितिनकुमारजी रांका, पीपलनेर (महा.), संघ सहायतार्थ।

1100/- श्रीमती चन्द्राबाईजी, गजराजजी धारीवाल, मुलबागल, जीवदया हेतु।

1100/- श्री केवलचन्दजी, सज्जनराजजी कोठारी, क्रोमपेट, चेन्नई, जीवदया हेतु।

1100/- श्री किशोरजी, जम्बूकुमारजी, धनवन्तजी कोठारी, आरकोणम, जीवदया हेतु।

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर हेतु साभार प्राप्त

21000/- श्री दलपतराजजी, अरविंद कुमारजी, अभिषेकजी सिंघवी, मैसूर, संघ सेवा सोपान के अन्तर्गत स्वाध्याय संघ को सहयोग।

2100/- श्रीमती रतन कंवर जी सिंघवी धर्मपत्नी स्व. श्री रिखबचंद जी सिंघवी, जोधपुर, अपने सुपुत्र श्री ईश्वरचंद जी सिंघवी के अट्ठाई के उपलक्ष्य में।

2100/- श्री पारसमल जी, देवेन्द्र जी, आदित्यजी, अरिष्ट जी गिड़िया, जोधपुर, सहयोगार्थ

12000/- श्री निर्मलकुमारजी, मनोहरकुमारजी बम्ब, अशोकनगर-शुलै-बैंगलोर-निमाज, सुश्री कियारा के प्रथम जन्मदिवस के उपलक्ष्य में।

छात्रवृत्ति-योजना में इच्छुक दानदाता एक छात्र के लिए 12000/- रु. अथवा उनके गुणक में जितनी छात्रवृत्तियाँ देना चाहें तदनुसार दानराशि 'गजेन्द्र निधि आचार्य हस्ती स्कॉलरशिप फण्ड' योजना के नाम चैक या ड्राफ्ट(Donations to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of IncomeTax Act 1961) से निम्नांकित पते पर भेजने का कष्ट करें- ***Sh. B. Budhmal Bohra**, Poojaa Foundation, Door No. 921, 1st Floor, Poonamalle High Road, EVR 1st Lane, Chennai-600084(T.N.) (Mob. 9543068382)*

आगामी पर्व तिथि

कार्तिक कृष्णा 30, बुधवार	11.11.2015	पक्खी, भगवान महावीर निर्वाण कल्याणक
कार्तिक शुक्ला 5, सोमवार	16.11.2015	ज्ञान पंचमी
कार्तिक शुक्ला 6, मंगलवार	17.11.2015	आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का 53 वां दीक्षा-दिवस
कार्तिक शुक्ला 8, गुरुवार	19.11.2015	अष्टमी
कार्तिक शुक्ला 14, बुधवार	25.11.2015	चतुर्दशी, पक्खी, चातुर्मासिक पर्व
मार्गशीर्ष कृष्णा 8, गुरुवार	03.12.2015	अष्टमी
मार्गशीर्ष कृष्णा 12, मंगलवार	08.12.2015	आचार्य विनयचन्दजी म.सा.की 100 वीं पुण्यतिथि
मार्गशीर्ष कृष्णा 14, गुरुवार	10.12.2015	चतुर्दशी, पक्खी
मार्गशीर्ष शुक्ला 8, शनिवार	19.12.2015	अष्टमी
मार्गशीर्ष शुक्ला 11, सोमवार	21.12.2015	मौन एकादशी

चिन्तन की मनोभूमि

संकलन : श्री सम्पतराज चौधरी

1. 'निर्लोभता' के बिना दरिद्रता का, 'निर्मोहता' के बिना भय का, 'निष्कामता' के बिना अशान्ति का और 'असंगता' के बिना पराधीनता का नाश नहीं होता।

-संत उद्‌बोधन

2. गुणों के अभिमान ने ही दोषों का नाश नहीं होने दिया। - *संत पंचावली*

3. दोष-जनित वेदना में ही सुख-लोलपुता का नाश निहित है।

-मानवता के मूल सिद्धान्त

4. जो मनुष्य यह समझता है कि मैं सत्यवादी हूँ, उसमें कहीं-न-कहीं झूठ छिपा हुआ है। यदि वह सचमुच सत्यवादी है तो उसे यह भास ही नहीं होना चाहिए कि मैं सत्यवादी हूँ, अपितु सत्य बोलना उसका जीवन बन जाना चाहिए। - *संत सौरभ*

-14, वरदान अपार्टमेंट, 64-इन्द्रप्रस्थ एक्सटेन्शन, पड़पड़गंज, दिल्ली-110092

अलविदा बाईपास सर्जरी

अब बाईपास सर्जरी के बारे में कभी ना सोचियें

काउन्टर पलसेशन थैरेपी

(ई.ई.सी.पी.)

द्वारा प्राकृतिक बाईपास करवायें

काउन्टर पलसेशन थैरेपी (ई.ई.सी.पी.) में क्या होता हैं :-

हृदय रोगी को साधारणतया 35 दिन तक प्रतिदिन एक घंटे की थैरेपी ई.ई.सी.पी. मशीन जो कि एफ.डी.ए., अमेरिका द्वारा मान्यता प्राप्त है, पर दी जाती है । यह थैरेपी ई.ई.सी.पी. मशीन के विशेष प्रकार के बिस्तर पर रोगी को लिटाकर दी जाती है। तीन बड़े हवा से फूलने वाले कफ पैड जो ब्लड प्रेशर उपकरण के कफ पैड की तरह के होते हैं, उन्हें रोगी की पिंडलियों, जांघ एवं कमर के निचले हिस्से पर बाँधा जाता है एवम् इन कफ पैड के इनफ्लेशन एवम् डिफ्लेशन की क्रिया को मशीन से जुड़े कम्प्यूटर द्वारा निर्देशित किया जाता है। इस सारी प्रक्रिया का इलेक्ट्रोकार्डियोग्राफ मशीन के पर्दे पर अवलोकन किया जाता है। मशीन पर उपचार के दौरान कफ पैड के फैलने पर रक्त पूर्ण दबाव से हृदय की ओर जाता है एवं इस दबाव के कारण हृदय के पास सुप्त पड़ी धमनियों में रक्त तीव्र गति से प्रवाहित होकर इन धमनियों को क्रियाशील कर देता है व हृदय को प्रयाप्त मात्रा में रक्त मिलने से व्यक्ति को एन्जिना दर्द (छाती दर्द) नहीं होता हैं। 35 दिन तक यह थैरेपी लेने से हृदय के पास सुप्त पड़ी धमनियाँ स्थायी रूप से खुल जाती है और छोटी-छोटी धमनियां आपस में जुड़कर नई धमनियों का निर्माण करती हैं।

श्रीमती गुलाब कुम्भट मेमोरियल चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा संचालित

समर्पण हार्ट एण्ड हैल्थ केयर सेन्टर

ए - 12, इण्डस्ट्रीयल एस्टेट, उद्योग भवन
के पास, न्यू पावर हाउस रोड़, जोधपुर (राज.)
Email : samarpanjodhpur@gmail.com

फोन : 2432525
सम्पर्क : धिरेन्द्र कुम्भट
93147 14030

卐 चारित्र आत्माओं के लिए ट्रस्ट द्वारा नि:शुल्क उपचार 卐

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

अंतर में सच्चाई चाहिए और व्यवहार में सफाई चाहिए, वही प्राणी संसार में अपना आत्म हित कर जगत के सामने आदर्श रख सकता है ।

- आचार्य श्री हीरा

C/o CHANANMUL UMEDRAJ
BAGHMAR MOTOR FINANCE
S. SAMPATRAJ FINANCIERS
S. RAJAN FINANCIERS

 # 218, Ashoka Road, Lashkar Mohalla,
Mysore-570001 (Karanataka)

With Best Compliments from :
C. Sohanlal Budhraj Sampathraj Rajan
Abhishek, Rohith, Saurav, Akhilesh Baghmar
Tel. : 821-4265431, 2446407 (O)
Mo. : 9845126407 (B), 9845580407 (S), 9845113334 (R)

Gurudev

SURANA TM
yes, the best TMT RE-BARS

DRI Plant

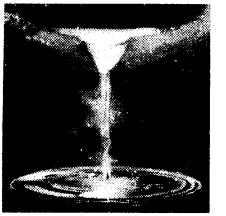

Electric Arc Furnace

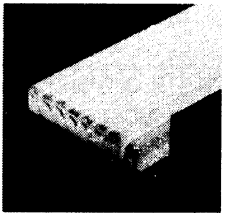

Billets

Rolling Mill

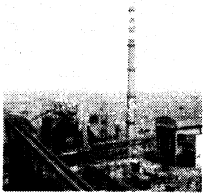

Captive Power Plant

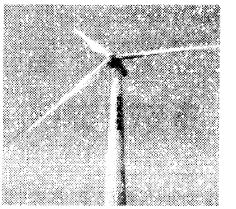

Windmill

With best wishes from

ISO 9001-2008

SURANA INDUSTRIES LIMITED

INTEGRATED STEEL PLANT

MANUFACTURE OF TMT BARS AND ALL KIND OF ALLOY STEEL

29, Whites Road, II Floor, Royapettah, Chennai 600 014/ Ph : 044-28525127 (3 lines) 28525596. Fax: 044-28521143

Email: steelmktg@suranaind.com / www.surana.org.in

STEEL I POWER I MINING

।। श्री महावीराय नमः ।।

हस्ती-हीरा जय जय ! हीरा-मान जय जय !

छोटा सा नियम धोवन का।
लाभ बड़ा इसके पालन का।।

अखण्ड बाल ब्रह्मचारी चारित्र चूड़ामणि, भक्तों के भगवान् 1008
श्री हस्तीमल जी म.सा. के चरणों में हृदय की असीम आस्था से समर्पण
उनके अनमोल खजाने के हीरे-मोती जन-जन के तारणहार
पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा.,
पण्डित रत्न उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा.
एवं समस्त
रत्नाधिक साधु साध्वी मण्डल
के चरण कमलों में भावभरा कोटिशः वन्दन एवं समर्पण...

OUR HUMBLE SALUTATIONS TO THE MOST NOBLE SOULS

PRITHIVIRAJ PREM KUMAR KAVAD
690, Trunk Road, Poonamallee, Chennai - 600 056
Ph. 044-26272196 Mob. : 93810-07273

MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD
GURU HASTI THANGA MAALIGAI
(JEWELLERS & BANKERS)
5, Car Street, Poonamallee, Chennai-600 056
Ph. : 044-26272609 Mob. : 95-00-11-44-55

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद्

।। पुण्यार्जन का सुनहरा अवसर ।।

सदस्यता अभियान से जुड़िये, गुरु भाईयों की शिक्षा में सहयोग करिये।

आदरणीय रत्नबंधुवर,

अत्यधिक हर्ष का विषय है कि छात्रवृत्ति योजना की लाभार्थी सुश्री श्वेता और सुश्री स्मिता सुपुत्री श्रीमान् मुकेश जी बुरड़, शिरपुर के कम्प्यूटर इंजिनियर बनने के बाद शिरपुर में A.R. Patil CBSE School में दोनों प्रोफेसर के पद पर कार्यरत हैं। लाभार्थी छात्राओं ने अपनी भावना से प्रथम वेतन में से एक-एक छात्र की छात्रवृत्ति राशि का सहयोग किया है। संघ द्वारा ऐसी छात्राओं का तहेदिल से धन्यवाद एवं आभार।

छात्रवृत्ति योजना संघ की महत्त्वपूर्ण योजनाओं में से एक योजना है, अब इस योजना की निरन्तरता के लिए समिति के पदाधिकारियों ने निर्णय लिया है कि छात्रवृत्ति योजना में अर्थसहयोग के लिए सदस्यता अभियान प्रारम्भ किया जायेगा, जिसमें सदस्यों द्वारा प्रतिवर्ष अर्थसहयोग किया जायेगा। सदस्यता अभियान का प्रारूप इस प्रकार है –

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना सदस्यता अभियान

हीरक स्तम्भ सदस्य	स्वर्ण स्तम्भ सदस्य
(5 लाख रुपये प्रति वर्ष)	(1 लाख रुपये प्रति वर्ष)

नोट–सदस्यता को ग्रहण करने वाले सभी सदस्यों का नाम जिनवाणी पत्रिका में प्रति माह छात्रवृत्ति योजना के आरक्षित पृष्ठ पर प्रकाशित किया जायेगा।

जो भी अनन्य गुरुभक्त योजना में अर्थ सहयोग करके सदस्यता ग्रहण करना चाहते हैं एवं एक छात्र के लिए 12000/- रुपये अथवा उनके गुणक में छात्रवृत्ति राशि का सहयोग करने के लिए चैक, ड्राफ्ट या नकद राशि द्वारा जमा या भेज सकते हैं। कोष का खाता विवरण इस प्रकार है –

A/c Name- Gajendra Nidhi Acharya Hasti Scholarship Fund
A/c No. 168010100120722
Bank Name & Address – AXIS BANK LTD. Anna Salai,Chennai(TN) IFSC Code – UTIB0000168
PAN No. – AAATG1995J
Note- Donation to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of Income Tax Act 1961.

छात्रवृत्ति योजना में सदस्यता अभियान के सदस्य बनकर योजना की निरन्तरता को बनायें रखने में अपना अमूल्य योगदान कर पुण्यार्जन किया, ऐसे संघनिष्ठ, श्रेष्ठीवर्यों के नामों की सूची –

हीरक स्तम्भ सदस्य (5 लाख रुपये प्रति वर्ष)	स्वर्ण स्तम्भ सदस्य (1 लाख रुपये प्रति वर्ष)
श्रीमान् मोफतराज जी मुणोत, मुम्बई। युवारत्न श्री हरीश जी कवाड़, चैन्नई। श्रीमान् राजीव जी नीता जी डागा, ह्यूस्टन	श्रीमान् दूलीचंद बाघमार एण्ड संस,चैन्नई। श्रीमान् लक्ष्मीमल जी लोढ़ा,जोधपुर। श्रीमान् दलीचंद जी सुरेश जी कवाड़, पूनामल्लई। गुप्त सहयोगी, चैन्नई। श्रीमान् प्रेम जी कवाड़, चैन्नई। श्रीमान् राजेश जी विमल जी पवन जी बोहरा, चैन्नई। श्रीमान् गणपत जी हेमन्त जी बाघमार, चैन्नई।

सहयोग के लिए चैक या ड्राफ्ट कार्यालय के इस पते पर भेजें-

B.Budhmal Bohra - Poojaa Foundation, Door No. 921, 1st Floor, Poonamallee High Road, EVR 1st Lane, **CHENNAI-600084** (TN)

छात्रवृत्ति योजना से संबंधित जानकारी के लिए सम्पर्क करें- मनीष जैन, चैन्नई **(Mob.095430 68382)**

Jai Guru Heera *Jai Guru Hasti* *Jai Guru Maan*

।। जैनं जयति शासनम्।।

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

With Best Compliments from:

S.D. GEMS & SURBHI DIAMONDS
Prakash Chand Daga
Virendra Kumar Daga (Sonu Daga)
FC51, Bharal-Diamond Bourse, Bandra Kurla Complex, Bandra (E), Mumbai-400051 (Mah.)
Ph. : 022-23684091, 23666799 (o), 022-28724429
Fax : 22-40042015, Mobile : 098200-30872
E-mail : sdgems@hotmail.com

Basant Jain & Associates
Chartered Accountants
बसंत के जैन
अध्यक्ष: श्री जैन रत्न युवक परिषद, मुम्बई
ट्रस्टी : गजेन्द्र निधि ट्रस्ट
601 Dalamal Chambers New Marine Lines, Mumbai-400020 (Mah.)
Ph. : 022-22018793, 22018794 (o), 022-28810702

Dharamchand Paraschand Exports
1301, Panchratna, Opera House, Mumbai-400004 (Mh.)
Tel. : +91 22 2363 0320/ +91 22 4018 5000
Fax : +91 22 2363 1982, Email : dpe90@hotmail.com

KANTILAL SHANTILAL RAJENDRA LUNKER
PACHPADRA-PALI-ERODE
K.L. ASSOCIATES
'Sanskar', 177-B, Adarsh Nagar, Pali-306401 (Raj.)
Mobile : 094141-22757
135, N.M.S. Compound, ERODE-638001 (T.N.)
Tel. : 3205500 (O), Mobile : 093600-25001

NARENDRA HIRAWAT & CO.
Flat No. 1, Building No. 2, Navjeevan Society, Senapati Bapat Marg, Matunga (West), Mumbai-400 016
Trin-Trin
Matunga Office : 022-24370713, 24380713, 66669707
Opera House Office : 022-23669818
Mobile : 09821040899

Basant Jain & Associates, C.A., BKJ & Associates, C.A.
BKJ Consulting Pvt. Ltd., Megha Properties Pvt. Ltd.
Ambition Properties Pvt. Ltd.
DHANPATRAJ V. BHANSALI
Sharda Bhawan, 2nd floor, Nandapatkar Road, Vile Parle (E), Mumbai-400057 (Mh.)
Tel. : 26185801, 32940462 (O), E-mail : bhansalidevelopers@yahoo.com

2100/- श्री नवरतनमल जी दुग्गड़, होसुर, सहयोगार्थ।

पर्युषण सहयोग-2015

रुपये	स्थान	रुपये	स्थान	रुपये	स्थान
15001	कोलकाता	15000	पल्लीपेट	15000	हालोल
12000	रालेगांव	7100	होसुर	5100	धमतरी
5100	होसुर	5100	धुलिया	5000	चाकसू
4100	विक्रोली	3500	बनारस	3100	मालवी जंक्शन
3100	सतारा	3100	आदित्यपुरम	3100	बाड़मेर
3100	ग्वालियर	2500	बुहारी	2100	प्रतापनगर, जयपुर
2100	भोपालगढ़	2100	गरोठ	2100	उन्हैल
1500	दूणी	1500	आजादनगर (भीलवाड़ा)	1150	श्योरपुर कलां
1100	आगोलाई	1100	देई	1100	आकोदिया मण्डी

श्री महाराष्ट्र जैन स्वाध्याय संघ, जलगांव को पर्युषण सहायता-2015

7100	नागपुर	3801	चीखली	3500	चिपलुण
3350	पारोला	3200	मुक्ताईनगर	3000	भण्डारा
2100	वाशिम	2100	विदिशा	2100	वाकोद
2100	फत्तेपुर	2100	रालेगांव	1511	वालुज
1501	नसीराबाद	1500	भड़गांव	1500	दूसरबीड़
1320	पारोला (श्री कनकमल जी चौरडिया)				
1100	पारोला (श्री मनोज जी लुणावत)				
1100	इच्छापुर	1100	उम्बरखेड़	1100	वाकड़ी
1100	वरखेड़ी	1100	पिलखोड़	1100	वरणगांव

(नोटः- नियमानुसार 1100/- रुपये से कम राशि का यहाँ उल्लेख नहीं किया गया है।)

अ.भा.श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड हेतु साभार प्राप्त

21000/- श्री नेमीचन्दजी कर्नावट, भोपालगढ़, पुस्तक प्रकाशन हेतु सहयोग।

गजेन्द्र निधि द्वारा आचार्य हस्ती स्कॉलरशिप फण्ड

(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा क्रियान्वित)

दानदाता एवं दान एकत्रित करने वालों की सूची

30000/- श्री रमेशचन्दजी, सुरेशचन्दजी जैन 'जरखोदा वाले', हाउसिंग बोर्ड, सवाईमाधोपुर, स्व. श्रीमती पुष्पादेवीजी धर्मपत्नी श्री अमोलकजी जैन की पुण्य स्मृति में।

12000/- श्री प्रकाशचन्दजी जैन 'प्राचार्य', पंकजकुमारजी, विशालकुमारजी जैन 'जलगांव वाले', जयपुर, श्रीमती कांताबाईजी धर्मपत्नी श्री प्रकाशचन्दजी जैन के मासक्षपण की तपस्या हिण्डौन में सानन्द सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में।

।।श्री महावीराय नमः।।

।।जय गुरु हस्ती।। ।।जय गुरु हीरा-मान।।

रात्रि भोजन त्याग रूप व्रत को आत्म-कल्याण के लिए स्वीकार करना चाहिए।
– भगवान महावीर

रात्रि भोजन त्याग के साथ-साथ भक्ष्य-अभक्ष्य का विचार करके ही अन्न ग्रहण करना चाहिए।
– आचार्य हस्ती

अहिंसा परमो धर्म

रात्रि भोजन सदोष व तामसी आहार होता है। समाधि का अभिलाषी साधक ऐसी तामसी आहार से दूर ही रहता है।
– आचार्य हीरा

रात्रि भोजन करें या न करें, अगर त्याग नहीं है तो उसे दोष लग ही रहा है। अतः रात्रि भोजन का प्रत्याख्यान करना आवश्यक है।
– उपाध्याय मान

सामूहिक रात्रि भोजन आयोजन त्याग हेतु विनम्र अपील

प्रभु वीर का शासन मिला, गुरु भगवन्तों का सानिध्य मिला ।
श्रद्धा-भक्ति के भाव जगे, सामूहिक भोज रात्रि को तजे ।।

रात्रि भोजन त्याग जैनों की प्रमुख पहचान है।

रात्रि भोजन करना दुर्गति का कारण है।

रात्रि भोजन अनर्थदण्ड व पाप का कारण है।

आओ - हम सब संकल्प करें कि सामूहिक रात्रि भोजन का आयोजन कदापि नहीं करेंगे।

विनीत – समस्त जैन समाज

सौजन्य से : मधु कवाड़, चैन्नई

आर.एन.आई. नं. 3653/57 डाक पंजीयन संख्या JaipurCity/413/2015-17
मुद्रण तिथि दिनांक 5 से 8 नवम्बर, 2015
वर्ष : 73 ★ अंक : 11 ★ मूल्य : 10 रु.
डाक प्रेषण तिथि 10 नवम्बर, 2015 ★कार्तिक, 2072

waterfront
at KALPATARU riverside PANVEL

Premium 2 & 3 BHK residences
022 3064 3065

Promoters: M/S Kalpataru + Sharyans
Site Address: Opp. Panch Mukhi Hanuman Temple, Old Mumbai - Pune Highway, Panvel - 410 206. I Head Office: 101, Kalpataru Synergy, Opp. Grand Hyatt, Santacruz (E), Mumbai - 400 055. Tel.: + 91 22 3064 3065 I Fax: + 91 22 3064 3131 I Email: sales@kalpataru.com I visit: www.kalpataru.com

Images are for representative purposes only. This property is secured with Housing Development Finance Corporation Limited. The No Objection Certificate / Permission would be provided, if required. Conditions apply.

स्वामी सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के लिए प्रकाशक, मुद्रक - विनय चन्द डागा द्वारा दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर राजस्थान से मुद्रित एवं सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, शॉप नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-3 राजस्थान से प्रकाशित। सम्पादक-डॉ. धर्मचन्द जैन